मूक प्रश्न विचार

(Mooka Prashna Vichar)

मन में सोचे हुये बिना बताये
प्रश्नों का ज्योतिष द्वारा समाधान

पुस्तक-परिचय

प्रश्न दो प्रकार के होते हैं—1. वाचिक और 2. मूक। जब प्रश्नकर्त्ता स्वयं अपने प्रश्न को ज्योतिषी के सम्मुख रखकर उसका फल पूछता है, तो वह वाचिक कहलाता है, किन्तु मूक प्रश्न में पृच्छक अपना प्रश्न या मनोभाव न बतलाते हुए ज्योतिषी से अपने प्रश्न एवं उसके फल को यथार्थ रूप में बतलाना एक चमत्कार है।

प्रश्न शास्त्र के सभी ग्रंथों में मूक प्रश्न की चर्चा की गयी है, किन्तु एक ग्रंथ में इस विषय का सर्वाङ्गीण एवं शास्त्रीय (Systematic) विवेचन नहीं किया गया। विद्वान लेखक ने इसी अभाव की पूर्ति के लिए प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया है।

प्रश्न लग्न पद्धति, प्रश्नाक्षर पद्धति, स्वर पद्धति एवं चक्र पद्धति आदि सभी प्रणालियों का शास्त्रीय विवेचन करते हुए इस पुस्तक में मूक प्रश्न जैसी जटिल पहेली को सुलझाने के लिए सरल एवं शास्त्रीय नियमों की सोदाहरण व्याख्या की गयी है। साथ ही मूक प्रश्न का निर्णय करने के बाद उसका शुभ या अशुभ फल जानने के लिए महत्त्वपूर्ण एवं अनुभूत योगों का संकलन दिया गया है।

आपके मन में किसी भी प्रकार का प्रश्न हो—किसी व्यक्ति के बारे में लाभ-हानि, व्यापार, हार-जीत, अचानक लाभ या प्रेम-सम्बन्ध के बारे में इस पुस्तक की सहायता से उस प्रश्न को तथा अच्छे या बुरे फल को जान सकते हैं।

इस प्रकार मूक प्रश्न का विचार करने के लिए सर्वप्रथम लिखी गई यह मौलिक पुस्तक ज्योतिष शास्त्र के विद्वान एवं जिज्ञासु पाठक दोनों के लिये पठनीय तथा संग्रहणीय है।

मूल्य २० रुपये

मूक प्रश्न विचार

(Silent Questions-Answered)

लेखक

डा० शुकदेव चतुर्वेदी

भुवन दीपक, दाम्पत्य सुख (ज्योतिष के झरोखे से)
प्रश्न मार्ग, दैवज्ञवल्लभा (वराहमिहिर)
आदि ग्रन्थों के प्रणेता

रंजन पब्लिकेशन्स

१६, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

प्रकाशक :
रंजन पब्लिकेशन्स
१६, अन्सारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-११०००२
फोन नं० : २७ ८८ ३५

द्वितीय संशोधित संस्करण
१९८५

मूल्य 20/-

मुद्रक :
नवीन आर्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

विषय-सूची

अध्याय १ ९-२७

विषय प्रवेश, प्रश्नशास्त्र, प्रश्न विचार, द्वादश भाव, भावों की विशेष संज्ञाएँ, भावों से विचारणीय बातें, भाव और शरीर के अंग, भाव का बल, राशियाँ, चर, स्थिर एवं द्विस्वभाव राशियाँ, राशियों का स्वामित्व एवं संज्ञाएँ, राशियों से विचारणीय बातें, राशियों के स्थान, उच्च एवं मूल त्रिकोण राशियाँ, ग्रहों के मित्र और शत्रु ग्रहों का स्वामित्व, प्रतिनिधित्व एवं संज्ञाएँ, ग्रहों की दृष्टि, ग्रहों से विचारणीय बातें, ग्रह एवं उनकी वस्तुएँ।

अध्याय २ २८-३८

प्रश्नकर्त्ता का विचार, धातु, जल एवं जीव की चिन्ता, इस विषय के अनुभूत योग, सरल युक्ति, योगों के उदाहरण, मेषादि राशियों के द्वारा धातु, मूल एवं जीव विचार।

अध्याय ३ ३९-६२

धातु विचार, धातुओं के भेद, किस धातु के बारे में प्रश्न है? अधाम्य धातु, विविध रसायन, आभूषण, बर्तन, मुद्रा एवं अन्य धातुओं से बनी वस्तु, आभूषणों के विविध भेद, मूल विचार, मूल के विविध भेदों का ज्ञान, जीवों के विविध भेद, जीव विचार, ब्राह्मण आदि वर्ण का निश्चय, राजा, मन्त्री आदि का ज्ञान, विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों का ज्ञान, सम्बन्धों का ज्ञान, स्त्री-पुरुष का निश्चय, किस स्त्री की चिन्ता है? व्यक्ति की अवस्था का निश्चय, राक्षस योनि विचार, पक्षी योनि विचार, चतुष्पद विचार, विविध पशुओं का ज्ञान, बहुपद जीव।

अध्याय ४ ६३-६९

मेष आदि राशियाँ एवं मूल प्रश्न, चन्द्रमा की द्वादश अवस्था और मूक प्रश्न, मुष्टिका प्रश्न विचार, चंद्रमा के नवमांश द्वारा मुट्ठी

की वस्तु का ज्ञान, मुट्ठी की वस्तु का निर्णय करने के कुछ योग, मुट्ठी में किस रंग की वस्तु है ? ग्रहों के द्रव्य/पदार्थ।

अध्याय ५ ७०-९९

मूक प्रश्न का ज्ञान—एक सरल रीति, ग्रह-सिद्धान्त, इस सिद्धान्त के उदाहरण, सूर्य आदि ग्रह और मूक प्रश्न।

अध्याय ६ १००-१४१

भाव सिद्धान्त, इस सिद्धान्त के उदाहरण, विविध भाव के द्वारा मूक प्रश्न का निश्चय।

प्रश्न फल विचार, विचारणीय कार्य में सफलता मिलेगी या असफलता, विचारणीय कार्य कब तक होगा ? कार्य में असफलता के योग, शिक्षा एवं परीक्षा विचार, प्रतियोगिता परीक्षाएँ इण्टरव्यू में सफलता मिलेगी या नहीं ? नौकरी मिलेगी या नहीं ? उच्च पद प्राप्ति के योग, नौकरी के योग, पदोन्नति के योग, पदावनति एवं मुअत्तली के योग—

व्यापार विचार, व्यापार अकेले करें या साझेदारी में ? व्यापार में लाभ एवं हानि, निजी और सार्वजनिक उद्योग, खेती से लाभ। धन लाभ विचार, धन लाभ के योग, लाटरी और सट्टे आदि से लाभ, चोरी गई वस्तु का लाभ, नष्ट या खो गये धन का लाभ, विवाह विचार, दाम्पत्य सुख, दाम्पत्य कलह और तलाक के योग। गर्भ प्रश्न विचार, गर्भपात होगा या नहीं ? गर्भ में पुत्र है या कन्या ? दो बच्चों के जन्म का योग, प्रसव काल विचार, शिशु जीवित रहेगा या नहीं ?

विवाद, मुकद्दमा एवं युद्ध, मुकद्दमा विचार, रोग विचार, रोग निदान, रोग कारक ग्रह साध्य एवं असाध्य रोग।

अध्याय ७ १४२-१६७

यन्त्रों के आधार पर मूक प्रश्न का निश्चय, संख्या यन्त्र, केरली पञ्च यन्त्र, बीज प्रश्न यन्त्र।

दो शब्द

प्रश्न शास्त्र फलित ज्योतिष का महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रश्नकर्त्ता की जिज्ञासा, इच्छा, उत्कंठा, शंका या चिन्ता का समाधान इस शास्त्र में जन्मपत्री आदि की लम्बी-चौड़ी गणित के विना ही किया जाता है। तात्कालिक प्रश्नों का फल वतलाने में यह शास्त्र अपना विशेष महत्त्व रखता है।

इस शास्त्र में प्रश्नों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया है—१. वाचिक प्रश्न एवं २. मूक प्रश्न। जब प्रश्नकर्त्ता स्वयं अपने प्रश्न को ज्योतिषी के सामने रखकर उसका फल पूछता है, तब वह वाचिक प्रश्न कहलाता है। किन्तु जब प्रश्नकर्त्ता अपने मन में सोचे हुए प्रश्न या मनोभाव को न वतलाते हुए ज्योतिषी से अपना प्रश्न और उसका फल जानना चाहता है, तो यह मूक प्रश्न कहलाता है। वस्तुत: मन में सोचे हुए और बिना बतलाए हुए प्रश्नों की जानकारी तथा उनका समाधान करना एक विशिष्ट चमत्कारपूर्ण पहलू है।

यद्यपि मूक प्रश्न का निर्धारण या यथार्थ ज्ञान करना एक जटिल पहेली है, तथापि हमारे पूर्वज महर्षियों एवं आचार्यों ने इसका रहस्योद्घाटन करने के लिए प्राचीनकाल से अद्यावधि निरन्तर प्रयास किया है। वे अपने प्रयास में सफल हुए हैं तथा इस चमत्कार से लोगों को प्रभावित कर इस शास्त्र में उनकी आस्था को दृढ़तर बनाते रहे हैं। ५वीं शताब्दी से लेकर आज तक प्रश्न शास्त्र के जितने भी ग्रन्थ लिखे गये हैं, उन सबमें प्राय: मूक प्रश्न की चर्चा की गई है। किन्तु इस विषय का सर्वाङ्गीण और शास्त्रीय (Systematic) विवेचन करने के लिए अभी तक

किसी स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना नहीं की गई। इस अभाव की ओर मेरा ध्यान अपने छात्र जीवन में ही आकृष्ट हुआ था तथा ज्योतिष शास्त्र के अध्यापन का अवसर मिलने के बाद मैंने इस विषय में उपलब्ध सामग्री का परिशीलन कर इस विषय पर स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखने का प्रयास किया।

प्रश्न शास्त्र में प्रचलित लग्न पद्धति, प्रश्नाक्षर पद्धति, स्वर पद्धति एवं चक्र पद्धति आदि—सभी रीतियों का विचार एवं विवेचन करते हुए इस ग्रन्थ में मूक प्रश्न जैसी जटिल पहेली को सुलझाने के लिए शास्त्रीय नियमों की सोदाहरण व्याख्या की गई है तथा इस पुस्तक के ५वें अध्याय में इस प्रश्न का समाधान करने की सरल रीति का भी सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। इसके साथ ही मूक प्रश्न का निश्चय कर लेने के बाद उसका शुभ या अशुभ फल जानने के लिए महत्त्वपूर्ण एवं अनुभूत योगों का संकलन भी किया गया है।

इस प्रकार मूक प्रश्न का विचार करने के लिए एक सर्वाङ्ग-पूर्ण पुस्तक ज्योतिष-शास्त्र के जिज्ञासु पाठकों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। मेरा विश्वास है कि यह लघुकाय ग्रन्थ मूक प्रश्न का निर्धारण एवं उसका फल जानने की प्रक्रिया का पूर्ण परिचय प्राप्त करने में ज्योतिष-शास्त्र के जिज्ञासु पाठकों के लिए सहायक होगा।

डॉ० शुकदेव चतुर्वेदी
ज्योतिषाचार्य

महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठतम धरोहर

महामृत्युञ्जय

[साधना एवं सिद्धि]

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी, एम०ए०
पी-एच० डी०; डी० लिट्०

इसमें आप प्राप्त करेंगे

- ☐ मानसिक शान्ति
- ☐ विरोधियों को निराशा
- ☐ सुरक्षा का अद्भुत कवच
- ☐ अचानक विपत्ति से बचाव
- ☐ इच्छा सिद्धि का अचूक उपाय
- ☐ रोग एवं क्लेश से मुक्ति
- ☐ आपसी मनमुटाव का निवारण
- ☐ बाधाएँ दूर हों
- ☐ साहस को बढ़ावा
- ☐ दिशा-निर्देश

सरलता इतनी कि जिसे आप स्वयं कर सकें

विद्वान इसकी उच्चता से परिचित है

मूल्य चालीस रुपये, डाक व्यय अलग

डाक द्वारा मंगाने का पता :— फोन : २७८८३५

रजन पब्लिकेशन्स

१६, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

नवीन ज्योतिष साहित्य

नष्ट जातकम् : आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ—जन्मपत्री न होने पर भी, बनाने का अनूठा ग्रन्थ

दाम्पत्यसुख : ज्योतिष के झरोखे से—सुखी विवाहित जीवन के लिये, ग्रह मेलापक, मंगलीदोष, विवाह होने का समय, विवाह में बाधाओं का कारण, सन्तान सुख जैसे गम्भीर प्रश्नों का सरल भाषा में उत्तम ग्रन्थ

दैवज्ञवल्लभा : आचार्य वराहमिहिर कृत दुर्लभ प्रश्न ग्रन्थ

प्रश्न मार्ग : दक्षिण भारत का प्राचीन ग्रंथ, सर्वप्रथम प्रकाशित

भावार्थ रत्नाकर : योगों की चमत्कारिक व्याख्या

यंत्र शक्ति : दुर्लभ यंत्र एवं उनकी चमत्कारिक शक्ति पर शोधपूर्ण रचना

भुवन दीपक : प्रश्न की चमत्कारिक पुस्तक

दशाफल रहस्य : विंशोत्तरी दशा का विशद् विवेचन

चन्द्रकला नाड़ी : दक्षिण के प्रसिद्ध ग्रंथ देवकेरलम् का सार रूप

महेश्वर तन्त्र : शिवगिरी कृत अमूल्य तंत्र पुस्तक

हस्त-परीक्षा : "कीरो" की हिन्दी भाषा में सर्वप्रथम रचना

मंत्र शक्ति : चमत्कारिक मंत्रों का अपूर्व संग्रह

तंत्र शक्ति : दुर्लभ तंत्र एवं उनके व्यावहारिक प्रयोग

भाव दीपिका : भास्कराचार्य रचित फलित के प्रामाणिक सिद्धांत

गोचर विचार : गोचर के मौलिक सिद्धान्तों का हेतुपूर्वक स्पष्टीकरण

पाश्चात्य ज्योतिष : अंग्रेजी ज्योतिष की उत्तम पुस्तक

महिलाएं और ज्योतिष : स्त्री जातक की उत्तम रचना

वर्षफल विचार : वर्षफल की व्यावहारिक पुस्तक

प्रश्न दर्पण : नवीन शैली से प्रश्नों का समाधान

उत्तर कालामृत : (कवि कालिदास कृत) अचूक फलित के लिए प्रसिद्ध प्राचीन ग्रन्थ

ज्योतिष सीखिये : सरल एवं रोचक ढंग से लिखी गई प्रारम्भिक ज्ञान के लिए सर्वोत्तम रचना

फलित सूत्र : जन्मकुंडली के बारह भावों की अनूठी व्याख्या

ज्योतिष, हस्तरेखा का अन्य साहित्य, अंग्रेजी-हिन्दी में उपलब्ध

विस्तृत सूची मंगाएं ।

रंजन पब्लिकेशन्स, १६, अन्सारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-२

अध्याय १

विषय प्रवेश

मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है। दृश्य एवं अदृश्य गतिविधियों को जानने के लिए मानव-मस्तिष्क में सदैव उत्कण्ठा रहती है। उसका स्वभाव ही इस प्रकार का है कि वह जानना चाहता है—क्यों ? कैसे ? क्या हो रहा है ? और क्या होगा ? उसकी यह जिज्ञासु-प्रवृत्ति उसके सामने अनेक प्रश्नों को उत्पन्न करती रहती है। जिस बात को जानने की उसके मन में प्रबल इच्छा या उत्कण्ठा रहती है, उसके बारे में पूरी जानकारी हो जाने पर उसे परम सन्तोष या असीम आनन्द मिलता है।

यद्यपि मानव-मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाली इच्छा, आकांक्षा, उत्कण्ठा, शंका या चिन्ता का ज्ञान और समाधान करना एक जटिल पहेली है, तथापि हमारे पूर्वज महर्षियों एवं मनीषों, आचार्यों ने मानव की इस स्वाभाविक जिज्ञासा का रहस्योद्‌घाटन करने के लिए प्रश्नशास्त्र की रचना की। ईसा की ५वीं शताब्दी से लेकर आज तक इस विषय में सैकड़ों मौलिक एवं नवीन ग्रन्थों की रचना हुई। भाषा एवं अपनी शास्त्रीय जटिलता के कारण यद्यपि ये ग्रन्थ आज जनसाधारण के लिए स्वयं ही रहस्य बने हुए हैं; तथापि इनमें मनुष्य की जिज्ञासा और ज्ञान पिपासा को शान्त करने के लिए पर्याप्त सामग्री विद्यमान है।

प्रश्न शास्त्र

प्रश्नशास्त्र ज्योतिष विद्या का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह तत्काल फल बतलाने वाला शास्त्र है। इसमें हम तात्कालिक लग्न एवं ग्रह स्थिति के आधार पर व्यक्ति के मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले प्रश्न और उसके शुभाशुभ फल का विचार करते हैं। केरल, रमल एवं स्वरशास्त्र इसके अंग हैं। इन शाखाओं में प्रश्नाक्षर, अंक एवं स्वर के आधार पर प्रश्न के शुभ या अशुभ फल का निश्चय किया जाता है।

इस शास्त्र में मुख्य रूप से तीन सिद्धान्तों का प्रचलन है—(१) प्रश्नलग्न सिद्धान्त, (२) प्रश्नाक्षर सिद्धान्त एवं (३) स्वर सिद्धान्त। इसके अलावा अंक तथा चर्चा-चेष्टा या हाव-भाव के द्वारा भी मनोगत भावों का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता रहा है। उपर्युक्त सभी सिद्धान्तों में लग्न सिद्धान्त व्यापक एवं ग्रह स्थिति पर आधारित होने के कारण सरल रीति से चमत्कारयुक्त फल का प्रतिपादन करता है। परिणामतः ज्योतिष-जगत् में इसका व्यापक प्रचार हुआ और आज यह प्रश्नशास्त्र का सर्वाधिक लोकप्रिय सिद्धान्त है।

प्रश्न विचार

जिस समय कोई व्यक्ति प्रश्न पूछने आवे, उस समय का इष्टकाल बनाकर ग्रह स्पष्ट, लग्न स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं नवमांश के आधार पर प्रश्न कुण्डली भावचलित-चक्र और नवमांश कुण्डली बना लेनी चाहिए। बहुधा देखा गया है कि ज्योतिषी आलस्यवश पञ्चांग से लग्न के आधार पर कुण्डली बनाकर फलादेश करने लगते हैं। किन्तु प्रश्न का फल निश्चय करने की प्रक्रिया में लग्न आदि भाव एवं नवमांश भी निर्णायक होते हैं। अतः इनकी उपेक्षा करने से निर्णय एक पक्षीय हो जाता है और

प्रश्न का फल या परिणाम यथार्थ रूप से नहीं घटता, अस्तु।

द्वादश भाव

प्रश्न कुण्डली में लग्न से प्रारम्भ कर १२ भावों की गणना की जाती है। ये क्रमशः इस प्रकार हैं—

(१)तनु, (२)धनु, (३) सहज, (४) सुहृद्, (५) पुत्र, (६) रिपु, (७) स्त्री, (८) आयु, (९) धर्म, (१०) कर्म, (११) आय और (१२) व्यय।

प्रश्न कुण्डली
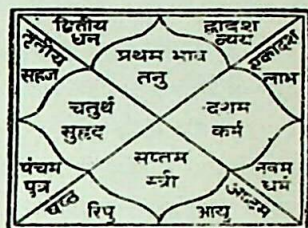
भावों की विशेष संज्ञाएँ

उपर्युक्त १२ भावों में से १, ४, ७ एवं १०वें भाव को केन्द्र, २, ५, ८ एवं ११वें भाव को पणफर और ३, ६, ९ एवं १२वें भाव को आपोक्लिम कहते हैं।

लग्न से ५ एवं ९वाँ भाव त्रिकोण, ४ एवं ८वाँ भाव चतुरस्र, २ एवं ७वाँ भाव मारक तथा ६, ८ एवं १२वाँ भाव त्रिक् कहलाता है। उक्त भावों में से ३, ६, १० एवं ११वें भाव को उपचय तथा शेष भावों को अनुपचय कहते हैं।

भावों से विचारणीय बातें

लग्न या प्रथम भाव—शरीर, रूप, चिह्न, जाति, सुख, दुःख, शील (स्वभाव), विवेक, मस्तिष्क आदि का विचार किया जाता है। इस भाव में मिथुन, कन्या, तुला और कुम्भ राशियाँ बलवान् होती हैं तथा इस भाव का कारक सूर्य होता है।

द्वितीय भाव—कुटुम्ब, नेत्र, कान, नाक, मित्र वाणी, स्वर, सौन्दर्य, गान, प्रेम, सुख भोग, चल-सम्पत्ति, सोना, चाँदी, रत्न और क्रय-विक्रय का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक बृहस्पति होता है।

तृतीय भाव—भाई, पराक्रम, आभूषण, सेवा-कार्य नौकर-चाकर, साहस, धैर्य, आय, यात्रा, दमा, क्षय, गायन एवं योगाभ्यास का विचार होता है। इस भाव का कारक मंगल होता है।

चतुर्थ भाव—माता, घर, ग्राम, जायदाद, खेती, बाग, सुख, सम्पत्ति, पेट, हृदय, दया, उदारता, परोपकार, छल, कपट एवं मित्रों का विचार होता है। इस भाव में कर्क, मकर एवं मीन राशियाँ वलवान् होती हैं। चन्द्रमा और बुध इस भाव के कारक होते हैं।

पञ्चम भाव—विद्या, बुद्धि, मंत्र की सिद्धि, विनय, नीति, व्यवस्था, प्रशासन, देवभक्ति, अचानक धन-लाभ, गर्भ, गर्भिणी, सन्तान, जठराग्नि एवं गर्भाशय का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक गुरु होता है।

षष्ठ भाव—विरोध, विलम्व, शत्रु, माया, चिन्ता, शंका, रोग, दुर्घटना, चोट, षड्यन्त्र, विपत्ति और शारीरिक दुर्बलता का विचार होता है। मंगल और शनि इस भाव के कारक माने गये हैं।

सप्तम भाव—प्रेम, प्रणय-सम्बन्ध, विवाह, स्त्री, मदन-पीड़ा कामुकता, सम्भोग, व्यापार, रोमांटिक प्रवृत्ति, फिल्म-उद्योग, वैश्यावृत्ति, जननेन्द्रिय, गुप्तरोग, झगड़े एवं बवासीर का विचार होता है। इस भाव का कारक शुक्र होता है।

अष्टम भाव—विपत्ति, व्याधि, आयु, मृत्यु, चिन्ता, गम्भीर विचार. समाधि, समुद्र-यात्रा, कर्जा, गुप्तांग, अण्डकोष और आकस्मिक संकट आदि का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक शनि होता है।

नवम भाव—धर्म, उपासना, योगाभ्यास, दार्शनिक ज्ञान, मनोवृत्ति, भाग्योदय, पराविद्या, तप, गुरु, तीर्थ-यात्रा, प्रवास, पिता का सुख और परोपकार का विचार होता है। सूर्य और गुरु

इस भाव के कारक होते हैं।

दशम भाव—प्रभाव, प्रतिष्ठा, यश, राज्य सम्मान, व्यापार, व्यवसाय, नौकरी, अधिकार, आज्ञा, प्रशासन, व्यवस्था, पिता, ऐश्वर्य एवं नेतृत्व का विचार किया जाता है। सूर्य, बुध और गुरु इस भाव के कारक होते हैं।

एकादश भाव—नियमित आय, मांगलिक कार्य, लाभ, मोटर, पालकी आदि वाहन, चल-सम्पत्ति, भाई एवं पुत्र-वधू का विचार है। इस भाव का कारक गुरु माना गया है।

द्वादश भाव—व्यय, हानि, राजदण्ड, टैक्स के मुकदमा, व्यसन, पैर, जीवन स्तर, नेत्र और रोग आदि का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक शनि होता है।

भाव और शरीर के अंग

लग्न आदि १२ भाव व्यक्ति के शरीर के विविध अंगों के प्रतीक होते हैं। उदाहरणार्थ, **प्रथम भाव** सिर का; **द्वितीय** मुख और गले का; **तृतीय** वक्षस्थल का; **चतुर्थ** हृदय और पसलियों का; **पंचम** पेट, पीठ एवं गर्भाशय का; **षष्ठ** कमर और आँतों का; **सप्तम** बस्ति का; **अष्टम** गुप्तांगों का; **नवम** उरु और जंघा का; **दशम** टेहुना का; **एकादश** पिंडुलियों का तथा **द्वादश भाव** पैर का प्रतिनिधि भाव होता है। अतः शरीर के जिस अंग का विचार करना हो, उसके प्रतिनिधि भाव में ह्रस्व या दीर्घ जैसी भी राशि हो और शुभ या पाप जो भी ग्रह बैठा हो, उसपर ध्यान देकर उस अंग में विकार, रोग एवं चिह्न आदि का निर्णय करना चाहिए।

भाव का बल

भाव के बल का विचार करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:—

(१) जो भाव अपने स्वामी से दृष्ट या युक्त होता है, वह

बलवान् कहा जाता है।

(२) भाव में शुभ ग्रह बैठा हो या उसे देखता हो तो वह बलवान् होता है।

(३) भाव का स्वामी ग्रह केन्द्र, त्रिकोण या 'उपचय स्थान में बलवान् हो तो भाव बलवान् होता है।

(४) जिस भाव में पाप ग्रह बैठे हों या उसे देखते हों तो वह भाव निर्बल होता है।

(५) भाव में उसका कारक ग्रह बैठा हो या देखता हो तो भाव बलवान् अन्यथा निर्बल होता है।

(६) जिस भाव का स्वामी ग्रह ६, ८ एव १२वें स्थान में हो वह भाव निर्बल होता है।

(७) जिस भाव में नीच राशि या शत्रु राशिगत ग्रह बैठा हो वह निर्बल होता है।

(८) जिस भाव से २, ४, ७, १० एव १२वें स्थान शुभ ग्रह हो वह बलवान् और पाप ग्रह हो वह निर्बल होता है।

(९) जिस भाव में ६, ८ या १२वें स्थान का स्वामी बैठा हो वह भाव निर्बल कहलाता है।

(१०) भाव का कारक ग्रह बलवान् हो तो भाव बलवान् और निर्बल हो तो भाव भी निर्बल होता है।

राशियाँ

क्रान्ति वृत्त या राशिचक्र के समान १२ खण्डों को राशि कहते हैं। प्रत्येक राशि में ३० अंश होते हैं। इनकी गणना मेषादि से होती है। क्रान्ति वृत्त और नाड़ी वृत्त (काल वृत्त) के सम्पात बिन्दु को मेषादि कहते हैं। इस बिन्दु से पूर्वादि क्रम से मेष आदि १२ राशियाँ स्थित हैं। इनके नाम हैं—(१) मेष, (२) वृष, (३) मिथुन, (४) कर्क, (५) सिंह, (६) कन्या, (७) तुला,

(८) वृश्चिक, (९) धनु, (१०) मकर (११) कुम्भ और (१२) मीन।

चर-स्थिर एवं द्विस्व भाव राशि

मेष आदि १२ राशियों में से ४ चर, ४ स्थिर एवं ४ द्विस्व-भाव संज्ञक कही जाती हैं। मेष, कर्क, तुला और मकर चर-संज्ञक, वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ स्थिर संज्ञक तथा मिथुन; कन्या, धनु और मीन द्विस्व भाव संज्ञक होती हैं।

राशियों के तत्त्व

मेष, सिंह एवं धनु राशि अग्नि तत्त्व वाली, वृष, कन्या एवं मकर पृथ्वी तत्त्व वाली, मिथुन, तुला और कुम्भ वायु तत्त्व वाली तथा कर्क, वृश्चिक और मीन जल तत्त्व वाली राशियाँ होती हैं।

राशियों की दिशा

मेष, सिंह एवं धनु राशि पूर्व दिशा की, वृष, कन्या एवं मकर राशि दक्षिण की, मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशि पश्चिम की और कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशि उत्तर दिशा की स्वामी होतो हैं।

शीर्षोदय आदि संज्ञा

मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक एवं कुम्भ राशियाँ शीर्षोदय, मेष, वृष, कर्क, धनु एवं मकर पृष्ठोदय तथा मीन राशि उभयोदय संज्ञक होती हैं।

राशियों के वर्ण (जाति)

मेष, सिंह एवं धनु राशि का क्षत्रिय वर्ण; वृष, कन्या एवं मकर का वैश्य वर्ण, मिथुन, तुला एवं कुम्भ का शूद्र वर्ण तथा कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशि का ब्राह्मण वर्ण होता है।

चतुष्पद आदि संज्ञा

मिथुन, कन्या, तुला एवं धनु राशियाँ द्विपद, मेष, वृष, सिंह

एवं मकर राशियाँ चतुष्पद, कुम्भ एवं मीन राशियाँ अपद तथा कर्क एवं वृश्चिक राशियाँ बहुपद मानी गई हैं।

राशियों के रंग

मेष का गुलाबी, वृष का सफेद, मिथुन का हरा, कर्क का पाटल, सिंह का भूरा, कन्या का पीला, तुला का विचित्र, वृश्चिक का श्वेत, धनु का सुनहरी, मकर का मटमैला, कुम्भ का चितकबरा और मीन का शुभ्र (चमकदार सफेद) रंग होता है।

पुरुष एवं स्त्री राशियाँ

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुम्भ ये छः विषम राशियाँ पुरुष संज्ञक होती हैं तथा वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर एवं मीन ये छः सम राशियाँ स्त्री संज्ञक होती हैं।

राशियों का बल

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुम्भ राशि दिन में बली होती हैं तथा वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर एवं मीन राशि रात्रि में बली होती हैं। लग्न में द्विपद राशि, दशम में चतुष्पद राशि, चतुर्थ में अपद राशि तथा सप्तम में बहुपद राशि बलवान् होती हैं।

राशियों की दृष्टि

मेष, वृष, सिंह आदि चतुष्पद राशियों की तिर्य दृष्टि, मिथुन, तुला, कन्या एवं धनु आदि मनुष्य (द्विपद) राशियों की समदृष्टि, मकर और मीन इन पक्षी राशियों की ऊर्ध्वदृष्टि तथा कर्क और वृश्चिक इन सरीसृप राशियों की अधोदृष्टि होती है।

धातु, मूल एवं जीव-संज्ञक राशियाँ

मेष, कर्क, तुला एवं मकर राशियाँ धातु संज्ञक होती हैं। वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ मूल संज्ञक तथा मिथुन, कन्या, धनु और राशि जीव संज्ञक मानी गई हैं।

राशियों की अन्य संज्ञाएँ

मेष आदि राशियों की प्रश्नशास्त्रोपयोगी अन्यान्य संज्ञाएँ इस प्रकार हैं—

राशियाँ	संज्ञा
मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या एवं धनु	शुष्क राशि
कर्क, कुम्भ, मकर, मीन एवं तुला	सजल राशि
कर्क, मीन एवं मकर का उत्तरार्द्ध	जलचर राशि
मेष, सिंह, तुला एवं धनु	स्थलचर राशि
वृष, मिथुन, वृश्चिक एवं कुम्भ	जलाश्रयी राशि
कर्क, वृश्चिक और मीन	बहुप्रजा राशि
वृष, मिथुन और कुम्भ	मध्यप्रजा राशि
मेष, सिंह, कन्या, तुला, धनु और मकर	अल्पप्रजा राशि
वृष, सिंह, कन्या एवं तुला	आध्यात्मिक राशि
मिथुन, तुला एवं कुम्भ	शास्त्रीय राशि
धनु, मकर, कुम्भ एवं मीन	धार्मिक राशि
सिंह, कन्या, तुला एवं वृश्चिक	दीर्घ राशि
मिथुन, कर्क, धनु एवं मकर	सम राशि
मेष, वृष, कुम्भ एवं मीन	ह्रस्व राशि

राशियों से विचारणीय बातें

प्रश्न लग्न में मेष आदि राशियों के होने पर उनसे निम्नलिखित वस्तुओं का विचार करना चाहिए—

मेष राशि से—ऊन, भेड़, बकरी, ऊनी वस्त्र, गेहूँ, जौ, मसूर, राल, औषधि एवं सोने का विचार होता है।

वृष राशि से—कपास, सूती वस्त्र, चावल, पुष्प, वनस्पति, गेहूँ, गाय, बैल, भैंस एवं अन्य पालतू पशुओं का विचार होता है।

मिथुन राशि से—जूट, सन, गन्ना, खरीफ की फसल के

अनाज, लता, कमल, कन्द-मूल, गर्भ, गर्भिणी एवं सन्तान का विचार होता है।

कर्क राशि से—नारियल, केला, संतरा, नींबू, मौसमी, गाजर, मूली, दालचीनी, मसाले, चाय एवं जलचर प्राणियों का विचार होता है।

सिंह राशि से—धान, चमड़ा, मांस, चर्बी, चीनी, दाल, छिलके वाले अनाज, गुड़, वृक्ष एवं जंगली जानवरों का विचार होता है।

कन्या राशि से—मूंग, मूँगफली, अलसी, तिल, महुआ, राजवाँ, मटर, रैस्टोरेन्ट, बार, नाच-गान, वैश्यावृत्ति, हल्का या अश्लील साहित्य तथा स्त्री आदि का विचार होता है।

तुला राशि से—उड़द, सरसों, घी, व्यापार, दलाली, क्रय-विक्रय, आढ़त, सौंदर्य-प्रसाधन, बिजली का सामान, धन-सम्पत्ति एवं आर्थिक विवादों का विचार होता है।

वृश्चिक राशि से—आम, अनानास, पके फल, ताजी सब्जी ऊन, खाल के वस्त्र, विष, रसायन, लोहा एवं अन्य खनिजों का विचार किया जाता है।

धनु राशि से—अस्त्र-शस्त्र, शिकार, हिरन, घोड़ा, नमक, खनिज, लवण, विटामिन, तेल, पेट्रोलियम पदार्थ, जलाने का कोयला, खान एवं विस्फोटक पदार्थों का विचार होता है।

मकर राशि से—ईख, बेल, इमारती लकड़ी, सोना, जल-यात्रा, जल में पैदा होने वाली वस्तुएँ, नौका, जहाज एवं जल सेना आदि का विचार होता है।

कुम्भ राशि से—जल, नदी, सरोवर, कमल, जल के पक्षी, फल, उद्यान, पेय-पदार्थ, शराब, आवस-अरिष्ठ, रोगी एवं अन्य मादक द्रव्यों का विचार होता है।

मीन राशि से—मछली, समुद्री रत्न, पेट्रोलियम द्वीप, टापू,

पक्षी, समुद्री दुर्घटना, मानसिक रोग, प्रेम, योनि-सम्बन्ध एवं देवभक्ति का विचार होता है।

राशियों के स्थान

मेष आदि १२ राशियों के निवास स्थान इस प्रकार हैं—

राशि	निवास स्थान
मेष	भूतल, गुफा, भूगर्भ एवं खान।
वृष	वाग-बगीचा, जंगल, पशुशाला और खुले मैदान।
मिथुन	पार्क, उद्यान, दर्शनीय स्थल, द्यूत-गृह, नाट्यशाला, सिनेमा-गृह आदि।
कर्क	तालाब, कुआँ, प्याऊ, पानी और रेती का किनारा।
सिंह	जंगल, पर्वत, गुफा, कन्दरा एवं सुनसान स्थान।
कन्या	चरागाह, पिकनिक स्थल, मनोरंजन स्थल एवं वैश्या-गृह।
तुला	शहर, बाजार, मण्डी, व्यापार केन्द्र एवं सार्वजनिक स्थान।
वृश्चिक	सर्प, चूहा एवं नेवला आदि का बिल।
धनु	घुड़शाला, गौशाला, सड़क या मैदान।
मकर	नदी, नाला एवं जलाशय आदि।
कुम्भ	जलपात्र, रसोईघर एवं प्याऊ आदि।
मीन	नदी, समुद्र, झील, बाँध आदि।

ग्रह और उनकी राशियाँ

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु शुक्र, राहु एवं केतु ये ९ ग्रह प्रश्नशास्त्र में शुभाशुभ फल के निर्णायक माने गये हैं। सूर्य आदि ७ ग्रह मेष आदि १२ राशियों के स्वामी होते हैं। जैसे मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल, वृष और तुला का स्वामी शुक्र, मिथुन और कन्या का स्वामी बुध, धनु और मीन का स्वामी

गुरु, मकर और कुम्भ का स्वामी शनि, कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा तथा सिंह राशि का स्वामी सूर्य होता है।

उच्च एवं मूल त्रिकोण राशियाँ

मेष के १० अंश पर सूर्य का, वृष के ३ अंश पर चन्द्रमा का, मकर के २८ अंश पर मंगल का, कन्या के १५ अंश पर बुध का, कर्क के ५ अंश पर गुरु का, मीन के २७वें अंश पर शुक्र का और तुला के २० अंश पर शनि का परमोच्च होता है। प्रत्येक ग्रह का अपनी उच्च राशि से सातवीं राशि में पठित अंशों पर परम नीच होता है।

सूर्य सिंह राशि का स्वामी होता है। किन्तु सिंह के १ अंश से २० अंश तक सूर्य मूल त्रिकोण और आगे स्वक्षेत्र होता है। चन्द्रमा वृष के ३ अंश तक उच्च में तथा आगे ४ अंश से ३० अंश तक मूल त्रिकोण में रहता है। मंगल का मेष के १८ अंश तक मूल त्रिकोण और आगे स्वक्षेत्र होता है। बुध का कन्या के " अंश तक उच्च, १६ से २० अंश तक मूल त्रिकोण एवं २१ से ३० अंश तक स्वक्षेत्र होता है। गुरु का धनु के १ से १३ अंश तक मूल त्रिकोण और १४ से ३० अंश तक स्वक्षेत्र होता है। शुक्र का तुला के १ अंश से १० अंश तक मूल त्रिकोण और आगे स्वक्षेत्र होता है। शनि का कुम्भ के १ अंश से २० तक मूल त्रिकोण और आगे स्वक्षेत्र होता है।

ग्रहों के मित्र और शत्रु

सूर्य के चन्द्रमा, मंगल एवं गुरु मित्र; बुध सम तथा शुक्र और शनि शत्रु होते हैं। चन्द्रमा के सूर्य एवं बुध मित्र तथा मंगल, गुरु, शुक्र और शनि सम होते हैं। इसका शत्रु कोई नहीं होता। मंगल के सूर्य, चन्द्रमा और गुरु मित्र; शुक्र और शनि सम तथा बुध शत्रु होता है। बुध के सूर्य एवं शुक्र मित्र; गुरु, मंगल और शनि सम तथा चन्द्रमा शत्रु होता है। गुरु के सूर्य,

चन्द्रमा एवं मंगल मित्र; शनि सम तथा बुध और शुक्र शत्रु होते हैं। शुक्र के बुध एवं शनैश्चर मित्र, मंगल और गुरु सम तथा सूर्य चन्द्रमा शत्रु होते हैं। शनि के बुध एवं शुक्र मित्र; गुरु सम तथा सूर्य, चन्द्र एवं मंगल शत्रु होते हैं। स्पष्टता के लिए निम्नलिखित चक्र देखिये—

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि,	ग्रह.
चं. मं- गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.	मित्र
बु.	मं. गु. शु.श.	शु. श.	गु. मं. श.	श.	मं. गु.	गु.	सम
शु. श.	× ×	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रु

चतुष्पाद आदि संज्ञाएँ

बुध गुरु एवं शुक्र द्विपद संज्ञक, सूर्य, मंगल एवं शनि चतुष्पद संज्ञक और चन्द्र एवं बुध बहुपद संज्ञक ग्रह होते हैं। सब ग्रहों में चन्द्रमा शीघ्रगति ग्रह होता है।

ग्रहों की दिशाएँ

सूर्य पूर्व दिशा का, शुक्र अग्निकोण का, मंगल दक्षिण का, राहु नैऋत्य कोण का, शनि पश्चिम का, चन्द्र वायव्य कोण का, बुध उत्तर का और गुरु ईशान कोण का स्वामी होता है। प्रश्न कुण्डली नष्ट पदार्थ, लाभालाभ एवं अन्य प्रश्नों का जो ग्रह योग कारक हों उसकी दिशा में लाभ आदि होता है।

स्त्री-पुरुष एवं नपुंसक ग्रह

सूर्य आदि नौ ग्रहों को स्त्री, पुरुष एवं नपुंसक इन वर्गों में

इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है—चन्द्र, शुक्र एवं राहु स्त्री ग्रह, सूर्य, मंगल एवं गुरु पुरुष ग्रह तथा बुध, शनि एवं केतु नपुंसक ग्रह होते हैं।

ब्राह्मण आदि वर्ण (जाति)

गुरु और शुक्र ब्राह्मण सूर्य और मंगल क्षत्रिय; चन्द्रमा और बुध वैश्य; शनि शूद्र तथा राहु और केतु नीच जाति के माने गये हैं। मूक प्रश्न में मनुष्य की जाति का निश्चय ग्रहों की जाति के अनुसार करना चाहिये।

ग्रहों के रंग

चन्द्रमा और शुक्र का सफेद रंग, मंगल का लाल, गुरु का पीला या सुनहरी, बुध दूर्वादल की तरह श्याम या हरा, सूर्य का गुलावी तथा शनि और राहु का काला रंग होता है।

ग्रहों की धातु

सूर्य का सोना; चन्द्रमा की चाँदी; मंगल का ताँबा; बुध का काँसा; गुरु का सोना एवं पीतल; शुक्र चाँदी; शनि और राहु की धातु लोहा होती है।

ग्रहों की योनी

सूर्य एवं मंगल की पशु योनि; चन्द्रमा एवं राहु की सर्प योनि; गुरु और शुक्र की मनुष्य योनि तथा बुध और शनि की पक्षी योनि होती है।

ग्रहों का निवास

सूर्य का निवास, गोशाला, घुड़शाला एवं चरागाह में; चन्द्रमा का तालाव; सरोवर, झील, झरना एवं नदी आदि के समीप; मंगल का रसोईघर; भट्टी, ईंटों का भट्टा, हलवाई की दुकान एवं कारखाने की भट्टी के समीप; बुध का श्मशान भूमि में; गुरु का ग्राम, नगर, देवालय एवं शिक्षा संस्था में; शुक्र का

जल एवं पर्वत में; शनि का ऊसर और बंजर जमीन में तथा राहु का निवास कंटीले जंगल में माना गया है।

अन्य संज्ञाएँ

ग्रहों की अन्य संज्ञाएँ संक्षेप में इस प्रकार हैं।

ग्रह	लिंग	तत्त्व	प्रकृति	काल	आकृति	स्वभाव
सूर्य	पुरुष	अग्नि	पित्त	मध्याह्न	चौकोर	स्थिर/दृढ़
चन्द्र	स्त्री	जल	कफ	अपराह्न	स्थूल	चंचल
मंगल	पुरुष	अग्नि	पित्त	मध्याह्न	चकौर	उग्र/क्रूर
बुध	नपुंसक	भूमि	त्रिदोष	पूर्वाह्न	गोल	मृदु
गुरु	पुरुष	आकाश	समधातु	पूर्वाह्न	गोल	भावुक
शुक्र	स्त्री	जल	कफ	अपराह्न	खंडित	स्वार्थी
शनि	नपुंसक	वायु	वात	सन्ध्या	दीर्घ	आलसी
राहु	स्त्री	वायु	वात	सन्ध्या	दीर्घ	तीक्ष्ण

ग्रहों का प्रभाव क्षेत्र

सूर्य, बुध एवं शनि का प्रभाव ८ योजन तक, शुक्र का १६ योजन तक, गुरु का १० योजन तक, मंगल का ७ योजन तक और चन्द्रमा का २१ योजन तक प्रभाव पड़ता है। एक योजन में सामान्यतया ४ कोस, ८ मील या लगभग १३ किलोमीटर माने जाते हैं। ग्रहों के प्रभाव क्षेत्र की दूरी के आधार पर नष्ट या चोरी गई वस्तुओं की दूरी का ज्ञान करना चाहिए।

ग्रहों की आयु (अवस्था)

सूर्य की आयु २० वर्ष, चन्द्रमा की ७० वर्ष, मंगल की १६ वर्ष, बुध की ५० वर्ष, गुरु की ३० वर्ष, शुक्र की ७ वर्ष तथा शनि और राहु की अवस्था लगभग १०० वर्ष मानी गई है।

ग्रहों के रस

सूर्य का कड़वा रस, चन्द्रमा का खारा (नमकीन), मंगल का

कषैला, बुध का तीखा, गुरु का मीठा, शुक्र का खट्टा तथा शनि और राहु का तीखा या कड़वा रस होता है।

धातु, मूल एवं जीव के प्रतिनिधि

चन्द्रमा, मंगल, शनि एवं राहु धातु के सूर्य और शुक्र मूल के तथा बुध और गुरु जीव के प्रतिनिधि ग्रह होते हैं। मूक प्रश्न का विचार करते समय इस वर्गीकरण का ध्यान रखना चाहिए।

ग्रहों की दृष्टि

प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से तीसरे और दसवें स्थान को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें और नवें स्थान को दो चरण दृष्टि से, चौथे और आठवें स्थान को तीन चरण दृष्टि से और सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है। किन्तु शनि तीसरे और दसवें स्थान को, गुरु पंचम और नवम स्थान को तथा मंगल चौथे और आठवें स्थान को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है।

प्रश्न ज्ञान प्रदीप के ग्रहों की दृष्टि के बारे में दृष्टि के इस सामान्य सिद्धान्त से भिन्न एक नई कल्पना की गई है और इस नई उद्‌भावना के आधार पर प्रश्न कुण्डली से फलादेश यथार्थ रूप में घटता भी है। इसके अनुसार—प्रत्येक ग्रह प्रथम एवं सप्तम स्थान की पूर्ण दृष्टि से; पंचम और नवम स्थान को आधी दृष्टि से; चतुर्थ और अष्टम स्थान को त्रिपाद ($\frac{3}{4}$) दृष्टि से; दशम स्थान को पाद ($\frac{1}{4}$) दृष्टि से तथा तृतीय और एकादश स्थान को पादार्ध ($\frac{1}{8}$) दृष्टि से देखता है।

मित्र एवं शत्रु दृष्टि

कोई भी ग्रह प्रश्न कुण्डली में जिस भाव में बैठा हो उस स्थान से ३, ५, एवं ११वें भाव तथा उसमें स्थित ग्रह को मित्र दृष्टि से; १, ४, एवं १०वें भाव तथा उसमें स्थित ग्रह को शत्रु दृष्टि से और २, ६, ८ एवं १२वें भाव तथा उसमें स्थित ग्रह को सम दृष्टि से देखता है।

ग्रहों से विचारणीय बातें

सूर्य से—आत्मा, स्वभाव, आरोग्यता, राज्य, शासन, देवालय, ट्रस्ट, प्रताप, प्रभाव, सम्मान, उच्च पद, आसक्ति, भक्ति, पिता एवं लक्ष्मी का विचार करते हैं। यह नेत्र, हृदय, मेरुदण्ड एवं स्नायु मंडल अवयवों का प्रतिनिधि ग्रह है। इससे सिर दर्द, अपचन, ज्वर, अतिसार (पेचिश), मंदाग्नि एवं नेत्र रोगों का विचार भी करते हैं।

चन्द्रमा से—माता, स्वभाव, मनोवृत्ति, शारीरिक बल, खून, राज्य-कृपा, सम्पत्ति, मन, बुद्धि, अधिकारियों से सम्पर्क, कामुकता एवं धन आदि का विचार करते हैं शरीर में मन, मस्तिष्क, बुद्धि एवं रक्त संचार की प्रणाली प्रतिनिधि ग्रह माना है। इससे पाण्डुरोग, जलोदर, सर्दी, जुकाम, खाँसी, तपेदिक, मूत्र रोग, स्त्री रोग एवं मानसिक रोगों का विचार करते हैं।

मंगल से—साहस, धैर्य, पराक्रम, अग्नि, कार्य, शस्त्र, सेना, युद्ध, विवाद, चोरी, गुण्डागर्दी, पुलिस, भाई, बहिन, रोग, शत्रु, जमीन, जायदाद खेती एवं जाति का विचार करते हैं। यह शरीर में रक्त मांसपेशियाँ एवं स्फूर्ति या बल का प्रतिनिधि माना गया है। इससे चोट, घाव, जलना, रक्त विकार, रक्तचाप, रक्त-कैंसर, एलर्जी एवं फोड़ा-फुन्सी जैसे रोगों का विचार करते हैं।

बुध से—शिक्षा, प्रशिक्षण, शोध, लेखक, सम्पादन, चिकित्सा, शिल्प, कानून, व्यापार, मित्र, विवेक, मामा एवं वाणी का विचार करते हैं। यह जिह्वा और तालु आदि उच्चारण सम्बन्धी अंगों का प्रतिनिधि होता है। इससे हकलाना, तुतलाना, संग्रहणी, बुद्धि भ्रम, आलस्य, कमजोरी, वायुरोग, कुष्ठ एवं अन्य चर्म रोगों का विचार किया जाता है।

गुरु से—पुत्र, पौत्र, जाति, विद्या, धर्म, दर्शन, सामाजिक कार्य, देवालय, अदालत, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं सामाजिक संस्थाओं

का विचार होता है। यह चर्बी, कफ, जिगर एवं गुर्दे का प्रतिनिधि ग्रह है। इससे जिगर, तिल्ली, पथरी, गुल्म, सूजन, एलर्जी, कमजोरी और पेट के रोगों का विचार किया जाता है।

शुक्र से—कामुकता, प्रणय सम्बन्ध, विवाह, साहित्य संगीत, कला, पुष्प, आभूषण, वाहन, शय्या, स्त्री, द्यूत (जुआ), शराब, वेश्यालय एवं अन्य मनोरंजक तथा राजनैतिक गतिविधियों का विचार होता है। यह वीर्य, गुप्तांग में मस्तिष्क का प्रतिनिधि ग्रह है। इससे कफ, वीर्य विकार, गुप्त रोग, प्रदर मधुमेह, क्षय एवं कमजोरी जैसे रोगों का विचार करना चाहिये।

शनि से—आयु, उदारता, विपत्ति, योगाभ्यास, शयन, आलस्य, प्रमाद, झगड़े-झंझट, ऐश्वर्य, दम्भ, ख्याति, नौकरी एवं मोक्ष का विचार होता है। यह स्नायु, नस, हड्डी एवं पैर आदि अवयवों का प्रतिनिधि ग्रह है। इससे वायुविकार, दर्द, दुर्घटना, लकवा, पोलियो, अंग-भंग, मिरगी, हिस्टीरिया एवं मूर्च्छा आदि रोगों का विचार करना चाहिए।

राहु से—पितामह, अचानक प्राप्ति, यात्रा एवं पुलिस केस का विचार होता है। इससे तृष्णा, वमन (उल्टी करना), चेचक, खसरा एवं श्वेत कुष्ट का विचार करना चाहिये।

केतु से—नाना, मौसी, डकैती, अपहरण, ठगी, षड्यन्त्र एवं कूटनीति का विचार होता है। यह दाद, खाज, खुजली, रक्त कुष्ठ, खून-खराबी, पेचिश एवं अचानक उत्पन्न होने वाले रोगों का प्रतिनिधि माना गया है।

ग्रह एवं उसकी वस्तुएँ

सूर्य आदि ६ ग्रह विभिन्न वस्तुओं के कारक प्रतिनिधि होते हैं। ग्रहों से वस्तुओं का विचार इस प्रकार किया जाता है—

सूर्य से—गेहूँ, घी, गुड़, सोना, तेल, रस, माणिक्य, लाल पत्थर, ऊन एवं सुगन्धित वस्तुओं का विचार किया जाता है।

चन्द्रमा से—चावल, दूध, दही, मक्खन, क्रीम, पेय पदार्थ, अच्छी शराब, फलों के रस, चाँदी, मोती, खनिज लवण, श्वेत रंग की चीजें, रुपया एवं खेरीज का विचार करना चाहिये।

मंगल से—धान, मसूर, दाल, पके फल, भोजन, लाल वस्तुएँ, लाल वस्त्र, रक्त, मूंगा, तांबा, जमींन, ईंट एवं खेती का विचार होता है।

बुध से—मूंग, मटर, ताजे फल, हरी सब्जी, हरा वस्त्र, रबड़, प्लास्टिक, कांसा, पन्ना, लता, औषधि, वनस्पति एवं पेड़-पौधों का विचार करते हैं।

गुरु से—चना, सरसों, दाल, गुड़, खजूर, तिलहन, वनस्पति घी, मेवा, जौ, मिठाई, सोना, पुखराज, पीला वस्त्र, चर्बी, पीतल, हल्दी एवं आसव-अरिष्टों का विचार किया जाता है।

शुक्र से—रस, रसायन, वाजीकरण औषधि, सुगन्धित वस्तु, प्रसाधन, भोगोपभोग की सामग्री, वैभव एवं विलास की वस्तुएँ, मनोरंजन के साधन, श्वेत वस्त्र, कृत्रिम रेशम, चाँदी, मोती, हीरा एवं फैन्सी तथा सजावट के सामान का विचार होता है।

शनि से—उड़द, तिल, कुल्थी, लोहा, नमक, कोयला, पेट्रोलियम, पत्थर, काला वस्त्र, चमड़ा, नीलम, माँस, ताड़ी, देशी शराब एवं तेल का विचार करना चाहिये।

राहु से—लकड़ी, फर्नीचर, इमारती सामान, शय्या, वाहन, बच्चों के खिलौने, बिजली का सामान, आणविक ऊर्जा एवं अन्य विस्फोटक पदार्थों का विचार किया जाता है।

केतु से—घास-फूंस, औषधि, ऊन, बान, सन, जूट, बारदाना, डिब्बा, पैकिंग का सामान, बाँस का कागज, अस्पताल एवं प्रयोगशाला के उपकरण तथा पालतू पशुओं का विचार किया जाता है।

अध्याय २

प्रश्न दो प्रकार के होते हैं—वाचिक और मानसिक। वाचिक प्रश्न में पृच्छक जिस बात को पूछना चाहता है उसे ज्योतिषी के सामने स्पष्ट रूप से कहकर उसका शुभाशुभ फल ज्ञात करता है। किन्तु मानसिक प्रश्न में वह अपना प्रश्न या मनोगत भाव ज्योतिषी को नहीं बतलाता। अपितु अपना प्रश्न तथा उसका शुभ या अशुभ फल ये दोनों बातें ज्योतिषी से जानना चाहता है। इस प्रकार के मानसिक प्रश्नों को मूक प्रश्न कहते हैं।

हमारे प्राचीन आचार्यों ने व्यक्ति के मानसिक प्रश्न का निश्चय करने के लिए संसार के समस्त पदार्थों को धातु, मूल एवं जीव इन तीन वर्गों में वर्गीकृत किया है। समस्त खनिज, रसायन, रत्न एवं अन्य ठोस पदार्थ धातु वर्ग में आते हैं। मनुष्य, पशु, पक्षी, सरीसृप, (रेंगने वाले), कीटाणु, भूत-प्रेत, राक्षस एवं देवता आदि सभी प्राणी जीव वर्ग में आते हैं। वृक्ष, लता, गुल्म, औषधि, वनस्पति एवं धान्य आदि मूल वर्ग में कहे गये हैं। पृच्छक के मन में इन्हीं तीनों में से किसी एक के बारे में चिन्ता होती है।

प्रश्नकर्त्ता का विचार

कभी-कभी पृच्छक धोखा देने, उपहास करने या परीक्षा लेने के लिए भी आते हैं। अतः मूक प्रश्न का विचार करने से पूर्व प्रश्नकर्त्ता का सावधानीपूर्वक विचार कर लेना चाहिये। ·नुभवी ज्योतिषी पृच्छक की चर्या, चेष्टा एवं इंगित (भाव

भंगिमा) देखकर ही उसके बारे में पूर्वानुमान कर लेते हैं। प्रश्न-शास्त्र में पृच्छक का विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। विभिन्न प्रश्न ग्रन्थों में इसका निर्णय करने के लिये अनेक योग बतलाये गए हैं। यहाँ हम कतिपय अनुभव सिद्ध योग लिख रहे हैं। पाठक बन्धुओं को चाहिये कि वे इन योगों के आधार पर सर्वप्रथम पृच्छक का विचार कर लें।

अनुभूत योग—(१) प्रश्न लग्न में चन्द्रमा और शनि हों तथा कुम्भ राशि में रवि हो तथा बुध अस्त हो प्रश्नकर्ता कपट रूप से या शरारत के लिए आता है। अन्यथा वह वास्तविक रूप से जिज्ञासु होता है। (२) प्रश्न कुण्डली में लग्न या सप्तम भाव में पाप या क्रूर ग्रह बैठे हों तो पृच्छक दुष्ट एवं कपटी होता है और वह ज्योतिषी की परीक्षा करने आता है। (३) प्रश्न लग्न में चन्द्रमा हो तथा सूर्य, बुध एवं शनि एक साथ केन्द्र स्थान में हों तो पृच्छक धूर्त होता है और वह उपहास करने आता है। (४) प्रश्न लग्न में चन्द्रमा, केन्द्र में शनि और बुध अस्त हो तो प्रश्नकर्ता धूर्त होता है और वह अनर्गल बातें व्यर्थ या काल्पनिक प्रश्न पूछता है। (५) प्रश्न लग्न में स्थित चन्द्रमा को मंगल और बुध सम-दृष्टि से देखते हैं तो पृच्छक कपटी होता है। (६) लग्न या सप्तम स्थान अथवा लग्नेश या सप्तमेश पर गुरु और चन्द्रमा की शत्रु दृष्टि हो तो प्रश्नकर्ता धूर्त होता है तथा वह मात्र उपहास करने के लिए आता है। (७) बुध और गुरु ये दोनों सप्तमेश को शत्रु दृष्टि से देखते हों तो प्रश्नकर्ता पाखण्डी होता है। उसका आचार एवं व्यवहार कृत्रिम होता है तथा वह उपहास करने के लिए आता है।

यदि प्रश्न कुण्डली में उक्त रोगों में से कोई एक योग हो तो ज्योतिषी को प्रश्नकर्ता के साथ सावधानीपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। सामान्यतया उसकी चाल प्रपञ्च में नहीं आनी

चाहिए। प्रश्न कुण्डली में सामान्यतया ऐसा योग न होने पर पृच्छक सरल हृदय होता है और वह वास्तविक रूप से अपनी शंका का समाधान करने ज्योतिषी के पास आता है। कुछ प्रश्न-कर्ता श्रद्धालु, आस्थावान् एवं सज्जन होते हैं। ऐसे लोगों के प्रश्नों का मनन कर फलादेश करना चाहिए। इस विषय में निम्न-लिखित योग हमारे अनुभव में आये हैं—

(१) लग्न या सप्तम में शुभ ग्रह हों अथवा लग्न या सप्तम स्थान पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो पृच्छक सरल हृदय होता है।

(२) चन्द्रमा और गुरु दोनों शुभ स्थान में मित्र राशि में बैठे हों तो पृच्छक श्रद्धावान् होता है।

(३) बुध या गुरु लग्न, सप्तम, लग्नेश या सप्तमेश को मित्र दृष्टि से देखते हों तो प्रश्नकर्ता सज्जन होता है।

(४) चन्द्रमा और लग्नेश को बुध सम-दृष्टि से देखता हो तो प्रश्नकर्ता जिज्ञासु होता है।

इस प्रकार प्रश्नकर्ता का विचार कर पृच्छक के वास्तविक रूप में जिज्ञासु होने पर मूक प्रश्न का निश्चय करना चाहिए। हमारा अनुभव है कि जो लोग जल्दबाजी, उपेक्षा या प्रलोभन के कारण प्रश्नकर्ता का विचार किये बिना मूक प्रश्न या प्रश्न के फल का विचार करते हैं वे अधिकांश प्रश्नकर्ता की चाल में आकर मात खा जाते हैं। प्रश्न विद्या वास्तविक जिज्ञासामूलक प्रश्नों का समाधान खोजने की शास्त्रीय (सिस्टेमेटिक) रीति है। अतः मात्र मनोरंजन बुद्धि-विलास या हास्य-विनोद आदि के लिये इस शास्त्र का प्रयोग करना इसका दुरुपयोग ही है। प्रश्नतन्त्र के प्रणेता आचार्य नीलकण्ठ ने कहा है कि क्षुद्र, पाखण्डी, धूर्त, श्रद्धाहीन, एवं हँसी उड़ाने वाले किसी भी व्यक्ति के प्रश्न का विचार नहीं करना चाहिये। मन, वचन और कर्म में भेद होने के कारण इनके प्रश्न का निर्णय यथार्थ नहीं हो पाता।

धातु : मूल या जीव की चिन्ता

पहले कहा जा चुका है कि संसार के समस्त पदार्थ मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं—धातु, मूल एवं जीव। अतः व्यक्ति के मन में इन्हीं तीनों में से किसी एक की चिन्ता या उसके बारे में जिज्ञासा होती है। पृच्छक के मन में धातु, मूल या जीव किसकी चिन्ता है ? यह निश्चय करने के लिये प्रश्नग्रन्थों में विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। यहाँ हम धातु आदि निश्चय करने के लिये कुछ प्रसिद्ध एवं अनुभव सिद्ध योग लिख रहे हैं।

प्रसिद्ध योग

(१) मेष, कर्क, तुला एवं मकर धातु राशियाँ हैं। वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ मूल राशियाँ हैं और मिथुन, कन्या, धनु एवं मीन जीव राशियाँ होती हैं। अर्थात् चर, स्थिर एवं द्विस्वभाव राशियाँ क्रमशः धातु, मूल एवं जीव की प्रतिनिधि मानी गई हैं। प्रश्न लग्न में बलवान् राशि के अनुसार धातु, मूल एवं जीव की चिन्ता कहनी चाहिये।

(२) चन्द्र, मंगल, शनि और राहु धातु के, सूर्य और शुक्र मूल के तथा बुध और गुरु जीव के प्रतिनिधि होते हैं। किन्तु स्वराशि (कर्क) में चन्द्रमा हो तो वह मूल का प्रतिनिधि होता है तथा स्वराशि में शनि हो तो वल्लरी (लता आदि) का प्रतिनिधि होता है अन्यथा ये दोनों धातु के प्रतिनिधि होते हैं। इसी प्रकार स्वराशि में बुध धातु का प्रतिनिधि और अन्य राशि में जीव का प्रतिनिधि होता है। इस प्रकार प्रश्न लग्न में जो बलवान् ग्रह बैठा हो या जो लग्नेश हो उसके अनुसार धातु मूल एवं जीव-विषयक प्रश्न का निश्चय कर लेना चाहिये।

(३) प्रश्न कुण्डली में यदि कोई ग्रह अपने नवमांश में स्थित होकर लग्न, पञ्चम या नवम भाव में वर्तमान स्वनवमांश को देखता हो तो पृच्छक के तन में धातु चिन्ता होती है। यदि वह

ग्रह किसी अन्य ग्रह के नवमांश में स्थित होकर उक्त तीनों भावों में वर्तमान स्वनवमांश को देखता हो तो जीव-विषयक चिन्ता होती है और यदि वह किसी अन्य ग्रह के नवमांश में स्थित होकर उक्त भावों में वर्तमान अन्य ग्रह के नवमांश को देखता हो तो मूल की चिन्ता होती है।

(४) प्रश्न लग्न में विषय राशि में १ ४, ७वाँ नवमांश हो तो धातु चिन्ता; २, ५, ८वाँ नवमांश हो तो मूल चिन्ता और ३, ६, या ९वाँ नवमांश हो जीव चिन्ता होती है। यदि प्रश्न लग्न में समराशि हो तो १, ४, ७वाँ नवमांश होने पर जीव चिन्ता; २, ५, ८वाँ नवमांश हो तो मूल चिन्ता एवं ३, ६, ९वाँ नवमांश हो तो धातु चिन्ता कहनी चाहिये।

(५) प्रश्न कुण्डली में सर्वाधिक बलवान् ग्रह से भी धातु, मूल एवं जीव-विषयक चिन्ता का निश्चय किया जाता है—यदि प्रश्न कुण्डली में सूर्य या मंगल अधिक बलवान् हो तो धातु की; बुध या शनि अधिक बलवान् हो तो मूल की और चन्द्रमा, गुरु या शुक्र अधिक बलशाली हो तो जीव-विषयक चिन्ता होती है।

इन योगों के अलावा प्रश्न शास्त्र के आचार्यों ने मूक प्रश्न के प्रसंग में धातु, मूल एवं जीव-विषयक चिन्ता का निश्चय करने के लिये कुछ सरल युक्तियाँ भी बतलाई हैं, जो इस प्रकार हैं—

सरल युक्ति

(१) प्रश्नकर्ता से कोई संख्या पूछकर उसे दो से गुणा कर एक और जोड़ दें। फिर योग में तीन का भाग दें। यदि एक शेष हो तो जीव चिन्ता, दो शेष हो तो धातु चिन्ता और शून्य शेष हो तो मूल चिन्ता कहनी चाहिए। जैसे राकेश प्रश्न पूछने आया। ज्योतिषी ने उससे एक संख्या पूछी और उसने सोलह संख्या बताई, अब नियमानुसार सोलह अंक को दूना कर एक जोड़ा तो तैंतीस संख्या हुई। इसमें तीन का भाग देने से शून्य बचा।

अतः उसके मन में मूल-सम्बन्धी प्रश्न कहना चाहिये।

(२) प्रश्नकर्ता आते समय यदि ऊपर की ओर देखता हो तो जीव चिन्ता, नीचे की ओर देखता हो तो मूल चिन्ता तथा सामने देखता हो तो धातु चिन्ता कहनी चाहिये।

(३) प्रश्नकर्ता पूर्व की ओर मुँह करके प्रश्न करे तो धातु चिन्ता, दक्षिण की ओर मुँह करके प्रश्न करे तो जीव चिन्ता, उत्तर की ओर मुँह करके प्रश्न करे तो मूल चिन्ता और पश्चिम की ओर मुँह करके प्रश्न करे तो मिश्रित—धातु, मूल तथा जीव विषयक मिला हुआ प्रश्न होता है।

(४) यदि प्रश्नकर्ता मुख, बाहु या सिर का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो जीव चिन्ता; हृदय, पेट एवं कमर का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो धातु चिन्ता; वस्ति, गुप्तांग, जंघा या चरण का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो मूल चिन्ता कहनी चाहिये। किन्तु 'प्रश्नचण्डेस्वरकार' 'रामकृष्ण दैवज्ञ' के मतानुसार जंघा और पैर का स्पर्श करने पर जीव के सम्बन्ध में ही चिन्ता होती है।

(५) प्रश्न के समय यदि जल या पेय-पदार्थ समीप में हों तो जीव चिन्ता, खाद्य-पदार्थ या अन्न समीप हो तो मूल चिन्ता और अग्नि समीप हो तो धातु चिन्ता कहनी चाहिए।

पूर्वोक्त योगों के उदाहरण

१२ दिसम्बर, १९७५ को प्रातःकाल किसी ने प्रश्न किया। उस समय सिंह लग्न था। तत्कालीन ग्रहस्थिति के अनुसार प्रश्न कुण्डली इस प्रकार है—

इस कुण्डली में लग्न में सिंह
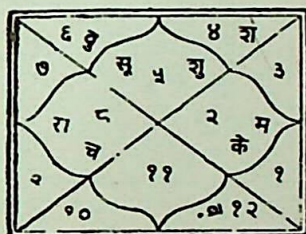
राशि है। यह राशि अपने स्वामी सूर्य और शुभ ग्रह शुक्र से दृष्ट होने के कारण बलवान् है। अतः योग संख्या (१) के अनुसार मूल-विषयक चिन्ता कहनी चाहिये।

योग-संख्या दो का उदाहरण

उसी दिन कन्या लग्न में प्रश्न करने पर कुण्डली इस प्रकार बनी—
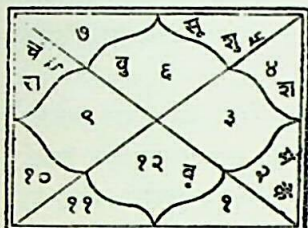
इस कुण्डली में बुध कन्या राशि में है। उस दिन पञ्चांग में स्पष्ट बुध=५।२१।५७ है। अतः बुध कन्या राशि के २२वें अंश पर होने के कारण स्वक्षेत्र में हुआ। यद्यपि बुध और कन्या राशि दोनों ही जीव के प्रतिनिधि होते हैं। किन्तु स्वराशि में बुध होने से योग संख्या (२) के अनुसार यह धातु-विषयक प्रश्न सिद्ध हुआ। परिणामतः प्रश्नकर्ता के मन में धातु चिन्ता कहनी चाहिये।

योग-संख्या तीन के उदाहरण

२० सितम्बर, १९७५ शनिवार को मध्याह्न के समय वृश्चिक में प्रश्न किया गया। उस समय वृश्चिक लग्न स्पष्ट= ७।१६।५।१० थी। उसकी प्रश्न कुण्डली इस प्रकार है—
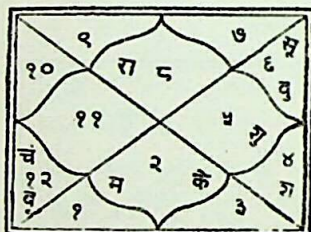
इस कुण्डली में प्रश्न के समय वृश्चिक लग्न में उसी का नवमांश है तथा पंचम भाव में स्थित गुरु की लग्न पर दृष्टि है। उस दिन पंचांग के अनुसार स्पष्ट गुरु= ११।२९।६।४० है। नवमांश की गणना के अनुसार यह गुरु भी स्वनवमांश है। अतः योग संख्या ३ के अनुसार पृच्छक के मन में धातु चिन्ता कहनी चाहिए।

उसी दिन अपराह्न मकर लग्न में प्रश्न किया गया। उस समय स्पष्ट लग्न=९।२।१०।२५ थी। उस समय की कुण्डली इस प्रकार है—

इस कुण्डली में प्रश्न लग्न में स्वनवमांश है तथा लग्न पर केवल शनि की दृष्टि है। यह शनि पंचांग के अनुसार उस दिन कर्क राशि के ७ अंश पर है। अतः यह सिंह के नवमांश में है। इस प्रकार अन्य ग्रह के नवमांश में स्थित शनि की लग्नस्थ नवमांश पर दृष्टि होने के कारण इस समय पृच्छक के मन में जीव-विषयक चिन्ता कहनी चाहिये।
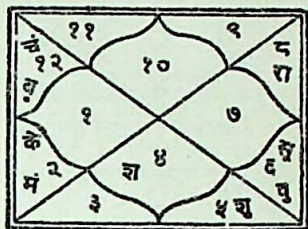
इसी दिन सायंकाल मीन लग्न में भी प्रश्न किया गया। उस समय स्पष्ट लग्न=११।१०।२५।५ थी। उस समय की प्रश्न कुण्डली निम्नलिखित है—

इस कुण्डली में प्रश्न लग्न तुला का नवमांश है और लग्न पर सूर्य तथा बुध की दृष्टि है। उस दिन पंचांग के अनुसार स्प० ५।२।५६।४० तथा स्प० ५।२६।१०।३५ है। सूर्य मकर के नवमांश में तथा बुध सिंह के नवमांश में है। इस प्रकार दोनों ग्रह दूसरे के नवांश में होने के कारण प्रश्नकर्ता के मन में मूल चिन्ता कहनी चाहिए।

योग-संख्या ४ के उदाहरण
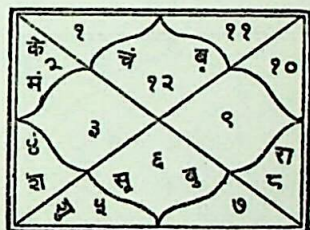
२८ सितम्बर, १९७५ रविवार को प्रातः तुला लग्न में किसी ने प्रश्न किया। उस समय स्पष्ट लग्न=६।१०।१५।४२ थी। तात्कालिक प्रश्न कुण्डली इस प्रकार बनी—

यहाँ प्रश्न लग्न में तुला (विषम) राशि में ४था नवांश है। अतः धातु चिन्ता कहनी चाहिए।

इसी दिन मध्याह्न धनु लग्न में प्रश्न किया गया। उस समय स्पष्ट लग्न = ८।१५।१०।५१ थी। उस समय की प्रश्न कुण्डली निम्नलिखित है—

इस कुण्डली में लग्न में विषम राशि (धनु) में ५वाँ नवमांश है। अतः पृच्छक के मन में मूल चिन्ता बतलानी चाहिये।
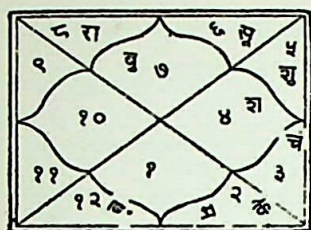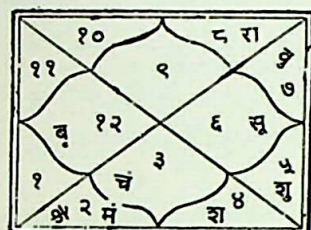
इस दिन अपराह्न में मकर लग्न में भी प्रश्न किया गया। उस समय स्पष्ट लग्न = ९।२।५५।४० थी। तत्कालीन प्रश्न कुण्डली निम्नलिखित है—

इस उदाहरण में प्रश्न लग्न में सम (मकर) राशि में प्रथम नवमांश है। अतः नियमानुसार प्रश्नकर्ता के मन में जीव-विषयक चिन्ता होनी चाहिये।
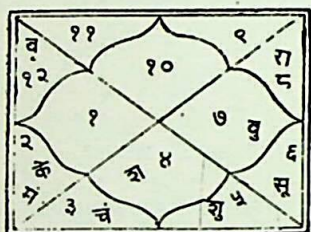
योग-संख्या ५ का उदाहरण

१५ नवम्बर, १९७५ शनिवार को सायं मीन लग्न में किसी ने प्रश्न किया। तात्कालिक प्रश्न कुण्डली इस प्रकार बनी—

इस कुण्डली में अन्य ग्रहों की तुलना में गुरु बलवान् है। अतः योग संख्या ५ के अनुसार सर्वाधिक बलवान् ग्रह गुरु होने के कारण इस समय प्रश्नकर्ता के मन में जीवविषयक चिन्ता बतलानी चाहिए।

मेष राशियों द्वारा धातु, मूल एवं जीव विचार

यदि प्रश्न लग्न में मेष राशि हो तो जीव चिन्ता होती है। इस लग्न में मुख्यतः नौकर-चाकर या पालतू पशु के विषय में जिज्ञासा होती है।

यदि प्रश्न लग्न में **वृष राशि** हो तो जीव चिन्ता होती है। इस लग्न में प्रधानतया गाय, भैंस एवं बकरी आदि दुधारू पशु या बैल, भैंसा, हाथी, घोड़ा, खच्चर आदि उपयोगी पशुओं के बारे में प्रश्न होता है।

यदि प्रश्न लग्न में **मिथुन राशि** हो तो भी जीव चिन्ता होती है, किन्तु इस प्रश्न में प्रायः गर्भ, सन्तति या विवाह का प्रश्न होता है।

यदि प्रश्न लग्न में **कर्क राशि** हो तो धातु, मूल एवं जीव के बारे में मिला-जुला प्रश्न होता है। इस लग्न में आमतौर पर कारोबार, खेती या आजीविका से सम्बन्धित प्रश्न होता है।

यदि प्रश्न लग्न में **सिंह राशि** हो तो जीव चिन्ता कहनी चाहिये। इस लग्न में सिंह, चीता, भेड़िया आदि हिंसक जीव या चोर, डाकू, लुटेरे, तस्कर, पेशेवर बदमाश या अन्य असामाजिक तत्वों के बारे में चिन्ता होती है।

यदि प्रश्न लग्न में **कन्या राशि** हो तो जीव-विषयक प्रश्न होता है। इस प्रश्न में बहुधा, स्त्री, प्रेम, रोमांस, विवाह आदि

के बारे में प्रश्न होता है।

यदि प्रश्न लग्न में तुला राशि हो तो मिश्रित प्रश्न होता है। इस लग्न में व्यापार, उद्योग, मुद्रा, मुकद्दमा या धन-विषयक प्रश्न होता है।

यदि प्रश्न लग्न में वृश्चिक राशि हो तो जीव-विषयक प्रश्न होता है। इस लग्न में अधिकांशतया रोग एवं रोगी के विषय में चिन्ता होती है।

यदि प्रश्न लग्न में धनु राशि हो तो मिला-जुला प्रश्न होता है। इसमें शिकार, व्यापार, साहसिक कार्य या धन के बारे में चिन्ता होती है।

यदि प्रश्न लग्न में मकर राशि हो तो जीव चिन्ता होती है। इस लग्न में मुख्यतया शत्रु, विवाद, लड़ाई, मुकद्दमा या पुलिस केस के बारे में प्रश्न होता है।

यदि प्रश्न लग्न में कुम्भ राशि हो तो मूल चिन्ता होती है। इस लग्न में जमीन, मकान, खेती या बाग आदि के बारे में प्रश्न होता है।

यदि प्रश्न लग्न में मीन राशि हो तो मूल चिन्ता होती है। इस लग्न में वन, जंगली उद्योग, इमारती लकड़ी का कार्य, फल एवं बागवानी का प्रश्न होता है।

अध्याय ३

धातु विचार

समस्त खनिज, रसायन, रत्न एवं धातुओं का विचार इस वर्ग में किया जाता है। धातु दो प्रकार की होती है। (१) धाम्य एवं (२) अधाम्य। धाम्य से तात्पर्य उन धातुओं से है, जो अग्नि में डालकर पिघलाई जा सकें तथा अधाम्य धातु उसे कहते हैं, जो अग्नि में डालने पर नहीं पिघलते। सोना, चाँदी, तांबा एवं लोहा आदि धाम्य धातु कहलाते हैं तथा पत्थर, रत्न, खनिज एवं कुछ रसायन अधाम्य धातु कहे जाते हैं। यदि धातु प्रश्न कारक ग्रह उच्च आदि राशि में हो तो धाम्य धातु और यदि नीच आदि राशि हो तो अधाम्य धातु के बारे में प्रश्न होता है।

धातुओं के भेद

धाम्य धातु दो प्रकार की होती है—१. घटित और २. अघटित। सोना, चाँदी, लोहा से बनी चीजों को घटित धातु कहते हैं और जब इनसे कोई चीज नहीं बनाते अर्थात् ये अपने प्राकृतिक रूप में रहती है तो इन्हें अघटित कहते हैं। बलवान् ग्रह घटित का और निर्बल ग्रह अघटित धातु का प्रतिनिधि होता है।

घटित धातु चार प्रकार की होती है—१. आभूषण, २. वर्तन, ३. सिक्के (मुद्रा) ४. घरेलू या अन्य उपयोग में आने वाली वस्तुएँ। घटित धातु का निश्चय करने से पूर्व धाम्य धातु के प्रमुख भेदों का निश्चय करना आवश्यक होता है। यह सामान्यतया आठ प्रकार की होती है—१. सोना, २. चाँदी, ३. तांबा,

४. रांगा, ५. कांसा, ६. लोहा, ७. सीसा और ८. पीतल।

इन धातुओं के प्रतिनिधि ग्रह इस प्रकार से बतलाये गये हैं—सोने का सूर्य, चाँदी का शुक्र, ताँबे का मंगल, रांग का बुध, कांसे का चन्द्रमा, लोहे का शनि, सीसे का राहु और पीतल का गुरु प्रतिनिधि होता है।

किस धातु के बारे में प्रश्न है ?

यदि मंगल लग्नेश हो, अपनी राशि में स्थित हो तो तांबे की चिन्ता; बुध लग्न में हो या अपनी राशि में हो तो रांगे की चिंता; गुरु लग्न में हो या अपनी राशि में हो तो पीतल की चिन्ता, शुक्र लग्न में या स्वराशि में हो तो चाँदी की चिन्ता, चन्द्रमा लग्न या स्वराशि में हो तो कांसे की चिन्ता और शनि या राहु लग्न में या स्वराशि में हों तो लोहे की चिन्ता होती है।

प्रश्नशास्त्र के कुछ आचार्यों का मत है कि यदि शुक्र या चन्द्रमा लग्न में स्थित हो या लग्न को देखते हों तो चाँदी की चिन्ता; बुध लग्न में बैठा हो या उसे देखता हो तो सोने की चिन्ता, गुरु लग्न में बैठा हो या देखता हो तो रत्नजटित स्वर्ण की चिन्ता, मंगल लग्न में बैठा हो या उसे देखता हो तो सीसे की चिन्ता, शनि लग्न में बैठा हो या उसे देखता हो तो लोहे की चिन्ता और राहु लग्न में बैठा हो या लग्न को देखता हो तो हड्डी (हाथी दाँत आदि) की चिन्ता होती है।

यदि प्रश्न कुण्डली में उक्त योग न घटते हों तो इस प्रकार धातु का निश्चय करना चाहिये—यदि लग्नेश सूर्य हो तो ताँबे की चिन्ता, चन्द्रमा लग्नेश हो तो मणि की चिन्ता, मंगल लग्नेश हो तो सोने की चिन्ता, बुध लग्नेश हो तो कांसे की चिन्ता, गुरु लग्नेश हो तो सोने की चिन्ता, शुक्र लग्नेश हो तो चाँदी की चिन्ता, शनि लग्नेश हो तो लोहे की चिन्ता होती है।

अधाम्य धातु

अधाम्य धातु का निश्चय हो जाने पर उसके भेदों का विचार करना चाहिये। अधाम्य धातु आठ प्रकार की होती है—१. मोती, २. पत्थर, ३. रसायन, ४. मणि, ५. खनिज, ६. शिला, ७. शर्करा (बालू) एवं ८. स्फटिक।

प्रश्न कुण्डली में यदि सिंह राशि हो और सूर्य उसमें बैठा हो तो शिला (मनःशिला) की चिन्ता, कन्या राशि में बुध हो तो मृत्पात्र की चिन्ता, वृष या तुला राशि में, शुक्र हो तो मोती और स्फटिक की चिन्ता, मेष या वृश्चिक लग्न में मंगल बैठा हो तो मूंगा की चिन्ता, मकर या कुम्भ-लग्न में शनि हो तो लोहे की चिन्ता और धनु या मीन राशि में गुरु हो तो मनःशिला की चिन्ता होती है।

यदि प्रश्न लग्न में बलवान् शनि बैठा हो तो नीलम की चिन्ता, बलवान् शुक्र हो तो वैडूर्य की चिन्ता, बलवान् बुध हो तो पन्ना की चिन्ता, बलवान् सूर्य हो तो सूर्यकान्त मणि की चिन्ता, बलवान् चन्द्रमा हो तो चन्द्रकान्त मणि की चिन्ता होती है।

विविध रसायन

अधाम्य धातु के विचार के प्रसंग में विविध रसायनों का निश्चय इस प्रकार से करना चाहिये। यदि सिंह राशि में स्थित सूर्य लग्न या सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो सर्जक (Sodium), पोटाशक (Potassium), सविदक (Rubidium), और कीशक (Cacsium) की चिन्ता होती है। वृश्चिक राशि में स्थित मंगल की लग्न पर दृष्टि हो और शनि अपने मित्र का राशि में बैठा हो तो बेरिलम (Ber, lium), मग्नीशम (Magic sium), कालक (Calcium), बेरक (Barium), स्त्रंशक (Stron-trum), कदमक (Cadmium) एवं जस्ता (Zincum) की

चिन्ता होती है। बुध लग्नेश हो, मित्र राशि में बैठा हो या लग्न को त्रिपाद दृष्टि से देखता हो तथा अन्य ग्रह केन्द्र एवं त्रिकोण में हों तथा व्यय भाव में कोई ग्रह न हो तो पारद (Mercury), स्कन्दक (Scandium), इत्रिक (Worium) गलक (Gaullium), इन्दुक (Indium), थल्लक (Thallium), तितानक (Titanium), शिर्कनक (Zirconium), सीरक (Cerium) एवं वदनक (Vanadium) की चिन्ता होती है। गुरु लग्न में हो, बुध लग्नेश हो, शनि तृतीय भाव में हो और सूर्य सिंह राशि में हो तो जर्मनक (Germanium), रंग (Slannium), सीसा (Lead), नवक (Niobium), आर्सेनिक (Arsenicum), क्रान्तमनि (Stibium), विषमिथ (Bismiuth), क्रोमक (Chromeum), मोलिदक (Molybdenum), तुगंस्तक (Tungestem) एवं वारुणक (Vranium) की चिन्ता होती है। शनि स्वराशि के लग्न में, बुध मकर में, शुक्र कुम्भ या वृष में हो चतुर्थ और पंचम स्थान में कोई ग्रह न हो तो मंगनक (Manganese), कोबाल्ट (Cobalt), निकेल (Nickel), स्थीनक (Ruthnium) पल्लदक (Palladium), अश्मक (Osmium), इरिदक (Iridium), प्लातिनक (Platium) और हेलक (Helium), की चिन्ता होती हैं। लग्न में केतु, धनु में राहु, नवम में गुरु और ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो नमक (Salt), क्षार (Sodiums), और बुनसेन (Bunsen) की चिन्ता होती है।

आभूषण, बर्तन, मुद्रा एवं अन्य धातुओं से बनी वस्तु

आभूषण, बर्तन, मुद्रा (सिक्के) एवं दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाली अन्य वस्तुएँ भी धातु से बनी होती हैं। आभूषण भी तीन प्रकार के होते हैं—१. देवताओं के आभूषण २. पशु-पक्षियों के आभूषण और मनुष्यों के आभूषण। प्रश्नलग्नानुसार घटित-धातु के विविध भेदों का विचार इस प्रकार होता है—

यदि प्रश्न लग्न में मिथुन, कन्या तुला एवं धनु राशियाँ हों और उनपर पुरुष ग्रहों की दृष्टि हो तो मनुष्यों के आभूषण की चिन्ता होती है। यदि प्रश्न काल में सूर्य, मंगल और गुरु बलवान् हों तो पुरुषों के आभूषण और चन्द्र, बुध, शुक्र या शनि बलवान् हों तो स्त्रियों के आभूषण कहने चाहिये। प्रथम चक्रार्ध में बलवान् ग्रह हों और द्वितीय चक्रार्ध में हीन बली ग्रह हों तो मनुष्यों के आभूषण, इसी योग में पंचम, अष्टम और नवम शुद्ध होने पर देवताओं के आभूषण और लग्न, चतुर्थ षष्ठ तथा दशम शुद्ध होने पर पशु-पक्षियों के आभूषण की चिन्ता कहनी चाहिए।

आभूषणों के विविध भेद

मनुष्यों के आभूषणों के भी सामान्यतया ८ भेद माने गये हैं—(१) शिरसाभरण, (२) कर्णाभरण, (३) नासिकाभरण, (४) ग्रीवाभरण, (५) कण्ठाभरण, (६) हस्ताभरण, (७) कटि के आभरण और (८) पैर के आभूषण। मुकुट, किरीट, खौर, सीसफूल, बेंना एवं झूमर आदि शिरसाभरण होते हैं। कुण्डल, एरिंग (बुन्दे), टॉप्स, कनफूल एवं झुमका आदि कर्णाभरण होते हैं। लौंग, नथ एवं बाली आदि नासिकाभरण, कण्ठी, जंजीर, लॉकेट एवं हार आदि कण्ठाभरण, हँसली एवं तोड़ा आदि ग्रीवाभरण, कंगन, दस्ताने, चूड़ी एवं अंगूठी आदि हस्ताभरण, करधनी (मेखला) एवं क्षुद्र घण्टिका आदि कटयाभरण तथा बिछुए, पायजेब एवं कड़े आदि पादाभरण कहलाते हैं। प्रश्न लग्न के अनुसार इन विविध आभूषणों का विचार निम्नलिखित रीति से किया जाता है।

प्रश्न कुण्डली में यदि शुक्र लग्न में हो या लग्न को देखता हो तो शिरसाभरण, शनि लग्न में हो या उसे देखता हो तो कर्णाभरण, सूर्य लग्न में हो या उसे देखता हो तो नासिकाभरण चन्द्रमा लग्न में हो या उसे देखता हो तो ग्रीवाभरण, गुरु लग्न में

हो या उसे देखता हो तो हस्ताभरण, मंगल लग्न में हो या उसे देखता हो तो पैर के आभूषणों की चिन्ता होती है।

यदि मिथुन लग्न में बुध, द्वितीय में शुक्र, चतुर्थ में मंगल, पंचम में शनि और बारहवें में केतु हो तो हार, कण्ठा, हँसुली आदि की चिन्ता होती है। कन्या लग्न में बुध, वृश्चिक में शुक्र, मकर में शनि, धनु में चन्द्रमा और व्यय भाव में राहु हो तो पायजेब, नूपुर, छल्ला, बिछुआ आदि पैर के आभूषणों की चिन्ता होती है। तुला लग्न में शुक्र, मिथुन में बुध, वृश्चिक में केतु हो तो कर्णफूल, एरिंग, बाली आदि कान के आभूषणों की चिन्ता होती है।। धनु लग्न में बुध, मिथुन में गुरु, मेष में सूर्य और कर्क में चन्द्रमा हो, किन्तु दशम स्थान में कोई ग्रह न हो तो कंगन, दस्ती, चूड़ी या अंगूठी की चिन्ता होती है। प्रश्न लग्न में सिंह राशि में सूर्य, चन्द्र और मंगल एक साथ हों, पंचम में शुक्र और मित्र राशि में शनि में हों तथा बुध लग्न को देखता हो तो हीरा आदि मणियों के आभूषण की चिन्ता होती है। आभूषणों का विचार करते समय ग्रहों के बलाबल के अनुसार उनके वजन और मूल्य का निश्चय करना चाहिये।

मूल-विचार

मूल पाँच प्रकार के होते हैं—(१) वृक्ष, (२) गुल्म, (३) लता, (४) वल्ली और कन्द। बरगद, नीम, शीशम, अशोक, आम, जामुन आदि वृक्ष कहे जाते हैं। बेर, कनेर, करील, कुन्द, नींबू, सन्तरा, केला आदि के छोटे पेड़ और झाड़ियाँ गुल्म कहलाते हैं। लौकी, कूष्माण्ड खरबूजा, तरबूजा, तुरई आदि की बेलों को लता कहते हैं। कुश, गेहूँ, चना, धान, मटर, मूँग आदि के पौधे वल्ली कहलाते हैं तथा आलू, अरवी, हल्दी, सकरकन्द, जिमीकन्द, अदरख, मूली, गाजर, शलजम आदि को कन्द कहते हैं। तात्पर्य यह है कि बड़े और सघन पेड़ों को वृक्ष छोटे पेड़ और

झाड़ियों को गुल्म, बेलों को लता, पौधों को वल्भी और जमीन के अन्दर फल लगने वाले पौधों को कन्द कहते हैं।

हमारे दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले अधिकांश पदार्थ मूल वर्ग में आते हैं। इन सबका विस्तार से विवेचन करना इस लघुकाय पुस्तक में सम्भव नहीं है। फिर भी उदाहरण के तौर पर हम इस वर्ग के कुछ पदार्थों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, जिनका सम्बन्ध हमारी रोजमर्रा की आवश्यकता, व्यापार और हमारे देश की आर्थिक स्थिति से रहता है। जैसे—आम, जामुन, नारियल आदि फलों के पेड़, इमारती लकड़ी के पेड़ तथा गोंद, विरोजा एवं तारपीन आदि वृक्ष वर्ग के महत्त्वपूर्ण पदार्थ हैं। केला, सन्तरा, नींबू आदि फल, रबड़, चाय, कहवा एवं काफी आदि गुल्म वर्ग के महत्त्वपूर्ण पदार्थ हैं। लौकी, सीताफल (कूष्माण्ड) एवं तोरई आदि सब्जियाँ, तरबूजा एवं ककड़ी जैसे फल तथा विभिन्न औषधियाँ लताएँ इस वर्ग के महत्त्वपूर्ण पदार्थ हैं। गेहूँ, धान, मक्का, बाजरा आदि सभी अनाज, ईख, कपास, तिलहन, सन, जूट, धनिया, जीरा एवं मिर्च आदि मसाले वल्ली वर्ग में आते हैं। यह वर्ग मूलों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। कन्द वर्ग में आलू, अरवी, गाजर, मूली, सकरकन्द आदि सब्जियाँ हल्दी एवं सोंठ जैसे मसाले एवं कन्दमूल जैसे फल दैनिक भोजन के उपयोगी पदार्थ हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि समस्त फल, सब्जियाँ, अनाज, दालें, मसाले, तिलहन, गुड़-चीनी, रबड़, चाय, कपास, जूट, औषधियाँ, इमारती लकड़ी, गोंद, विरोजा, मेवा, ताड़ी, एवं समस्त प्राकृतिक, वनस्पति और वन सम्पत्ति का प्रतिनिधि यह वर्ग है। अतः मूल वर्ग का मूक प्रश्न निश्चित हो जाने पर इसके भेदों का सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिये। क्योंकि अधिकांश व्यापार, कार्य एवं उद्योगों में इस वर्ग के पदार्थों का प्रयोग

होता है। अतः मूक प्रश्न भी अधिकांशतया इस वर्ग से सम्बन्धित होता है।

वृक्ष, गुल्म, लता आदि के भी ५ अंग या भेद होते हैं—(१) छाल, (२) पत्ते, (३) पुष्प, (४) फल एवं (५) गूदा।

छाल दो प्रकार की होती है कोमल और कठोर। इसी प्रकार पत्ते स्निग्ध (चिकने) और शुष्क; पुष्प सुगन्धित और दुर्गन्धित, फल भक्ष्य (खाने योग्य) और अभक्ष्य तथा गूदा भी सरस और रसहीन के भेद से दो प्रकार का होता है।

मूल के विविध भेदों का ज्ञान

प्रश्न कुण्डली में मंगल बलवान् हो तो क्षुद्र धान्यों की चिन्ता, बुध और गुरु बलवान् हों तो अनाजों की चिन्ता; चन्द्रमा बलवान् हो तो लता की चिन्ता; सूर्य बलवान् हो तो वृक्षों की चिन्ता; गुरु लग्नेश हो तो ईख (गन्ना) की चिन्ता; शुक्र लग्नेश हो तो इमली की चिन्ता; शनि बलवान् हो तो देवदारु आदि इमारती लकड़ी की चिन्ता; राहु बलवान् हो तो तीखे या काँटेदार वृक्ष की चिन्ता और शनि लग्नेश हो तो फलों की चिन्ता होती है।

प्रश्न लग्न में मेष या वृश्चिक राशि हो तो क्षुद्र धान्य की चिन्ता; वृष, कर्क या तुला राशि हो तो लता (औषधियों) की चिन्ता; मिथुन या कन्या लग्न हो तो वृक्षों की चिन्ता, मकर या कुम्भ राशि हो तो काँटेदार वृक्षों की चिन्ता। सिंह, धनु और मीन राशि हों तो गेहूँ, धान एवं ईख की चिन्ता होती है।

यदि बुध लग्नेश हो और वह अपनी शत्रु राशि में स्थित हो अथवा लग्न को देखता हो तो सुन्दर और फलदार वृक्षों की चिन्ता होती है। यदि शुक्र लग्नेश होकर मित्र राशि में हो अथवा लग्न को देखता हो तो नींबू, सन्तरा, मौसमी, अनानास आदि के वृक्षों की चिन्ता होती है, यदि चन्द्रमा लग्नेश हो, वह शत्रु

भाव में स्थित ग्रहों से दृष्ट हो अथवा लग्न या स्वराशि को देखता हो तो केला, कपास एवं मूँगफली के विषय में प्रश्न होता है। गुरु लग्नेश से दृष्ट होकर प्रश्न लग्न में हो शुभ ग्रह शत्रु राशि में और पाप ग्रह मित्र राशियों में हों तो नारियल, जूट या तिलहन की चिन्ता होती है। शनि स्वराशि में लग्नेश से दृष्ट हो और लग्न भी मित्र राशि में स्थित हो तो ताल, खजूर, रबड़ आदि की चिन्ता होती है। राहु, मीन या मेष राशि में हो और लग्नेश मकर राशि में हो तो चाय, कॉफी, भांग, गांजा एवं अफीम आदि की चिन्ता होती है। मंगल लग्नेश हो तथा मेष या वृष राशि में स्थित ग्रह से दृष्ट हो तो मूँगफली बिनौला या धान के तेल की चिन्ता होती है।

पहले कहा जा चुका है कि अनाज, तिलहन, कपास, जूट एवं ईख आदि वल्ली वर्ग में आते हैं। प्रश्न लग्न के अनुसार इस वर्ग का निश्चय हो जाने पर ग्रह एवं उनकी राशि द्वारा उनके सूक्ष्म भेद का विचार कर लेना चाहिए। सूर्य मटर, मसूड़ एवं मसालों का, चन्द्रमा धान, तिल, कपास, मूँगफली एवं बिनौला का, मंगल चना, अलसी, सरसों एवं मिर्च का, मूंग जूट एवं वनस्पति का, गुरु अरहर, हल्दी, ईख (गन्ना) एवं गेहूँ का, शुक्र मक्का, कपास एवं सब्जियों का, शनि उड़द, ज्वार, बाजरा, तिल एवं सन का, राहु कुलथी, सवाँ, चावल एवं अन्य कुधान्यों का प्रतिनिधि ग्रह होता है। इस प्रकार ग्रहों के आधार पर अनाज तिलहन एवं दाल आदि के भेदों का निश्चय किया जा सकता है।

यदि सूर्य सिंह राशि में हो तो त्वक् चिन्ता, चन्द्रमा कर्क राशि में हो तो मूल चिन्ता, मंगल मेष राशि में हो तो पुष्प चिन्ता बुध मिथुन में हो तो छाल की चिन्ता, गुरु धनु राशि में हो तो फल की चिन्ता, शुक्र वृष राशि में हो तो सरस फल की चिन्ता, शनि

मकर राशि में हो तो वृक्ष चिन्ता और राहु मिथुन राशि में हो तो लता चिन्ता कहनी चाहिये। यदि सूर्य उच्च राशि में हो तथा तीसरे भाव में स्थित ग्रह से दृष्ट हो तो शीशम आदि इमारती लकड़ी के वृक्षों की चिन्ता, चन्द्रमा उच्च राशि में हो तथा पाँचवें भाव में स्थित ग्रह से दृष्ट हो तो फल एवं मेवों की चिन्ता, मंगल उच्च राशि में हो और लग्नस्थ ग्रह से दृष्ट हो तो अनाज की चिन्ता, बुध उच्च राशि में हो और चतुर्थ स्थान में स्थित ग्रह से दृष्ट हो, तो सब्जी एवं वनस्पतियों की चिन्ता, गुरु उच्च राशि में हो तथा सप्तम भाव में बैठे ग्रह से दृष्ट हो तो तिलहन या दालों की चिन्ता, शुक्र उच्च राशि में हो और दशम भाव में स्थित ग्रह से दृष्ट हो तो रबड़, कपास या जूट की चिन्ता और शनि उच्च राशि में हो तथा लाभ स्थान में स्थित ग्रह से दृष्ट हो तो चाय, भांग एवं अफीम आदि की चिन्ता कहनी चाहिये।

मूल वर्ग के उपर्युक्त विवेचन का प्रयोग न केवल मूक प्रश्न के विचार में ही किया जाता है। अपितु इसके आधार पर हम खेती-बागवानी सफलता या असफलता का, उपज या फसल का और विभिन्न चीजों के व्यापार का निर्णय भी आसानी से कर सकते हैं।

जीवों के विविध भेद

सामान्यतया जीव चार प्रकार के होते हैं—(१) द्विपद, (२) चतुष्पद, (३) बहुपद एवं (४) अपद।

द्विपद से तात्पर्य दो पैर वाले जीवों से है। दो पैर वाले जीव—देव, मनुष्य, पक्षी और राक्षस हैं। धुलोक वासी, पाताल वासी एवं भूलोक वासी इस भेद से देव तीन प्रकार के होते हैं। मनुष्यों की ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं अन्त्यज जातियाँ होती हैं। इनकी बाल, कुमार, युवा, प्रौढ़ एवं वृद्ध पाँच अवस्थाएँ

तथा स्त्री-एवं पुरुष दो योनियाँ होती हैं। पक्षी जलचर और थलचर के भेद से दो प्रकार के होते हैं। सारस, बत्तख, बगुला आदि जलचर तथा तोता, मैना, कबूतर, मोर, हंस, कौआ एवं उल्लू आदि थलचर पक्षी होते हैं। राक्षसों के भी दो भेद हैं—१. कर्मज और २. योनिज। भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी एवं ब्रह्म आदि कर्मज राक्षस होते हैं और असुर, दैत्य, दानव आदि योनिज राक्षस माने गये हैं।

चार पैर वाले पशुओं को चतुष्पद कहते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं—(१) खुरी, (२) नखी, (३) दन्ता और (४) श्रृंगी। खुर वाले पशुओं को खुरी कहते हैं। ग्राम्चर और वनचर इनके २ भेद हैं। गाय, भैंस, बैल, घोड़ा, गधा एवं बकरी आदि खुर वाले पशु ग्रामचर कहलाते हैं। हिरन, रीछ एवं खरगोश आदि वनचर कहे जाते हैं। नखी योनि के भी ग्रामचर एवं अरण्यचर ये दो भेद होते हैं। जिनके पैर में तीखे नाखून होते हैं, उन्हें नखी कहते हैं। कुत्ता, बिल्ली आदि ग्रामचर नखी और व्याघ्र, चीता, सिंह, भालू, गीदड़ एवं लोमड़ी आदि वनचर नखी होते हैं। दन्ती योनि के भी २ भेद होते हैं—ग्रामचर और अरण्यचर। पालतू सूअर, ऊँट एवं बन्दर आदि ग्रामचर तथा हाथी, जंगली सूअर एवं लंगूर आदि वनचर दन्ती कहलाते हैं। श्रृंगी योनी भी ग्रामचर और वनचर के भेद से २ प्रकार की होती है। गाय, बैल, भैंस एवं बकरी आदि सींग वाले पशु ग्रामचर और हरिण, कृष्णसार, बारहसिंघा आदि वनचर श्रृंगी कहे जाते हैं।

अपद से तात्पर्य उन जीवों से है जिनके पैर नहीं होते। ये भी दो प्रकार के होते हैं—जलचर और थलचर। शंख, सीपी एवं मछली आदि जलचर श्रेणी में तथा साँप, कीड़ा, दुमुही एवं मेंढक आदि थलचर श्रेणी में आते हैं। बहुपद जीव वे कहलाते हैं

जिनके कई पैर होते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—अण्डज और स्वेदज। भ्रमर (भौंरा) पतंगा, मच्छर एवं कछुआ आदि अण्डज और खटमल, जूँ आदि को स्वेदज कहते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समस्त, पशु, पक्षी, कीट-पतंग, सरीसृप, जलचर, मनुष्य, राक्षस एवं देव आदि जीव वर्ग में आते हैं। जन्म और मृत्यु के अवश्यम्भावी क्रम से बँधा हुआ प्रत्येक प्राणी जीव कहलाता है।

जीव-विचार

जीव सम्बन्धी प्रश्न का निश्चय हो जाने पर किस प्रकार के जीव के बारे में प्रश्न है ? इसका निश्चय करना चाहिये। प्रश्न शास्त्र में मेष, वृष और धनु राशियाँ चतुष्पद; मिथुन, कन्या, तुला और कुम्भ राशियाँ द्विपद, कर्क एवं वृश्चिक बहुपद तथ मकर और मीन अपद संज्ञक होती हैं। ग्रहों में गुरु और शुक्र द्विपद संज्ञक; सूर्य और मंगल चतुष्पद; शनि और बुध बहुपद संज्ञक तथा चन्द्रमा और राहु अपद संज्ञक कहे गये हैं। प्रश्न लग्न में जो राशि हो तथा जिस प्रकार का ग्रह लग्न में बैठा हो या देखता हो; उस प्रकार के जीव का निश्चय कर लेना चाहिये। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिये कि यदि लग्न स्वयं बलवान् हो तो लग्न की राशि के द्वारा और निर्बल हो तो ग्रह के द्वारा जीव का निश्चय करना चाहिये।

मिथुन, कन्या, तुला एवं कुम्भ ये चार राशियाँ द्विपद संज्ञक होती हैं : इनमें से मिथुन मनुष्य संज्ञक, कन्या पक्षी संज्ञक, तुला राक्षस संज्ञक और कुम्भ देव संज्ञक होती हैं। कुछ आचार्यों का मत है कि ये सभी राशियाँ देव आदि सभी द्विपद जीवों की प्रतिनिधि होती हैं। देव, मनुष्य, राक्षस आदि का भेद इनके बल के अनुसार विचार लेना चाहिये। यदि प्रश्न लग्न में उक्त राशियाँ हों तो द्विपद जीव की चिन्ता होती है। यदि राशि पूर्ण बली हो

तो देव-चिन्ता, मध्य वली हो तो मनुष्य-विषयक अल्प बली हो तो राक्षस-विषयक और निर्बल हो तो पक्षी-विषयक चिन्ता होती है।

ब्राह्मण आदि वर्ण का निश्चय

मनुष्य योनि अवगत हो जाने पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, आदि वर्ण विशेष का ज्ञान इस प्रकार करना चाहिये। यदि गुरु और शुक्र बलवान् होकर लग्न को देखते हों या लग्न में स्थित हों तो ब्राह्मण के बारे में प्रश्न होता है। यदि सूर्य और मंगल बलवान् होकर लग्न को देखते हों या लग्न में स्थित हों तो प्रश्न क्षत्रिय सम्बन्धित होता है। चन्द्रमा बलवान् होकर लग्न में स्थित हो या उसे देखता हो तो वैश्य के बारे में प्रश्न होता है। शनि बलवान् होकर लग्न में स्थित हो या उसे देखता हो तो शूद्र के बारे में तथा राहु बलवान् होकर लग्न में बैठा हो या उसे देखता हो तो अन्त्यज के बारे में प्रश्न होता है।

राजा, मन्त्री आदि का ज्ञान

सूर्य अपनी उच्च राशि में लग्न में हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो राजा, केवल उच्च राशि में हो तो राज्यपाल या प्रधान प्रशासक; स्वराशि में हो तो मन्त्री और मित्र राशि में स्थित हो तथा उसे मित्र ग्रह देखता हो तो सैनिक-अधिकारी के बारे में प्रश्न होता है। यदि सूर्य उक्त राशियों से भिन्न राशि में हो तो प्रश्न कांसे का कार्य करने वाले, शंख का काम करने वाले या कुम्हार आदि निम्न श्रेणी के व्यक्ति के बारे में होता है।

विभिन्न वर्ग के व्यक्तियों का ज्ञान

यदि प्रश्न लग्न में मनुष्य राशि हो और उसपर गुरु की दृष्टि हो तो ब्राह्मण, वह बुध से युक्त या दृष्ट हो तो तपस्वी; शुक्र से युक्त या दृष्ट हो श्रमिक, चन्द्र या राहु से युक्त अथवा दृष्ट हो तो वर्णशंकर और लग्न में मीन राशि का सूर्य हो तो घरेलू

नौकर के बारे में प्रश्न होता है।

प्रश्न लग्न में बलवान् चन्द्रमा हो तो वैद्य या डॉक्टर, बुध हो तो व्यापारी या तस्कर, राहु हो तो चाण्डाल, चोर, धीवर, माली, नट नर्तक, भाँड, बढ़ई, जुलाहा. धोबी एवं चमार के बारे में चिन्ता होती है। लग्न में शुक्र होने पर गोताखोर या मल्लाह जाति के व्यक्ति से सम्बन्धित प्रश्न होता है।

सूर्य राजा, चन्द्रमा तपस्वी, मंगल सुनार, बुध व्यापारी, गुरु बुद्धिजीवी, शुक्र वैश्य, शनि शूद्र या श्रमिक एवं राहु अन्त्यज या निषाद जाति का माना गया है। प्रश्न लग्न पर जिस ग्रह का प्रभाव हो उस जाति के व्यक्ति के बारे में प्रश्न होता है।

माता पिता भाई-बहिन एवं पति-पत्नी आदि सम्बन्धों का विचार

प्रश्न कुण्डली में सूर्य स्वराशि में हो तो अपनी (व्यक्तिगत) चिन्ता और अन्य राशि में हो तो माता-पिता की चिन्ता कहनी चाहिये। यदि चन्द्रमा स्वराशि में हो तो पुत्र-वधू आदि की और अन्य राशि में हो तो विदेश गये सम्बन्धी की चिन्ता होती है। मंगल स्वराशि में हो तो आश्रित जनों की तथा बुध स्वराशि में हो तो चाचा या सचिव की चिन्ता होती है। शुक्र स्वराशि में हो तो कुटुम्बियों की और शनि स्वराशि में हो तो पिता, चाचा, ताऊ आदि की चिन्ता होती है।

यदि प्रश्न लग्न में शुभ ग्रह बलवान् होकर स्थित हो तो अपनी जाति के मनुष्य की चिन्ता होती है। तृतीय भाव में हो तो भाई की, चतुर्थ भाव में हो तो मित्र की, पंचम भाव में हो तो पुत्र की, छठे भाव में हो तो शत्रु की, सप्तम भाव में हो तो स्त्री (पत्नी या प्रेमिका) की, आठवें स्थान में हो तो मृत पुरुष की, नवम भाव में हो तो गुरु या तपस्वी की, दशम भाव में हो तो पिता की, एकादश में हो तो बड़े भाई या पूज्य जनों और बारहवें

स्थान में हो तो अपने हितैषी की चिन्ता होती है।

यदि चन्द्रमा सूर्य की राशि में हो तो यति, तपस्वी या अपने गुरु की, स्वराशि में हो तो ब्राह्मण या पुरोहित की, मंगल की राशि में हो तो अपने से उच्चाधिकारी की, बुध की राशि में हो तो स्त्री की, गुरु की राशि में हो तो इष्ट मित्रों की, शुक्र की राशि में हो तो सेवक की और शनि की राशि में हो तो चोर आदि दुष्ट जनों की चिन्ता होती है।

स्त्री-पुरुष आदि का निश्चय

यदि प्रश्न लग्न में बलवान् सूर्य, मंगल या गुरु हो अथवा इन तीनों में से किसी एक की लग्न पर दृष्टि हो तो पुरुष के बारे में चिन्ता होती है। यदि लग्न में बलवान् बुध या शनि हों अथवा इनकी दृष्टि हो तो नपुंसक के बारे में प्रश्न होता है और यदि लग्न में बलवान् शुक्र या चन्द्रमा बैठा हो या इनमें से किसी एक की लग्न पर दृष्टि हो तो व्यक्ति स्त्री के बारे में प्रश्न करता है।

किस स्त्री की चिन्ता है ?

प्रश्न कालीन ग्रह सूर्य और शुक्र वक्री हों तथा इन दोनों में से कोई अस्त हो तो प्रश्नकर्ता के मन में परस्त्री की चिन्ता होती है। सप्तम भाव में बुध हो तो वेश्या की और इस स्थान में शनि हो तो नाईन, धोबिन, तेलिन आदि नीच वर्ण की चिन्ता होती है। इस स्थान में गुरु हो तो अपनी परणीता पत्नी की चिन्ता कहनी चाहिये। यदि इस स्थान में चन्द्रमा हो तो किसी सुन्दरी के बारे में प्रश्न होता है।

यदि प्रश्न लग्न में बाल्यावस्था का चन्द्रमा या बुध हो तो किसी कुमारी/कन्या की चिन्ता होती है। यदि इस स्थान में शनि हो तो वृद्धा की, सूर्य या गुरु हो तो प्रौढ़ा की और मंगल या शुक्र हो तो कठोर स्वभाव वाली स्त्री के सम्बन्ध में प्रश्न होता है।

स्त्री के रूप, रंग का निश्चय ग्रह के वर्ण आदि के अनुसार कर लेना चाहिये। स्त्री की आयु का निश्चय करने का आसान तरीका यह है—यदि लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो बालिका, द्वितीय द्रेष्काण हो तो युवती और तृतीय द्रेष्काण हो तो वृद्धा स्त्री कहनी चाहिये।

व्यक्ति की अवस्था का निश्चय

यदि बुध चतुर्थ स्थान का स्वामी हो और वह या तो इस भाव में बैठा हो या इसे देखता हो तो व्यक्ति बालक के बारे में पूछता है। यदि चन्द्रमा या शुक्र चतुर्थ स्थान का स्वामी हो तो इनमें से किसी एक ग्रह से चतुर्थ स्थान दृष्ट या युक्त हो तो किशोरावस्था के व्यक्ति के बारे में प्रश्न होता है। यदि मंगल चतुर्थेश हो और वह चतुर्थ स्थान में बैठा हो या देखता हो तो युवक के बारे में और सूर्य, गुरु, शनि या राहु में से कोई एक ग्रह चतुर्थेश हो और वह चतुर्थ स्थान में स्थित हो या देखता हो तो किसी वृद्ध के बारे में चिन्ता होती है।

कुछ आचार्यों ने ग्रहों की उम्र इस प्रकार बतलाई है। सूर्य की आयु ७० वर्ष, चन्द्रमा की ३ वर्ष, मंगल की ४ वर्ष, बुध की १२ वर्ष, गुरु की ५० वर्ष, शुक्र की ३२ वर्ष और शनि की आयु ७० वर्ष से अधिक होती है। प्रश्न लग्न पर सूर्यादि ग्रह की दृष्टि या लग्न अथवा लग्नेश के साथ सूर्य आदि ग्रहों के सम्बन्ध का विचार कर व्यक्ति की आयु का निर्णय कर लेना चाहिये।

जिस व्यक्ति के बारे में प्रश्न किया जा रहा है उसकी आयु कितनी है? इसका विचार **प्रश्न मार्ग** में किया गया है। इस प्रसंग में यह ध्यान रखना चाहिये कि जब व्यक्ति अपने बारे में प्रश्न न कर किसी अन्य के बारे में प्रश्न करता है, तब उसकी आयु का निश्चय इस प्रकार से करना चाहिये—यदि लग्नेश मंगल या

बाल चन्द्रमा हो तो आयु ५ वर्ष से कम, बुध हो तो ८ वर्ष से कम, शुक्र हो तो १६ वर्ष से कम, गुरु हो तो ३० वर्ष से कम, सूर्य हो तो ७० वर्ष से कम और यदि वृद्ध चन्द्र, शनि या राहु लग्नेश हो तो व्यक्ति की आयु ७० वर्ष से अधिक होती है।

आकृति, प्रकृति एवं व्यक्तित्व का निश्चय

प्रश्न लग्न का स्वामी जो ग्रह हो उसके अनुसार व्यक्ति की आकृति, प्रकृति एवं व्यक्तित्व का निर्णय करना चाहिये। कुछ आचार्यों का मत है कि लग्नेश और लग्न नवांशेश इन दोनों में जो ग्रह बलवान् हो, उसके अनुसार आकृति एवं प्रकृति आदि का निश्चय कर लेना चाहिये।

यदि सूर्य प्रश्न लग्न या उसके नवांश का स्वामी हो तो व्यक्ति का शरीर लम्बा-चौड़ा एवं पुष्ट, शहद के समान पीले नेत्र, पित्त-प्रकृति और छोटे बाल होते हैं। वह आत्मबली, स्वाभिमानी, चतुर, गम्भीर, साम्यवादी, इतिहास प्रेमी, क्रोधी या उग्र स्वभाव का होता है। किन्तु वह उदर रोग या हृदय रोग से पीड़ित होता है। क्रोध, प्रदर्शनकी भावना, स्वार्थ एवं स्वयं पर आवश्यकता से अधिक विश्वास की भावना उसे समय-समय पर कठिनाइयाँ उपस्थित करती हैं।

चन्द्रमा लग्न या लग्न के नवमांश का स्वामी हो तो व्यक्ति का शरीर एकहरा, आँखें सुन्दर, पतली आवाज और कफ प्रकृति होती है। ऐसा मनुष्य कल्पनाशील, सौन्दर्य प्रेमी, महत्त्वाकांक्षी, भावुक, प्रसन्न चित्त, प्रत्येक वातावरण में स्वयं को व्यवस्थित करने की क्षमता वाला, साहित्य-संगीत प्रेमी एवं रोमांटिक प्रवृत्ति वाला होता है। इसे मादक पदार्थों के सेवन की आदत मानसिक प्रान्दोलन, रसिकता, उपेक्षा, आरामप्रियता एवं रोमांस के प्रसंगों में कुछ कष्ट उठाना पड़ता है।

यदि मंगल प्रश्न लग्न या उसके नवमांश का स्वामी हो तो

मनुष्य उदार प्रकृति, कठोर स्वभाव, पित्त प्रकृति, युवावस्था एवं पतली कमर वाला होता है। उसका शारीरिक गठन सुदृढ़ होता है। ऐसा व्यक्ति क्रूर स्वभाव, साहसी, महत्त्वाकांक्षी, धैर्यवान्, हठी, नेतृत्व शक्ति सम्पन्न, कुलीन, कटु-सत्य भाषी, कार्य कुशल एवं संयोजन-शक्ति में प्रवीण होता है। किन्तु वह रक्त विकार या चोट से पीड़ित होता है। प्रत्येक कार्य में विरोध या विलम्ब से परेशान रहता है। उसके शत्रु सदैव रहते हैं और वे प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से बाधाएँ उपस्थित करते हैं।

यदि बुध प्रश्न लग्न या उसके नवांश का स्वामी हो तो मनुष्य वाक्पटु, हँसमुख, वातपित्त, प्रकृति एवं चुस्त-चालाक होता है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान्, विचारक, व्यवहार कुशल और स्वयं को किसी भी वातावरण में व्यवस्थित करने की क्षमता रखता है। वह अपने लाभ और हित का सदैव ध्यान रखता है और इनकी पूर्ति के प्रयासों को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। किन्तु ऐसे लोग प्रायः बुद्धि भ्रम, शंका एवं परिवर्तन की इच्छा के कारण परेशान रहते हैं। वहुधा ये लोग शंकालु होते हैं। इन्हें पेट की गड़बड़ी, सिर दर्द एवं कमजोरी जैसे रोग रहते हैं। कभी-कभी ये मानसिक रोगों या वहम से भी कष्ट पाते हैं।

यदि गुरु लग्न या उसके नवम्रांश का स्वामी हो तो व्यक्ति स्थूल शरीर, पीले या छोटे नेत्र वाला, कफ प्रकृति एवं धर्मबुद्धि होता है। वह सम्मान, गौरव और आत्म-विश्वास की भावना के साथ समाज सेवा में तत्पर होता है। किन्तु ऐसे लोग भावुकता, जल्दबाजी, लोकापवाद एवं खर्चीलेपन से परेशान रहते हैं। ये मिष्ठान प्रेमी और शान्तिप्रिय जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं। धर्म, दर्शन, विधि (कानून), इतिहास एवं समाज शास्त्र जैसे विषयों में भी इनकी अभिरुचि होती है।

यदि शुक्र लग्न या उसके नवांश का स्वामी हो तो मनुष्य

सुन्दर, तीखे नाक-नक्श वाला, स्वस्थ, इकहरा शरीर, कफ प्रकृति और घुंघराले बालों वाला होता है। ऐसा व्यक्ति रीति-नीति, राजनीति, व्यवहार एवं अपनी व्यावसायिक गतिविधियों में संलग्न रहने के साथ-साथ सौन्दर्य, संगीत या कला के किसी न किसी प्रकार का अनुराग रखता है। वह प्रेम, रोमांस या साहित्यिक गतिविधियों में तत्पर होता है। इन लोगों के पारिवारिक या दाम्पत्य-जीवन में अनेक बार गतिरोध या मतभेद उत्पन्न होते हैं। इन लोगों को वीर्य विकार, प्रमेह, पथरी एवं अन्य गुप्त रोग का शिकार देखा गया है।

यदि शनि लग्न या उसके नवांश का स्वामी हो तो व्यक्ति आलसी, कृश शरीर, लम्बा कद, मोटे दाँत और वात प्रकृति वाला होता है। इन लोगों में स्वाभिमान एवं अहं की भावना के साथ-साथ दृढ़ निश्चय की प्रवृत्ति पाई जाती है। किन्तु ऐसे लोग प्रमाद, आलस्य या जिद्दीपन के द्वारा व्यर्थ की परेशानियों में पड़ जाते हैं। इन लोगों को कमजोरी, वायु-विकार एवं दर्द की शिकायत परेशान करती है।

राहु एवं केतु जब लग्नेश या उसके नवांशेश के साथ होते हैं और उससे अधिक बलवान् होते हैं, तब ये व्यक्ति की प्रकृति एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। राहु के प्रभाववश मनुष्य कल्पनाशील, महत्त्वाकांक्षी एवं जल्दबाज होता है। शरीर तथा स्वास्थ्य औसतन रहता है। केतु का प्रभाव होने पर व्यक्ति चंचल प्रकृति और कठोर हृदय होता है। वह किसी भी क्षण कोई भी निर्णय कर सकता है। ऐसे लोगों को पेट की गड़बड़ी और जोड़ों में दर्द रहता है।

राक्षस योनि विचार

ज्योतिष शास्त्र में निकृष्ट देवों को राक्षस कहा गया है। भूत, प्रेत, पिशाच एवं ब्रह्म आदि सब राक्षस माने जाते हैं। राक्षस

और उसकी बाधा के वारे में प्रश्न तब किया जाता है, जब प्रश्न कुण्डली में निम्नलिखित कोई एक योग हो—

(१) लग्नेश मंगल हो और वह सप्तम भाव में रहने वाले सूर्य और बुध से इत्थशाल करता हो, तो राक्षसों की चिन्ता होती है।

(२) यदि शनि लग्नेश होकर सप्तमेश शुक्र और सप्तम भावस्थ गुरु के साथ कम्बूलयोग करता हो तो राक्षसों की बाधा का प्रश्न होता है।

(३) राहु और केतु हीन बली हों और गुरु का सूर्य के साथ मणऊयोग हो तो भी राक्षस-मृतात्मा के सम्बन्ध में प्रश्न होता है।

पक्षी योनि विचार

पहले कहा जा चुका है कि द्विपद जीव ४ प्रकार के होते हैं—(१) देव, (२) मनुष्य, (३) पक्षी और (४) राक्षस। प्रश्न लग्न से द्विपद जीव का निश्चय कर प्रश्नकालीन चन्द्रमा जिस राशि के नवांश में हो, उसके आधार पर देव, मनुष्य, पक्षी आदि का निर्णय करना चाहिये। चन्द्रमा मेष के नवांश में हो तो देव, वृष के नवांश में हो तो मनुष्य, मिथुन के नवांश में हो तो पक्षी और कर्क के नवांश में हो तो राक्षस के बारे में प्रश्न होता है। इसी प्रकार अग्रिम राशियों के नवांश में चन्द्रमा होने से क्रमशः देव, मनुष्य, पक्षी एवं राक्षस-विषयक चिन्ता होती है।

पक्षी भी दो प्रकार के होते हैं—(१) जलचारी और (२) स्थलचारी। यदि चन्द्रमा जलचर राशि में हो जलचारी पक्षी और वनचर राशि में हो तो स्थलचारी पक्षी कहने चाहियें।

कुछ प्रसिद्ध योग

(१) यदि प्रश्न लग्न में मकर या मीन राशि हो और उसमें शनि या मंगल स्थित हो तो वन कुक्कुट और काक सम्बन्धी

चिन्ता कहनी चाहिये।

(२) यदि प्रश्न लग्न में तुला या वृष राशि में शुक्र हो तो हंस, बुध हो तो तोता और चन्द्रमा हो तो मोर के बारे में जिज्ञासा होती है।

(३) मीन या मकर राशि प्रश्न लग्न में हो और उसमें सूर्य बैठा हो या उसे देखता हो तो गरुड़ के बारे में प्रश्न होता है।

(४) प्रश्न लग्न में स्वराशि में गुरु हो तो सफेद बगुला, स्वराशि में बुध हो तो मुर्गा, स्वराशि में मंगल हो तो उल्लू के बारे में चिन्ता होती है।

(५) चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्र जैसे शुभ ग्रह लग्नेश हों तो सौम्यपक्षी और सूर्य मंगल एवं शनि आदि पाप ग्रह लग्नेश हों तो क्रूर या भयानक पक्षियों के बारे में प्रश्न होता है।

चतुष्पद-विचार

चार पैर वाले पशुओं की चिन्ता तब होती है, जब प्रश्न कुण्डली में लग्न में चतुष्पद राशि हो और उसमें चतुष्पद ग्रह बैठा हो। मेष, सिंह, वृष, धनु का उत्तरार्द्ध और मकर का पूर्वार्द्ध चतुष्पद संज्ञक राशियाँ होती हैं। ग्रहों-सूर्य और मंगल चतुष्पद, गुरु और शुक्र द्विपद, बुध और शनि पक्षी तथा चन्द्रमा और राहु सरी सृप (रेंग के चलने वाले) होते हैं।

पशु चार प्रकार के होते हैं—१. खुरी (खुरवाले), २. नखी (तेज नाखून वाले), ३. दन्ती (तीक्ष्ण या विशाल दाँत वाले) और ४. शृंगी (सींग वाले)। पशुओं के इस भेद का निर्णय इस प्रकार से किया जाता है—यदि प्रश्न लग्न में मेष राशि हो और उसे मंगल त्रिपाद दृष्टि से देखता हो तो खुरी की चिन्ता कहनी चाहिये। यदि लग्न में सिंह राशि हो और उसपर सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो नखी; मेष राशि में शनि स्थित हो या शनि लग्न

को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो दन्ती और यदि मकर राशि में स्थित मंगल की लग्न पर त्रिपाद या पूर्ण दृष्टि हो तो शृंगी पशु के बारे में प्रश्न होता है।

पालतू और जंगली पशु

यदि लग्न या लग्नेश के साथ शुभ ग्रहों का सम्बन्ध हो तो पालतू पशु और यदि पाप ग्रहों का सम्बन्ध हो तो जंगली या हिंसक पशु कहने चाहिये।

विविध पशुओं का ज्ञान

प्रश्न कुण्डली में राशि एवं ग्रहों के आधार पर विविध पशुओं का ज्ञान इस प्रकार किया जाता है—

यदि मेष राशि में सूर्य हो तो व्याघ्र की चिन्ता, मंगल हो तो भेड़ की चिन्ता, बुध हो तो लंगूर की चिन्ता, शुक्र हो तो वृषभ (बैल) की चिन्ता, शनि हो तो भैंस की चिन्ता और राहु हो तो रीछ की चिन्ता होती है।

वृष राशि में सूर्य हो तो बारहसिंगा या शरभ की चिन्ता, मंगल हो तो मृग की चिन्ता, बुध हो तो बन्दर की चिन्ता, चन्द्रमा हो तो गाय की चिन्ता, शनि हो तो भैंस की चिन्ता और राहु हो तो भैंसा की चिन्ता कहनी चाहिये।

यदि मंगल वृष राशि में हो तो कृष्णमृग या सिंह की चिन्ता, मिथुन में हो तो कुत्ता की चिन्ता, कर्क में हो तो गधा खच्चर की चिन्ता, सिंह में हो तो व्याघ्र की चिन्ता, कन्या में हो तो शृंगाल (सियार) की चिन्ता और मकर राशि में हो तो भैंस की चिन्ता बतलानी चाहिये।

तुला लग्न में चन्द्रमा हो तो गाय की और शुक्र हो तो बछड़ा की चिन्ता होती है। धनु लग्न में चन्द्र, मंगल एवं गुरु स्थित हों तो घोड़ा की चिन्ता होती है। कुम्भ राशि में सूर्य और शनि हों तो

मतवाले हाथी की चिन्ता, राहु हो तो भैंसा की चिन्ता बुध और गुरु हो तो बन्दर की चिन्ता होती है।

इस प्रकार लग्न, राशि एवं ग्रहों के अनुसार पशुओं की चिन्ता का ज्ञान सुगमतापूर्वक किया जा सकता है।

सर्प आदि का ज्ञान

अपद योनि में सर्प आदि रेंगने वाले, मछली आदि तैरने वाले और मेंढक आदि फुदकने वाले जीव आते हैं। जिनके पैर नहीं होते उन जीवों को इस योनि में मानना चाहिए। कुम्भ और मीन राशियाँ तथा चन्द्रमा और राहु ग्रह अपद संज्ञक होते हैं। अतः प्रश्न लग्न में यदि कुम्भ या मीन राशि हो और उसमें चन्द्रमा या राहु स्थित हो या इन दोनों में से किसी एक की लग्न पर दृष्टि हो तो प्रश्नकर्ता किसी सर्प आदि बगैर पैर वाले जीव के बारे में पूछना चाहता है।

इन योनि के जीव दो प्रकार के होते हैं—जलचर और थलचर। इनका निश्चय तात्कालिक चन्द्रमा के नवांश के आधार पर किया जाता है। यदि प्रश्नकालीन चन्द्रमा धनु या कुम्भ राशि के नवांश में हो तो अपद या सरीसृप जीव की चिन्ता होती है। यदि चन्द्रमा धनु के नवांश में हो तो सर्प, दुमुही या मेंढ़क आदि की चिन्ता और मीन राशि के नवांश में हो तो शंख एवं मछली आदि की चिन्ता कहनी चाहिए।

बहुपद जीव

जिन जीवों के चार से अधिक पैर होते हैं उन्हें बहुपद जीव कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—अण्डज और स्वेदज। भ्रमर, पतंग, मच्छर, चींटी एवं काँतर आदि को अण्डज और खटमल, जूँ एवं केंचुआ आदि स्वेदज कहे जाते हैं।

प्रश्नशास्त्र (में कर्क, वृश्चिक एवं मकर का पूर्वार्द्ध ये राशियाँ बहुपद संज्ञक कही गई हैं। यदि प्रश्न लग्न में इनमें से कोई एक

राशि स्थित हो तो बहुपद जीव की चिन्ता होती है। यदि लग्न में कर्क राशि हो तो अण्डज जीव की और वृश्चिक एवं मकर राशि हो तो स्वेदज जीव की चिन्ता होती है।

कुछ प्रसिद्ध योग

(१) यदि प्रश्न कुण्डली में मिथुन राशि में बुध हो और इसका चतुर्थ स्थान में स्थित ग्रह से सम्बन्ध हो तो मत्कुण (खटमल) की चिन्ता होती है।

(२) कन्या राशि में बैठा शनि चतुर्थ भाव को देखता हो तो जूं आदि स्वेदज जीव की चिन्ता होती है।

(३) यदि कर्क राशि लग्न में हो तथा उसमें चन्द्रमा या शुक्र बैठा हो और मीन राशि में कोई ग्रह न हो तो भ्रमर (भौंरा) की चिन्ता होती है।

(४) तृतीय भाव में मेष राशि हो तो गोधा की, वृष हो तो छिपकली की, कर्क हो तो कछुआ की, वृश्चिक हो तो बिच्छू या खटमल की और मकर राशि हो तो चींटी, काँतर या केंचुआ की चिन्ता होती है।

(५) यदि तृतीय भाव में वृश्चिक राशि में मंगल हो तो विषैले कीड़ों की चिन्ता होती है। चतुर्थ भाव में कर्क राशि हो तो चींटी की, धनु हो तो बिच्छू की और मकर राशि हो चन्दन गोह की चिन्ता होती है।

इस प्रकार राशि, भाव एवं ग्रहों के आधार पर बहुपद जीवों का निर्णय कर लेना चाहिए।

अध्याय ४

मेष आदि राशियाँ एवं मूल प्रश्न

मेष—प्रश्न काल में यदि मेष राशि लग्न में हो तो द्विपद मनुष्य के सम्बन्ध में प्रश्न होता है।

बृष—प्रश्न लग्न में वृष राशि हो तो चतुष्पद या पालतू पशु की चिन्ता होती है।

मिथुन—यदि प्रश्न लग्न में मिथुन राशि हो तो गर्भ या बच्चे के बारे में प्रश्न होता है।

कर्क—यदि लग्न में कर्क राशि हो तो विवाद, झगड़ा, मतभेद या मुकद्दमा के बारे में प्रश्न होता है।

सिंह—यदि लग्न में सिंह राशि हो तो नौकरी, व्यापार में उन्नति, चुनाव या अन्य सरकारी कार्य के बारे में प्रश्न होता है।

कन्या—यदि प्रश्न लग्न में कन्या राशि हो तो प्रेम, विवाह या स्त्रियों के पंच के बारे में प्रश्न होता है।

तुला—यदि प्रश्न लग्न में तुला राशि हो तो व्यापार, रोजगार या हानि-लाभ के बारे प्रश्न होता है।

वृश्चिक—यदि लग्न में वृश्चिक राशि हो तो भय, अपयश हानि या रोग के बारे में प्रश्न होता है।

धनु—यदि प्रश्न लग्न में धनु राशि हो तो चोरी, खोई वस्तु या खोए हुए जीव के बारे में प्रश्न होता है।

मकर—यदि प्रश्न लग्न में मकर राशि हो तो यात्रा, परि-वर्तन, स्थानान्तरण या प्रवासी के बारे में प्रश्न होता है।

कुम्भ—यदि प्रश्न लग्न में कुम्भ राशि हो तो धार्मिक,

सामाजिक, राजनैतिक या अन्य सार्वजनिक क्षेत्र की समस्या के बारे में प्रश्न होता है।

मीन—यदि प्रश्न लग्न में मीन राशि हो तो प्रायः व्यक्तिगत प्रश्न होता है। इस लग्न में पृच्छक निजी स्थिति, मकान या परिवार के बारे में चिन्तित होता है।

चन्द्रमा की द्वादश अवस्था और मूक प्रश्न

स्पष्ट चन्द्रमा की राशि को छोड़कर अंश आदि को द्विगुणित कर ५ का भाग देने से लब्धि-तुल्य गत अवस्था और अग्रिम वर्तमान अवस्था होती है। इन अवस्थाओं के नाम इस प्रकार है—१. प्रवास, २. नाश, ३. मरण, ४. जय, ५. हास्य, ६. रति, ७. क्राड़ित, ८. सुप्त, ९. मुक्त, १०. ज्वर, ११. प्रकम्प और १२. स्थिति। इन अवस्थाओं की गणना मेषादि राशियों में प्रयासादि क्रम से करनी चाहिए। जैसे मेष में प्रयास से, वृष में नाश से मिथुन में मरण से अवस्था की गणना करनी चाहिये।

उदाहरण—जैसे प्रश्न के समय के स्पष्ट चन्द्रमा= ६।२४।१०।१५ इसके २४।१०।१५ अंशादि को द्विगुणित करने पर ४८।२०।३० हुआ। इसमें ५ का भाग देने से लब्धि ९ मिली। अतः चन्द्रमा १०वीं अवस्था में हुआ। तुला राशि में क्राड़ित अवस्था से गणना करते हैं। अतः तात्कालिक चन्द्रमा क्राड़ित से आगे १०वीं जय अवस्था में हुआ।

अवस्थाओं के अनुसार मानसिक प्रश्न : यदि प्रश्न काल में चन्द्रमा प्रवास अवस्था में हो तो यात्रा, विदेश में व्यक्ति, धन या मानसिक चिन्ता जैसा प्रश्न होता है।

यदि चन्द्रमा नाश अवस्था का हो, तो बन्धन, राजभय, शत्रु भय, प्रवास, उद्वेग या अन्य किसी भयंकर बात की चिन्ता होती है।

प्रश्न के समय चन्द्रमा मरण अवस्था का हो, तो मृत्यु, किसी को मारना, तान्त्रिक प्रक्रिया, क्रूर या हिंसक कार्य आदि के बारे में चिन्ता होती है।

चन्द्रमा जय अवस्था में हो, तो विवाद, चुनाव, मुकद्दमा या प्रतियोगिता में हार-जीत का प्रश्न होता है।

प्रश्न काल में चन्द्रमा हास्य अवस्था में हो, तो प्रसन्नता, प्रतिस्पर्धा, महत्त्वाकांक्षा, आमोद-प्रमोद, प्रेम-सम्बन्ध या गर्भिणी स्त्री के बारे में प्रश्न होता है।

यदि चन्द्रमा रति अवस्था में हो, तो अपनी स्त्री या मित्र की चिन्ता, लाभ-हानि अथवा व्याकुलता जैसा प्रश्न कहना चाहिये।

यदि चन्द्रमा क्रीड़ा अवस्था में हो तो संतति (पुत्र/कन्या) या मित्रों के मांगलिक कार्य, मन में उत्साह, सुख एवं लाभ-विषयक प्रश्न होता है।

यदि चन्द्रमा सुप्त अवस्था में हो, तो व्यापार में लाभ, किसी नये आदमी से सहयोग या उधार दी गई रकम की वसूली का प्रश्न कहना चाहिए।

यदि चन्द्रमा मुक्त अवस्था में हो तो किसी के पास जाना, लाभ-हानि या सुख-दुःख के बारे में प्रश्न होता है।

ज्वर अवस्था में चन्द्रमा होने पर पुत्र, स्त्री, धन या आत्मीय व्यक्ति के बारे में चिन्ता/आशंका होती है और यदि प्रश्न काल में चन्द्रमा प्रकम्पित अवस्था में हो, तो हिंसक कार्य, शत्रु भय या आकस्मिक कष्ट के बारे में प्रश्न होता है।

प्रश्न के समय स्थिति अवस्था में चन्द्रमा होने पर पुत्र, मित्र या धन की प्राप्ति जैसा प्रश्न कहना चाहिए।

मुष्टिका प्रश्न विचार

मुष्टिका प्रश्न एक चमत्कारपूर्ण प्रश्न होता है। इसमें प्रश्न-कर्त्ता अपनी मुट्ठी की वस्तु के बारे में पूछता है। यद्यपि इस

प्रश्न से व्यक्ति की प्रगति-अवनति, सुख-दुःख, लाभ-हानि या भाग्य का कोई सम्बन्ध नहीं रहता और इस प्रकार के प्रश्नों का व्यक्ति के जीवन पर ही कोई प्रभाव पड़ता है, किन्तु फिर भी इस शास्त्र का प्रत्यक्ष चमत्कार दिखाने; लोगों की इस शास्त्र में अभिरुचि तथा श्रद्धा को पैदा करने के लिए प्राचीन काल से ही मूक प्रश्न के साथ मुष्टिका प्रश्न का विचार होता रहा है।

चन्द्रमा के नवमांश द्वारा मुट्ठी की वस्तु का ज्ञान

प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा जिस राशि के नवमांश में हो, उस राशि के द्वारा प्रश्नकर्त्ता की मुट्ठी में क्या वस्तु है, यह जाना जा सकता है। इसका विचार करने से पूर्व प्रश्नकालीन चन्द्रमा का स्पष्टीकरण और नवमांश विचार कर लेना चाहिए।

यदि चन्द्रमा मेष के नवांश में हो, तो सुवर्ण और गुरु या शुक्र से दृष्ट हो तो पृच्छक की मुट्ठी में रत्न होता है। यदि वृष राशि के नवमांश में स्थित चन्द्रमा को बलवान् शुक्र देखता हो, रत्नजटित आभूषण तथा यदि वक्री या अतिचारी शुक्र देखता हो, तो मुट्ठी में पुराना धन (सिक्का आदि) होता है। यदि मिथुन या कर्क के नवमांश में चन्द्रमा हो, तो जल में पैदा वस्तु—कमल, सिंघाड़ा, धान आदि होता हैं। यदि चन्द्रमा सिंह के नवांश में सूर्य से दृष्ट हो, तो सोना-चाँदी होता है। कन्या के नवांश में स्थित चन्द्रमा सूर्य से दृष्ट न हो, तो चाँदी; बुध से दृष्ट हो, तो कांसा, बुध से अदृष्ट हो तो मुद्रा (सिक्का), शुक्र से दृष्ट हो, तो वस्त्र और शनि से दृष्ट हो, तो मुट्ठी में कचनार होता है।

मुट्ठी की वस्तु का निर्णय करने के कुछ योग

प्रश्न कुण्डली में शुक्र, चन्द्रमा और शनि चौथे स्थान में हों, तो क्रमशः जायफल, कोई धातु एवं मिट्टी प्रश्नकर्त्ता की मुट्ठी में होती है। यदि बुध, शनि, मंगल और राहु ग्यारहवें तथा नौवें

स्थान में हो, तो मुट्ठी में सफेद फल तथा गुरु तीसरे स्थान में और बुध द्वितीय स्थान में हो, तो मुट्ठी में रेशमी कपड़ा होता है।

यदि प्रश्न लग्न से मंगल केन्द्र में हो तो मूँगा या तांबा, चन्द्र और राहु केन्द्र में हों, तो शंख-सीप एवं मोती आदि, बुध केन्द्र में हो तो लवण, कर्क राशि में शुक्र केन्द्र में हो, तो चाँदी का सिक्का, गुरु नवम या दशम या सातवें स्थान में हो, तो रत्नजटित सोने का आभूषण या वस्त्र और मंगल तथा शुक्र लग्न से त्रिकोण में हो, तो हाथ में मिट्टी होती है।

लग्न से दशम स्थान में गुरु हो, तो आम आदि फल, शुक्र से दृष्ट चन्द्रमा केन्द्र में हो खट्टा फल, सूर्य केन्द्र में, बुध नवम और मंगल पंचम स्थान में हो, तो मुट्ठी में मीठा फल होता है। यदि चन्द्रमा छठे स्थान में हो, तो पीपल (पिप्पली) कहनी चाहिए।

यदि प्रश्न काल में चन्द्रमा तुला के नवमांश में हो, तो गन्ध, चन्दन या वस्त्र, इस योग में चन्द्रमा शुक्र से अदृष्ट हो तो पुराना वस्त्र प्रश्नकर्त्ता की मुट्ठी में बतलाना चाहिये। यदि चन्द्रमा वृश्चिक के नवांश में शुक्र से दृष्ट हो, तो लोहा, मंगल से दृष्ट हो तो सोना-चाँदी होता है। धनु राशि के नवांश में गुरु से दृष्ट चन्द्रमा हो, तो कोई रत्न और मकर के नवांश में चन्द्रमा को गुरु देखता हो, तो हल्की चमक वाला या नकली रत्न पृच्छक की मुट्ठी में होता है। यदि इस योग में चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि हो, तो काँच कहना चाहिए। कुम्भ राशि के नवमांश में चन्द्रमा होने पर मक्खी-मच्छर या अन्य जीव और मीन राशि के नवमांश में चन्द्रमा होने पर पुष्प या कोई सुगन्धित वस्तु प्रश्नकर्त्ता की मुट्ठी में होती है। इस प्रकार प्रश्न काल में तात्कालिक चन्द्रमा की विभिन्न राशियों में स्थिति और उसपर ग्रहों की दृष्टि के आधार पर मुट्ठी के भीतर की वस्तु का ज्ञान

किया जा सकता है।

यदि छठे स्थान में शुक्र और चन्द्रमा हों, तो इलायची, छठे शनि और नौवें मंगल हों, तो लाल-काले रंग की गोल वस्तु—काले तिल या मसूर, ग्यारहवें शुक्र हों तो गेहूँ, तीसरे सूर्य हों तो आक पत्ता, केन्द्र में राहु हो, तो शस्त्र या लोहा, केन्द्र में शनि हो तो काला फूल, केन्द्र में बुध हो, तो कमल, चन्द्रमा राहु या शुक्र केन्द्र में हों तो अण्डी का बीज प्रश्नकर्त्ता की मुट्ठी में होता है।

यदि बुध से दृष्ट राहु केन्द्र में हो, तो मालती का फूल, मंगल और बुध से दृष्ट चन्द्रमा धन स्थान में हो, तो लाल-पीला वस्त्र, राहु, मंगल और केतु लग्न को देखते हों, तो धूम्र, रक्त वस्त्र और मूँगा प्रश्नकर्त्ता के हाथ में होता है। यदि त्रिकोण में चन्द्रमा और केन्द्र में मंगल हो, तो पृच्छक की मुट्ठी में मिट्टी या लाल रंग की चोटी (रिबन) होता है।

यदि बलवान् शुक्र या चन्द्रमा लग्न में हो, तो चाँदी, बुध हो तो सोना, गुरु हो, तो रत्नजटित सोने का आभूषण, सूर्य हो, तो मोती, मंगल हो, तो रत्न, शनि हो, तो लोहा और राहु या केतु केतु हो, तो पत्थर, काँच या काष्ठ पृच्छक के हाथ में होता है। यदि केतु पाप ग्रहों से दृष्ट हो, तो मुट्ठी खाली होती है।

मुट्ठी में किस रंग की वस्तु है ?

मुट्ठी में किस रंग की वस्तु है ? इसका निश्चय प्रश्न लग्न की राशि के अनुसार करना चाहिए। यदि प्रश्न कुण्डली में मेष लग्न हो तो लाल, वृष हो तो सफेद, मिथुन हो तो हरा, कर्क हो तो गुलाबी, सिंह हो तो भूरा, कन्या हो तो अनेक रंग वाला, तुला हो तो काला, वृश्चिक हो तो पिशंग (जौ के समान), धनु हो तो पिंगल (सुनहरा), मकर हो तो चितकबरा, कुंभ हो तो भूरा और मीन हो तो चमकाले सफेद रंग की वस्तु प्रश्नकर्त्ता की

मुट्ठी में बतलानी चाहिए।

यदि प्रश्न लग्न या उसके नवांश में सूर्य हो तो गुलाबी, चन्द्रमा हो तो सफेद, मंगल हो तो लाल, बुध हो तो हरा, गुरु हो तो पीला या सुनहरी, शुक्र हो तो चमकीला सफेद या चितकबरा, शनि हो तो काला, राहु हो तो भूरा और केतु हो, तो धुयें के समान रंग वाला पदार्थ हाथ में होता है।

ग्रहों के द्रव्य पदार्थ

सूर्य आदि ग्रहों के द्रव्यों की सूची इस प्रकार है—

सूर्य—वैदूर्य, मोती, पत्थर, तांबा, मूँगा और स्फटिक।

चन्द्रमा—चाँदी, कपाल, सीप, शंख, चाकू, मोती, कमल।

मंगल—मूँगा, तांवा, वैदूर्य, मणियों, पत्थर, ईंट, सींग, शस्त्र, सीसा एवं लाल कपड़ा।

बुध—सोना मिले-जुले रंग, काँच एवं पन्ना।

गुरु—गोमेद, सोना, मणि, पीली धातु, सूत्र, पुस्तक और सुगन्धित पदार्थ।

शुक्र—आभूषण, चाँदी, स्फटिक, कमल, मोती, मुद्रा, खिलौना एवं प्रतिमा।

शनि—नीलम, काला पत्थर, लोहा, चमड़ा, सीसा, खनिज, दाँता, नील कमल एवं काली वस्तु।

राहु-केतु—काँटा, हड्डी, विष, घरेलू उपयोग की वस्तु।

अध्याय ५

मूक प्रश्न का ज्ञान : एक सरल रीति

मूक प्रश्न का धातु, मूल और जीव इस वर्गीकरण के अनुसार निश्चय करने में प्रक्रिया में गम्भीरता एवं कठिनता देखकर मध्य काल के आचार्यों ने ग्रह एवं भाव के आधार पर मूक प्रश्न का निश्चय करने का प्रयास किया है। प्रश्न शास्त्र के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में इस सिद्धान्त का प्रयोग किया गया है, किन्तु किसी एक ग्रन्थ में व्यवस्थित और शास्त्रीय पद्धति से मूक प्रश्न जैसी पहेली का समाधान करने का सर्वाङ्गीण प्रयास कहीं दिखलाई नहीं देता। इस अभाव की पूर्ति के लिए और प्रश्न शास्त्र के जिज्ञासु पाठकों की सुविधा के लिए ग्रह और भाव सम्बन्धी दोनों सिद्धान्तों का विस्तृत और सरल विवेचन प्रस्तुत है।

(१) **ग्रह सिद्धान्त**—इस सिद्धान्त के अनुसार प्रश्न कुण्डली बनाकर सर्वप्रथम मूक प्रश्न के प्रतिनिधि ग्रह का विचार किया जाता है और भाव में ग्रह की स्थिति के अनुसार मूक प्रश्न का निश्चय किया जाता है। मूक प्रश्न का प्रतिनिधि निम्नलिखित में से कोई एक होता है—

(i) लग्नेश और चन्द्रमा इन दोनों में जो बलवान् हो, वह मूक प्रश्न का प्रतिनिधित्व करता है।

(ii) यदि ये दोनों निर्बल हों, तो चतुर्थेश प्रतिनिधि ग्रह होता है।

इस प्रकार लग्नेश, चन्द्र एवं चतुर्थेश के बल का विचार कर प्रतिनिधि ग्रह का निश्चय कर लेना चाहिए। यहाँ ध्यान देने

योग्य बात यह है कि कदाचित् चतुर्थेश नीच राशि में हो अथवा वह सूर्य के साथ होने के कारण अस्त हो या ग्रह-युद्ध में पराजित हो, तो इस सिद्धान्त के अनुसार मूक प्रश्न का निर्णय नहीं करना चाहिए। इस स्थिति में भाव सिद्धान्त के अनुसार मूक प्रश्न का विचार करना चाहिए।

उदाहरण १—दि० १२ सितम्बर, १९७५ ई० को प्रातःकाल किसी ने प्रश्न किया। तात्कालीन कन्या लग्न की प्रश्न कुण्डली इस प्रकार है—

इस कुण्डली में लग्नेश बुध है। यह अपनी राशि में स्थित और गुरु से दृष्ट है। यह स्वराशि में होने के कारण स्थानबली, लग्न में होने के कारण दिग्बली, दिन में प्रश्न होने के कारण कालबली तथा गुरु से दृष्ट होने के कारण दृग्बली है। जबकि चन्द्रमा नीच राशि में राहु के साथ मंगल एवं केतु से दृष्ट होने के कारण निर्बल है, अतः लग्नेश बुध और चन्द्र इन दोनों में से बुध बलवान् होने के कारण इस उदाहरण में मूक प्रश्न का प्रतिनिधि ग्रह हुआ।
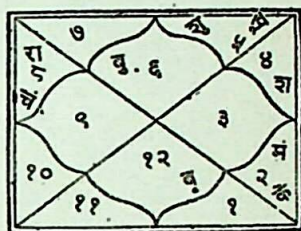
उदाहरण २—दि० १८ अप्रैल, १९७५ शुक्रवार को अपराह्न में प्रश्न किया गया। उस समय वृश्चिक राशि लग्न में थी। तत्कालीन प्रश्न कुण्डली इस प्रकार है—

इस कुण्डली में लग्नेश मंगल शत्रु की राशि में चतुर्थ स्थान में होने के कारण स्थान एवं दिग्बल रहित है। एकाकी होने के कारण न तो चेष्टाबली है और किसी दृष्टि न होने से न ही दृग्बली
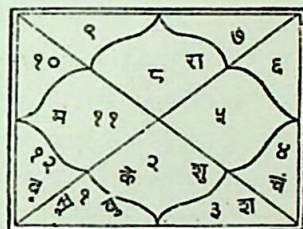
है। इसके विपरीत, चन्द्रमा स्वराशि में होने के कारण स्थानबली और गुरु की दृष्टि के कारण दृग्बली भी है। इस प्रकार लग्नेश मंगल की अपेक्षा चन्द्र बलवान् होने के कारण इस उदाहरण में मूक प्रश्न का प्रतिनिधि हुआ।

उदाहरण ३—दि० २३ जुलाई, १९७५ बुधवार को सायं मकर लग्न में प्रश्न किया गया। तत्कालीन लग्न एवं ग्रह स्थिति के अनुसार प्रश्न कुण्डली इस प्रकार है—
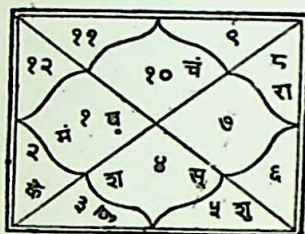
पिछली कुण्डली में लग्न में चन्द्र और सप्तम में शनि शत्रु राशि में स्थित है। लग्नेश शनि पर मंगल की तथा चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि है, अतः ये दोनों ग्रह निर्बल हैं। इनकी अपेक्षा चतुर्थेश मंगल बलवान् है, अतः इस उदाहरण में चतुर्थेश मंगल मूक प्रश्न का प्रतिनिधि ग्रह हुआ।

इस प्रकार मूक प्रश्न के प्रतिनिधि का निश्चय कर वह जिस भाव में बैठा हो, उसके आधार पर पृच्छक के अभीष्ट प्रश्न का ज्ञान किया जा सकता है। इस रीति से सूर्य आदि ७ ग्रहों में से कोई एक मूक प्रश्न का प्रतिनिधि होता है, किन्तु जब चतुर्थेश ग्रह मूक प्रश्न का प्रतिनिधि होने वाला हो और उसके साथ राहु या केतु का सम्बन्ध हो तथा राहु या केतु उससे बलवान् हों, तो इस परिस्थिति में राहु और केतु भी कभी-कभी प्रतिनिधि हो जाते हैं, अतः मूक प्रश्न का ज्ञान करने के लिए प्रतिनिधि ग्रह का निश्चय सावधानी से कर लेना चाहिए, क्योंकि प्रश्न ज्ञान अधिकांशतया प्रतिनिधि ग्रह पर आधारित होता है।

सूर्य आदि ९ ग्रहों में से जो भी ग्रह मूक प्रश्न का प्रतिनिधित्व करता हो, उसकी लग्न आदि १२ भावों में स्थिति के अनुसार

व्यक्ति के मनोगत प्रश्न एवं भाव का ज्ञान इस प्रकार किया जाता है।

सूर्य और मूक प्रश्न

मूक प्रश्न का निर्णय इस प्रकार करना चाहिए।

प्रश्न कुण्डली में बलवान् सूर्य लग्न में स्थित हो, तो प्रश्न-कर्त्ता रोग के बारे में पूछता है। लग्न में स्थित सूर्य के प्रभाववश पेट में दर्द, पेशाब में पथरी, शुगर या रक्त, ज्वर, सिर-दर्द या हृदय दुर्बलता जैसे रोग होते हैं। यदि स्वनवांश या वर्गोत्तम नवांश में हो, तो पृच्छक अपने बारे में अन्यथा किसी और के बारे में पूछता है।

प्रश्न काल में यदि सूर्य दूसरे स्थान में हो, तो पृच्छक अवस्था, विद्या, ज्ञान, धन, सम्मान या किसी अन्य क्षेत्र में बड़ा होता है और वह अपने कुटुम्ब (परिवार) या धन के बारे में प्रश्न करता है।

यदि तृतीय स्थान में सूर्य बलवान् होकर बैठा हो, तो प्रश्न-कर्त्ता विद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय (अजायबघर), अनुसन्धान-संस्थान, पुरातत्त्व से सम्बन्धी खण्डहर, दार्शनिक, साहित्य या अन्य शास्त्रीय गोष्ठी अथवा किसी समारोह में सम्मिलित होकर आता है और उस समय उसके मन में कारोबार में प्रगति या विवाद में विजय से सम्बन्धी प्रश्न होता है।

यदि चतुर्थ स्थान में सूर्य हो, तो पृच्छक माता-पिता आदि वृद्धजन, किसी विद्वान् या उच्च अधिकारी से मिलकर आता है औरप्र गति-विषयक प्रश्न करता है।

पंचम स्थान में सूर्य होने पर किसी वाहन से आकर मानसिक एवं बौद्धिक प्रगति या सन्तति के बारे में प्रश्न करता है। विद्या-ध्ययन, परीक्षा, प्रतियोगिता, अनुसन्धान एवं प्रकाशन जैसे प्रश्न इसी योग में होते हैं। विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा एवं इन्टरव्यू

में सफलता से सम्बन्धी प्रश्न भी इस योग में अनेक बार अनुभव किये जाते हैं।

यदि बलवान् सूर्य छठे स्थान में हो, तो प्रश्नकर्त्ता किसी रोगी के बारे में चिन्तित होता है। वह घर से घबराहट एवं चिन्ता में चलता है एवं वैद्य, हकीम या डॉक्टर की चिकित्सा में परिवर्तन का विचार करता है। इस प्रश्न का विचार अत्यन्त सावधानी से करना चाहिए। यदि प्रश्न काल में लग्नेश ८वें स्थान में और अष्टमेश शुभ ग्रह १२वें स्थान में स्थित हो, तो रोगी की मृत्यु हो जाती है।

यदि सूर्य ७वें स्थान में हो, तो पृच्छक अपने घर किसी की प्रतीक्षा कर अथवा रास्ते में किसी व्यक्ति को छोड़कर दैवज्ञ के पास आता है। उसके मन में स्त्री-विषयक चिन्ता होती है। यदि सूर्य पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो चोरी, दुर्घटना या स्त्री की बीमारी का प्रश्न होता है।

अष्टम स्थान में सूर्य स्थित हो, तो व्यक्ति परिवर्तन के बारे में पूछता है। यदि सूर्य दशमेश या सप्तमेश हो, तो कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन; तृतीयेश, नवमेश या द्वादशेश हो, तो स्थानान्तर अथवा यात्रा और चतुर्थेश हो, तो निवास-स्थान में परिवर्तन का प्रश्न होता है।

नवम स्थान में सूर्य होने पर व्यक्ति भाग्योदय या दैवी उपासना के बारे में पूछता है। यदि सूर्य पंचमेश हो, तो वह तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र या अन्य गुप्त विद्या में सफलता के बारे में जानना चाहता है तथा दशमेश एवं लाभेश सूर्य के होने पर कार्य-क्षेत्र में प्रगति के बाबत प्रश्न करता है।

दशम स्थान में सूर्य स्थित हो, तो व्यक्ति कारोबार में उन्नति या नौकरी में तरक्की का प्रश्न करता है। यदि सूर्य स्वराशि में हो तो प्रश्न उपाधि, सम्मान, पुरस्कार या अभिनन्दन-विषयक

होता है। उच्च राशि (मेष) में सूर्य होने पर किसी बड़े आदमी, उच्चाधिकारी या शासक से सम्बन्धी प्रश्न होता है।

यदि सूर्य ११वें स्थान में हो तो व्यक्ति संचित या पैतृक धन/सम्पत्ति के बारे में पूछता है। यदि सूर्य प्रश्न कुण्डली में नवम स्थान का स्वामी हो, तो दीक्षा या शास्त्रीय चिन्तवन जैसा प्रश्न होता है।

बारहवें स्थान में स्थित सूर्य के प्रभाववश अपव्यय या यात्रा जैसा प्रश्न होता है। स्वराशिगत सूर्य होने पर बीमारी, नीच राशिगत सूर्य होने पर नुकसान और शत्रु राशिगत होने पर शत्रु भय होता है।

चन्द्रमा और मूक प्रश्न

प्रश्न काल में यदि चन्द्रमा अधिक बलशाली हो, तो लग्न आदि १२ भावों में उसकी स्थिति के अनुसार मूक प्रश्न का निश्चय इस प्रकार करना चाहिए।

प्रश्न लग्न में बलवान् चन्द्रमा होने पर व्यक्ति दूध, दही, रस या रसायन के बारे में प्रश्न करता है। यदि यह चन्द्रमा चर राशि में स्थित हो, तो व्यक्ति यात्रा या वाहन-विषयक प्रश्न करता है। चन्द्र और मंगल दोनों का लग्न में योग होने पर दुर्घटना-विषयक प्रश्न होता है और चन्द्र-शुक्र का योग होने पर प्रश्न प्रेम या रोमांस-विषयक होता है। यदि चन्द्रमा स्वराशि में हो, तो व्यक्ति खेत, कुआँ, नदी, तालाब आदि के पास से आता है। हमारा अनुभव है कि प्रश्न लग्न में चन्द्रमा होने पर पृच्छक शर्बत, लस्सी या अन्य शीत पेय लेकर आता है।

दूसरे स्थान में चन्द्रमा होने पर व्यक्ति चाँदी-सोने के सिक्के या जवाहरात के व्यापार का प्रश्न करता है। घर से चलते समय रास्ते में उसे कोई सुन्दर स्त्री सादी वेष-भूषा में मिलती है। वह घर से धन या सम्पत्ति-विषयक चिन्ता करता हुआ चलता है।

यदि बलवान् चन्द्रमा दूसरे स्थान में बैठा हो, तो प्रश्नकर्त्ता कारोबार या व्यवसाय के बारे में प्रश्न करता है। यदि इस स्थान में स्वराशि का चन्द्रमा हो, तो प्रश्न भाई के बारे में होता है। इस स्थान में जलचर राशि में चन्द्रमा हो और पृच्छक कृषक हो, तो प्रश्न खेती-बाड़ी या वर्षा से सम्बन्धित होता है। चर राशि में चन्द्रमा होने पर यात्रा या पिकनिक के बावत प्रश्न होता है।

प्रश्न कुण्डली में चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा होने पर व्यक्ति माता, मौसी या चाची आदि के बारे में प्रश्न करता है। यदि इस स्थान में स्वराशिगत चन्द्रमा को सूर्य, मंगल या गुरु देखता हो, तो पृच्छक पर स्त्री प्रेम-विषयक प्रश्न करता है।

प्रश्न लग्न से ५वें स्थान में चन्द्रमा हो, तो व्यक्ति को संतान की चिन्ता होती है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि होने पर पुत्र की इच्छा होती है। इस योग में व्यक्ति घर से चलते समय पुस्तक, पत्रिका आदि पढ़कर या पत्र आदि लिखकर आता है। घर से चलते समय वह अकेला नहीं चलता।

छठे स्थान में चन्द्रमा होने पर व्यक्ति को रोग या रोगी की चिन्ता होती है। इस योग में अधिकांशतया कफ एवं शीत विकार, ज्वर, दमा, निमोनिया, जलोदर या प्रमेह जैसे रोग होते हैं। यदि इस चन्द्रमा का अष्टमेश और पाप ग्रहों से सम्बन्ध हो, तो रोग ठीक नहीं होता। लग्न में चर राशि और लग्नेश के ८वें स्थान में होने पर भी रोग ठीक नहीं होता।

७वें स्थान में स्थित चन्द्रमा स्त्री या प्रेयसी से सम्बन्धित प्रश्न का सूचक है। यदि यह चन्द्रमा क्षीण हो तो दाम्पत्य या प्रणय-कलह का प्रश्न होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा नीच राशि में हो, तो स्त्री बीमार होती है। इस योग में अधिकांशतया स्त्री को नजला-जुकाम, दुर्बलता, सिर-दर्द या प्रदर की शिकायत रहती है। यदि सप्तमेश चन्द्रमा नवमेश या शुक्र से सम्बन्धित होकर

उक्त स्थान में हो, तो व्यक्ति किसी स्त्री पर आसक्त होता है।

प्रश्न काल में चन्द्रमा ८वें स्थान में हो, तो व्यक्ति पुरानी बीमारी या व्यवसाय में लगातार हानि से अत्यधिक चिन्तित होता है। इस भाव में स्वराशिगत चन्द्रमा होने, व्यक्ति संशय एवं सन्देहों से ग्रस्त होता है और उसका मनोबल टूट चुका होता है। भाग्येश चन्द्रमा इस भाव में पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो व्यक्ति ऋणग्रस्त होता है और कर्क राशि में चन्द्रमा होने पर वह समुद्री-यात्रा करता है।

यदि नवम स्थान में चन्द्रमा हो, तो व्यक्ति भाग्योदय कार्य, क्षेत्र में प्रगति व व्यापारिक यात्रा के बारे में जानना चाहता है। स्वराशि या उच्च राशिगत चन्द्रमा होने पर भाग्योदय एवं अच्छा लाभ होता है। यदि वृश्चिक राशि में चन्द्रमा पाप ग्रहों के साथ बैठा हो, तो प्रगति में रुकावटें आती हैं। कर्क राशि में गुरु के साथ उसके होने पर धर्म-विषयक प्रश्न होता है।

दशम स्थान में चन्द्रमा होने पर प्रश्न कारोबार या व्यवसाय के बारे में होता है। कर्क, मीन एवं वृष राशि में चन्द्रमा होने पर व्यापार में अच्छी प्रगति होती है। वृश्चिक एवं मकर राशि में बैठा हुआ चन्द्रमा व्यापार में हानि का सूचक होता है। इस भाव में चर राशि में चन्द्रमा होने पर विदेश यात्रा या वायुयान में यात्रा का प्रश्न भी होता है।

लाभ स्थान में बलवान् चन्द्रमा होने पर लाभ-विषयक प्रश्न होता है। व्यक्ति को सफेद कपड़ा, चाँदी, शंख एवं रसायन के व्यापार से लाभ होता है। किसी शुभ ग्रह के साथ होने पर लाभ की मात्रा अच्छी होती है। यदि इस स्थान में चन्द्रमा गुरु के साथ बैठा हो, तो प्रश्न संतान-विषयक होता है।

प्रश्न काल में १२वें स्थान चन्द्रमा प्रश्नकर्त्ता को हानिकारक होता है। स्वराशि में चन्द्रमा के होने पर शुभ कार्यों में व्यय

होता है और नीच या शत्रु राशि में होने पर व्यर्थ का व्यय या नुकसान होता है।

मंगल और मूक प्रश्न

प्रश्न कुण्डली में यदि मंगल लग्न में स्थित हो तो व्यक्ति गर्म दूध, चाय, कॉफी आदि कोई गरम चीज खा-पीकर आता है। यदि मंगल कर्क राशि में हो अथवा षष्ठेश हो तो व्यक्ति रोग या रोगी के बारे में पूछता है। इस योग में प्रायः रक्त विकार, रक्त-चाप, बवासीर आदि रोग होते हैं। मकर, मीन एवं सिंह राशि लग्न में होने पर विवाद और झगड़े में पृच्छक की विजय होती है।

यदि मंगल दूसरे स्थान में हो, तो व्यक्ति खोई हुई वस्तु के बारे में पूछता है। आते समय मार्ग में उसकी किसी हृष्ट-पुष्ट या स्वस्थ व्यक्ति से मुलाकात होती है। मेष, मकर, वृश्चिक एवं मीन राशि में स्थित होने पर नष्ट पदार्थ की प्राप्ति होती है। यदि इस स्थान में मंगल शत्रु-राशि में पाप ग्रहों के साथ हों, तो पारिवारिक कलह या विवाद का प्रश्न होता है।

तीसरे स्थान में मंगल बैठा हो, तो भाई या मित्र के बारे में व्यक्ति पूछता है। नीच या शत्रु राशि में स्थित होने पर बीमारी का प्रश्न होता है। यदि मंगल मेष या मकर राशि में हो तो यात्रा सम्बन्धी प्रश्न होता है, किन्तु यह यात्रा छोटी, अल्पकालीन और मनोरंजनार्थ होती है। चन्द्रमा के साथ होने पर रेल की यात्रा होती है।

प्रश्न काल में चतुर्थ स्थान में मंगल होने पर शत्रु, राजा, शासन या दस्युओं से भय होता है। इस योग में व्यक्ति नमकीन पदार्थ खाकर या किसी से झगड़ा कर आता है। इस स्थान में स्वराशि में मंगल होने पर भूमि, पशु या अन्न के क्रय-विक्रय का प्रश्न होता है और यदि इस योग के साथ सप्तम में शुक्र और

लग्न में राहु हो, तो व्यक्ति किसी विवाहित स्त्री से प्रेम करता है।

पंचम स्थान में स्थित मंगल पुत्र, क्रोध मूलक प्रतिक्रिया और षड्यन्त्र जैसे प्रश्नों का सूचक होता है। मेष राशि में मंगल होने पर सन्तान की चिन्ता और वृश्चिक राशि में होने पर व्यवसाय की चिन्ता होती है। इस योग में व्यक्ति पराक्रम, शौर्य एवं साहसिक कहानियाँ या अन्य साहित्य पढ़कर आता है। इस भाव में शुभ और पाप दोनों ग्रहों के साथ मंगल हो, तो व्यक्ति अपने शत्रुओं के विरुद्ध षड्यन्त्र बनाने में तत्पर होता है।

प्रश्न के समय छठे स्थान में मंगल हो, तो व्यक्ति कलह, विवाद, मुकद्दमा या रोग के बारे में प्रश्न करता है। इस स्थान में मेष या वृश्चिक राशि होने पर कलह, विवाद एवं मुकद्दमा आदि में पृच्छक की जीत होती है। शुभ ग्रहों के साथ होने पर रोग का प्रश्न होता है। यदि शुभ ग्रह लग्नेश हो, तो रोग काफी दिन तक चलता है और कदाचित् लग्नेश ८वें स्थान में तथा अष्टमेश लग्न में हो तो रोगी की मृत्यु हो जाती है। इस योग में प्रायः बवासीर, रक्तचाप, रक्त विकार या चोट जैसे रोग होते हैं।

यदि मंगल ७वें स्थान में हो, तो व्यक्ति को नौकर या पालतू जीव की चिन्ता होती है। स्वराशि में मंगल के होने पर व्यक्ति स्वयं बीमार होता है अथवा उसकी पत्नी बीमार होती है। इस योग में संक्रामक बीमारियों की अधिक सम्भावना रहती है। यदि मंगल इस भाव में राहु या केतु के साथ हो, तो पारिवारिक विवाद या विघटन का प्रश्न होता है। इस योग में पारिवारिक सदस्यों में सम्बन्ध-विच्छेद भी हो जाता है।

अष्टम स्थान में बैठा मंगल अचानक और अप्रत्याशित रूप से शारीरिक तथा मानसिक व्याधियाँ उत्पन्न करता है। इस भाव पर पाप ग्रहों का प्रभाव होने पर दुर्घटना या आकस्मिक

रोग पैदा होते हैं। यदि मंगल नवम या दशम स्थान का स्वामी हो, तो व्यापार, नौकरी या कारोबार में अचानक विवाद, विरोध और हानि होती है।

यदि प्रश्न कुण्डली में मंगल ९वें स्थान में बैठा हो, तो व्यापारिक यात्रा का प्रश्न होता है। इस योग में दक्षिण-पश्चिम दिशा में रेल-यात्रा का विचार होता है, किन्तु यदि मंगल नीच या शत्रु राशि में हो, तो भाग्योदय या प्रगति में रुकावट कहनी चाहिए। स्वराशि का मंगल विशेष रूप से उन्नति में सहयोग करता है। इस योग में व्यक्ति साहसिक कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

दशम स्थान में बलवान् मंगल हो, तो नौकरी का प्रश्न होता है और प्रयास करने से सेना, पुलिस एवं सुरक्षा विभाग में अनुकूल पद मिलता है। यदि इस स्थान में मंगल नीच राशि या शत्रु राशि में सूर्य के साथ अस्तगंत हो, तो व्यक्ति शासन या पुलिस से भयभीत होता है। वह अनेक प्रपञ्चों में फँसा होने के कारण अत्यन्त त्रस्त रहता है।

लाभ स्थान में मंगल की स्थितिवश व्यावसायिक प्रश्न होता है। व्यापार में उन्नति और धन लाभ की मुख्य रूप से जिज्ञासा होती है। इस योग में यदि मंगल वृश्चिक राशि में हो और उसका चन्द्रमा या शुक्र से सम्बन्ध हो, तो प्रचुर लाभ होता है। नीच राशि का मंगल होने पर छोटा भाई बीमार रहता है। प्रायः इस भाव में मंगल का फल शुभ माना गया है।

यदि प्रश्न कुण्डली में मंगल १२वें स्थान में हो, तो प्रश्न व्यय मूलक होता है। पृच्छक अचानक होने वाले व्यय और आर्थिक हानि से परेशान होता है। रोग, मुकद्दमा या झगड़ों पर अपव्यय होता है। यदि इस स्थान में कर्क राशि में मंगल गुरु के साथ हो, तो परीक्षा में असफलता का प्रश्न होता है।

बुध एवं शुक्र प्रश्न

प्रश्न कुण्डली में बलवान् बुध लग्न में बैठा हो, तो व्यक्ति साहित्य, कला एवं संगीत के बारे में प्रश्न करता है। इस योग में प्रधानतया विद्याध्ययन एवं परीक्षा से सम्बन्धी प्रश्न होता है तथा पूछने वाला व्यक्ति घर में छोटे बच्चों को खिला-पिलाकर या प्यार-दुलार कर प्रश्न करने आता है।

यदि बुध प्रश्न लग्न से द्वितीय स्थान में हो, तो व्यक्ति सन्तान, धन या वस्त्राभूषण के बारे में प्रश्न करता है। पञ्चमेश या नवमेश बुध हो, तो सन्तान का, तृतीयेश अथवा एकादशेश हो, तो धन का और द्वितीयेश या अष्टमेश हो, तो वस्त्राभूषण का प्रश्न होता है। यदि बुध उच्च राशि में मंगल के साथ हो, तो वाणी और बुध के प्रभाव से सफलता मिलती है।

प्रश्न काल में यदि बुध दूसरे स्थान में स्थित हो, तो पृच्छक परिवार में उत्सव, शत्रु पक्ष से बचाव या ऋण से मुक्ति का प्रश्न करता है। इस योग में व्यक्ति विद्यालय, पुस्तकालय, समाचार एजेन्सी या पुस्तक-विक्रेता की दुकान पर होकर आता है। इस योग में बुध स्वराशि या उच्च राशि में हो, तो परिवार में उत्सव, शत्रु राशि में हो, तो शत्रु से बचाव और नीच राशि में हो, तो ऋण मुक्ति का प्रश्न कहना चाहिए।

चतुर्थ स्थान में बुध बैठा हो, तो व्यक्ति व्यवसाय में परिवर्तन या प्रगति का प्रश्न करता है। इस योग में पृच्छक बुद्धिमान् एवं व्यवहार कुशल होता है। यदि बुध शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो उसे कारोबार में लाभ और तरक्की मिलती है। ऐसे बुध के साथ भाग्येश या लग्नेश का योग हो, तो नौकरी में पदोन्नति या कारोबार में वृद्धि होती है।

यदि बुध पञ्चम स्थान में स्थित हो, तो व्यक्ति विद्या, दीक्षा, सन्तान या मन्त्र-सिद्धि का प्रश्न करता है। इस योग में

व्यक्ति संशय, सन्देह या भ्रम का शिकार होता है, किन्तु उसमें उत्साह और लगन की कमी नहीं होती। इस बुध का गुरु से सम्बन्ध होने पर शिक्षा और दीक्षा में प्रगति तथा अष्टमेश शुभ ग्रह से सम्बन्ध होने पर मन्त्र-तन्त्र आदि की सिद्धि होती है।

यदि बुध छठे स्थान में हो, तो मनुष्य खेती, बगीचा, पालतू पशु या गुप्त प्रेयसी के बारे में पूछता है। इस योग में व्यक्ति बच्चों के कारण परिवार में तथा पड़ोस में झगड़ा करता है। इस भाव में वनचर राशि होने पर खेती-बाड़ी का, चतुष्पाद राशि होने पर पालतू पशु का और कन्या राशि होने पर प्रणय-सम्बन्ध का प्रश्न होता है। यदि यह बुध शुभ ग्रहों के साथ हो, तो पृष्ठव्य कार्य में सफलता नहीं मिलती।

प्रश्न लग्न से ७वें स्थान में बुध हो, तो पक्षी (तोता, मैना एवं मोर आदि), पत्नी या प्रेयसी, छोटे बच्चे एवं स्वास्थ्य के बारे प्रश्न होता है। इस योग में पृच्छक खेल का शौकीन, विनोदी और मिलनसार स्वभाव का होता है। यह बुध स्वराशि में हो, तो पत्नी या बच्चों का, शुक्र के साथ हो, तो प्रेमिका का शनि के साथ हो, तो स्वास्थ्य का और राहु के साथ हो, तो पक्षियों का प्रश्न होता है। बलवान् बुध राहु के सप्तम स्थान में स्थित होने पर कबूतरों की उड़ान, तीतर-बटेर की लड़ाई, घुड़दौड़ और शिकार जैसे प्रश्न कई बार अनुभव में आये हैं।

प्रश्न के समय यदि बुध अष्टम स्थान में बैठा हो, तो मनुष्य राजाज्ञा, चोरी गई वस्तु, विवाद या प्रतियोगिता के सम्बन्ध में जानना चाहता है। इस भाव में चर राशि, (विशेषकर तुला और मकर) होने पर प्रश्न का परिणाम अनुकूल होता है। स्थिर और द्विस्वभाव राशि में बुध होने पर प्रष्टव्य कार्य में असफलता या रुकावटें आती हैं।

यदि नवम स्थान में बलवान् बुध हो, तो राज्य सम्मान,

उच्च उपाधि, अभिनन्दन या पारितोषिक मिलने की जिज्ञासा होती है। यदि इस भाव में वृष राशि में बुध हो, तो पृच्छक की इच्छा पूर्ण होती है, किन्तु तुला राशि में उसे कदम-कदम पर रुकावटें और व्यर्थ का विरोध उठाना पड़ता है।

दशम स्थान में बुध हो, तो अध्यापन लेखन, सम्पादन, प्रकाशन या अनुसन्धान का प्रश्न होता है। मीन राशि में बुध होने पर धार्मिक, सामाजिक या सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में भी चिन्ता होती है। यह बुध स्वराशि या मित्र राशि में शुभ ग्रहों के साथ हो, तो उक्त कार्यों में सफलता मिलती है।

यदि लाभ स्थान में बुध स्थित हो, तो व्यक्ति मुख्यत: व्यापार के बारे में पूछता है। व्यापार की विभिन्न समस्याओं के साथ किसी व्यक्ति का सहयोग प्राप्त करने की इच्छा प्रमुख रूप से होती है। यदि इस बुध पर शुभ ग्रहों की दृष्टि, हो, तो व्यापार की सब समस्याओं का समाधान होने से साथ-साथ व्यवसाय में प्रगति होती है।

व्यय स्थान में बलवान् बुध होने पर, प्रपंच, पाखण्ड, ढोंग, षड्यंत्र, विद्रोह या कूटनयिक गतिविधियों के बारे में प्रश्न होता है। पृच्छक स्वयं चुस्त-चालाक, व्यावहारिक एवं हाजिर जवाब होता है। वह कुछ लोगों का सहयोग चाहता है। इस स्थान में नीच और शत्रु राशि में बुध होने पर ऋण से मुक्त होने का भी प्रश्न होता है।

गुरु एवं प्रश्न

प्रश्नकालीन लग्न में बलवान् गुरु हो, तो मनुष्य नौकरी, धन लाभ या सरकारी काम की चिन्ता करता है। इस योग में पृच्छक व्याकुल एवं खिन्न होते हुए भी स्वयं को सन्तुलित रखने का प्रयास करता है: उसका मनोबल एवं उत्साह बना रहता है। तुला एवं मकर का गुरु होने पर नौकरी, मेष या कर्क में

होने पर धन लाभ और सिंह या वृश्चिक राशि में होने पर सरकारी काम की चिन्ता होती है।

यदि गुरु दूसरे स्थान में हो, तो व्यक्ति धन सम्पत्ति, उच्च पद, उपाधि एवं बड़े कारोबार की चिन्ता करता है। इस योग में मनुष्य विद्वान् या बुजुर्ग आदमी से मिलकर आता है। यदि गुरु नीच या शत्रु राशि में न हो, तो प्रश्नकर्त्ता को प्रष्टव्य कार्य में सफलता मिलती है। इस भाव में धनु राशि में स्थित गुरु विशेष रूप से शुभ फल देता है। यदि वह मीन राशि में हो, मात्र धन लाभ होता है।

प्रश्न कुण्डली में तीसरे स्थान में गुरु हो, तो मनुष्य साहसिक, उत्साहपूर्ण एवं प्रयत्न साध्य कार्य के बारे में पूछता है। मंगल के साथ होने पर जोखम के धन्धे का प्रश्न होता है। उसे भाई एवं इष्ट मित्रों का सहयोग मिलता है। परिणामतः उसे कार्य में सफलता मिलती है। इस स्थान में चर राशि में गुरु होने पर देवालय, तीर्थ-स्थान या ऐतिहासिक नगरों की यात्रा होती है।

यदि चतुर्थ स्थान में गुरु बैठा हो, तो व्यक्ति भाई का विवाह, जमीन-जायदाद या वाहन खरीदने का प्रश्न करता है। इस योग में पृच्छक किसी अन्य काम को जाते-आते रास्ते में ज्योतिषी के पास आकर प्रश्न करता है। वह कुछ मिठाई खाने का विचार भी करता है। इस स्थान में चर राशि में गुरु होने पर वाहन, स्थिर राशि में होने पर जायदाद का लाभ होता है। द्विस्वभाव राशि-गत गुरु वैवाहिक या मांगलिक कार्य कराता है।

प्रश्न-काल में पंचम स्थान में गुरु हो, तो मनुष्य सन्तान, सन्तान की शिक्षा या सन्तान के विवाह का प्रश्न करता है। गुरु पुत्र सन्तति का प्रतिनिधि ग्रह माना गया है, अतः इस योग में पुत्र-विषयक प्रश्न होता है। उस समय व्यक्ति गम्भीर मुद्रा

में होता है। कई दिन से विचार करता हुआ अन्त में अपनी शंका या समस्या का समाधान कराने के लिए ज्योतिषी के पास आता है। यदि ऐसे गुरु का बलवान् लग्नेश का साथ सम्बन्ध हो, तो विचारणीय प्रश्न का परिणाम अनुकूल रहता है।

यदि प्रश्न लग्न से छठे स्थान में गुरु हो, तो व्यक्ति को पशु पालन की चिन्ता होती है। यदि इस स्थान में गुरु अपनी राशि में हो, तो ज्योतिषी से सावधानीपूर्वक चर्चा करनी चाहिए, क्योंकि इस योग में पृच्छक प्रतिशोध और प्रतिक्रिया जैसी भावनाओं से ग्रस्त होता है। उसमें श्रद्धा या आस्था जैसी कोई भावना नहीं होती। हमारा अनुभव है कि इस योग में ज्योतिषी का अपना पक्ष निर्बल रहता है। इसलिए अपेक्षित है कि इस योग का कोई महत्त्वपूर्ण फलादेश नहीं करना चाहिए। इस समय व्यावहारिक चर्चा कर निर्णय आगे के लिए टाल देना चाहिए।

प्रश्न के समय यदि गुरु सातवें स्थान में हो, तो पृच्छक विवाह या व्यापार के बारे में प्रश्न करता है। इस स्थान में गुरु अपनी राशि में हो, तो प्रश्न मुख्य रूप से विवाह-विषयक होता है। धनु और मीन के अलावा अन्य राशि में गुरु हो, तो व्यापार के बारे में प्रश्न होता है। इस योग में व्यक्ति अपने निजी प्रयास से कार्य में सफलता प्राप्त करता है। उसे यश एवं सम्मान के साथ अच्छा लाभ होता है, किन्तु इस स्थान में तुला और मकर राशि में स्थित गुरु शुभ फल नहीं देता। अधिकांशतया इस योग में रोग-विषयक प्रश्न होता है तथा पेट में दर्द, गैस, जिगर या गुर्दे में कोई विकार रहता है। मंगल के साथ गुरु होने पर रोगी का आपरेशन होता है।

अष्टम स्थान में गुरु होने पर व्यक्ति कृपण से या काफी दिनों से फँसे धन की वसूली के बारे में प्रश्न करता है। इस स्थान में मेष राशि में गुरु होने पर मकान, जायदाद या वाटिका आदि

खरीदने का विचार होता है तथा मिथुन राशि में गुरु होने पर मनुष्य यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, योग, दर्शन, ज्योतिष एवं कामशास्त्र जैसे गूढ़ विषयों के बारे में सोचता है। इन २ राशियों के अलावा अन्य राशि में गुरु होने पर प्रायः ऋण-विषयक प्रश्न होता है, तथा लग्नेश के बलवान् होने पर पृच्छक स्वयं ऋण-ग्रस्त होता है, किन्तु लाभेश के बलवान् होने पर वह दिये हुए कर्जे को वसूल करने की चिन्ता करता है।

नवम स्थान में गुरु बैठा हो, तो विदेश-व्यापार, विदेशी-मुद्रा या औद्योगिक अनुसंधान जैसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न होते हैं। इस योग में पृच्छक बुद्धिमान् एवं प्रभावशाली व्यक्ति होता है। प्रष्टव्य कार्य में जरूरत से ज्यादा समय लग जाने के कारण वह चिन्तित होता है। यदि गुरु चर राशि में हो, तो व्यक्ति को शीघ्र सफलता मिलती है। चर राशियों में भी मेष एवं कर्क अधिक महत्त्वपूर्ण माननी चाहिए। इन दोनों राशियों में से किसी एक में उक्त स्थान में गुरु होने पर प्रश्नकर्त्ता का मनोरथ शीघ्र पूर्ण होता है। इस स्थान में स्वराशिगत गुरु पर लग्नेश की दृष्टि होने पर भी उक्त कार्यों में शीघ्र सफलता मिलती है।

दशम स्थान में बलवान् गुरु होने पर व्यक्ति सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक या सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में प्रश्न करता है। इस योग में संसद, विधान सभा, विधान परिषद्, स्थानीय शासन निकाय, स्वशासी संस्था, संगठन एवं विभिन्न आयोगों में महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करने की जिज्ञासा रहती है। यदि इस स्थान में कर्क या धनु राशि में गुरु और चन्द्रमा स्थित हो, तो व्यक्ति को प्रभाव, प्रतिष्ठा एवं अधिकार के साथ-साथ उच्च पद मिलता है। कन्या और धनु राशिगत गुरु क्रमशः सूर्य और मंगल के साथ बैठा हो तथा लग्नेश या बलवान् शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो मन्त्री पद मिलता है। इस भाव में द्विस्वभाव

राशि होने पर प्रायः परिणाम शुभ रहता है।

यदि ११वें स्थान में गुरु हो, तो धन, सन्तान या स्त्री की चिन्ता होती है। इसमें धनु राशि में गुरु हो, तो धन लाभ की चिन्ता और कन्या राशि में गुरु हो, तो सन्तान की चिन्ता कहनी चाहिए। मेष राशि का गुरु इस स्थान में बैठा हो, तो निश्चित रूप से स्त्री की चिन्ता होती है। यदि मीन राशि में गुरु स्थित हो, तो व्यापार या कारोबार में रुकावटें अथवा हानि से प्रश्न-कर्त्ता परेशान होता है। सामान्यतया इस भाव के गुरु का फल शुभ होता है।

यदि प्रश्न काल में १२वें स्थान में गुरु हो, तो जमीन-जायदाद के खरीदने या बेचने की चिन्ता होती है। इस स्थान में धनु राशि का गुरु हो, तो जायदाद की बिक्री और मीन राशि का गुरु हो, तो खरीद कराता है। इस भाव में मित्र या उच्च राशि का गुरु होने पर ससुर से लाभ होता है। अन्य किसी राशि में गुरु होने पर व्यय मूलक प्रश्न होता है। उक्त योग में यदि गुरु पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो उत्सव एवं मांगलिक कार्यों पर व्यय होता है, अन्यथा झगड़ा-झंझट और विवाद में व्यय होता है।

शुक्र और प्रश्न

यदि बलवान् शुक्र प्रश्न लग्न में स्थित हो, तो व्यक्ति साहित्य, कला, प्रेम (रोमांस) या भोगोपभोग-विषयक प्रश्न करता है। इस योग में प्रश्नकर्त्ता अपनी पत्नी, प्रेमिका, भाभी, साली या किसी अन्य स्त्री से प्रेम या विनोद की बातें कर अथवा नाटक, थियेटर, सिनेमा, चित्रशाला या अन्य दर्शनीय स्थान होकर ज्योतिषी के पास आता है। वह महत्त्वाकांक्षी, शौकीन, भावुक, सौंदर्य प्रेमी या बड़प्पन की भावना रखता है।

द्वितीय भाव में शुक्र हो, तो मनुष्य रतिकलह, स्त्री के कारण

विवाद, तलाक या स्त्री की मृत्यु के बारे में पूछता है। इस स्थान में वृष या तुला राशि में शुक्र हो, तो यह विवाद क्षणिक होता है, किन्तु अन्य राशि में होने पर विवाद कुछ दिन चलता है। यदि शुक्र पर पापग्रहों या व्ययेश और अष्टमेश की दृष्टि हो, तो स्त्री से सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है। तात्पर्य यह है कि पृच्छक का किसी स्त्री से प्रणय-सम्बन्ध हो, तो वह असफल प्रेम रहता है। विवाहिता पत्नी से तलाक या उसकी मृत्यु हो जाती है।

प्रश्न लग्न से तीसरे स्थान में शुक्र हो, तो गर्भिणी पत्नी या भाई/बहिन के विवाह की चिन्ता होती है। शुक्र और मंगल का योग होने पर गर्भपात्त होता है, किन्तु यदि शुक्र और मकर दोनों मीन राशि में हों, तो भाई का शीघ्र विवाह होता है। इस योग का प्रश्नकर्त्ता अविश्वासी होता है। वह किसी दबाव के कारण ज्योतिषी के पास आकर अपने प्रश्न की चर्चा करता है और प्रायः अन्यमनस्क-सा रहता है।

यदि चतुर्थ स्थान में शुक्र हो, तो व्यक्ति शौकीन मिजाज होता है और वह मकान बनाने का विचार करता है। इस स्थान में बुध और शुक्र का योग होने पर बाग-बगीचा, वाटिका तथा खेती का प्रश्न होता है। शुक्र और चन्द्रमा का योग होने पर डेरी फार्म का व्यवसाय या दुधारु पशु के विषय में प्रश्न होता है।

पंचम स्थान में शुक्र होने पर प्रश्नकर्त्ता विद्वान और साहित्यिक रुचि वाला होता है। वह कवि, संगीतज्ञ, सम्पादक, लेखक या पत्रकार हो सकता है। साधारण पढ़ा-लिखा होने पर भी वह कविता, संगीत और नृत्य का शौकीन होता है। इस योग से सम्पन्न व्यक्ति नाटक, थियेटर, सर्कस, सिनेमा या फिल्म उद्योग की चिन्ता करता है। यदि इस स्थान में वृष राशि में शुक्र और चन्द्र का योग हो, तो पृच्छक को फिल्म उद्योग में महान् सफलता मिलती है। दौलत और शौहरत शीघ्र ही उसके कदम

चूमती है।

प्रश्न कुण्डली में छठे स्थान में शुक्र हो, तो परस्त्री संग के विवाद का प्रश्न होता है। स्वराशि या उच्च राशि में शुक्र होने पर प्रश्नकर्त्ता और उसकी पत्नी में से किसी एक की तबीयत खराब होती है। इस योग में वीर्य विकार, नपुंसकता, कमजोरी, प्रदर, प्रमेह एवं गुप्त रोग होते हैं। प्रश्नकर्त्ता रोग के विषय में सीधे चर्चा न कर उसके फलितार्थ या लक्षण के बारे में कहता है। इस स्थान में शुक्र और मंगल का योग अनिष्टकारी होता है।

सप्तम स्थान में शुक्र होने पर मनुष्य मुख्यतया प्रेम या विवाह का प्रश्न करता है। वह शीघ्र विवाह करने का इच्छुक होता है, किन्तु इसमें पारिवारिक व्यक्तियों के विरोध से वह चिंतित होता है। चर राशि में शुक्र होने पर व्यक्ति को व्यभिचार या परस्त्री गमन का दोष लगता है।

अष्टम स्थान में शुक्र होने पर व्यक्ति विदेश-यात्रा या वियोग से चिन्तित होता है। मकर राशि में शुक्र होने पर समद्री-यात्रा होती है, किन्तु वृश्चिक राशि का शुक्र यात्रा में दुर्घटनाकारक होता है। अन्य राशियों में शुक्र रहने पर प्रायः पति एवं पत्नी में मन-मुटाव रहता है और उसका दाम्पत्य-जीवन कष्टमय बन जाता है।

नवम स्थान में बलवान् शुक्र हो, तो व्यक्ति मारण, सम्मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, विद्वेषण या षड्यन्त्र का विचार करता है। इस प्रकार के कार्य-प्रयोग के लिए वह अधीर या आतुर दिखाई देता है। यदि शुक्र के साथ गुरु मीन राशि में हो, तो पृच्छक भाग्योदय, धार्मिक या सामाजिक कार्यों का विचार करता है। यद्यपि शुक्र एवं गुरु के इस योग में किसी तान्त्रिक प्रयोग करने का विचार नहीं होता, किन्तु यदि इस योग में कोई तन्त्र, मन्त्र या यन्त्र आदि प्रयोग-सिद्धि की जाये तो सफलता अवश्य

मिलती है।

दशम स्थान में शुक्र बैठा हो, तो व्यक्ति किसी पढ़ी-लिखी और सरकारी सेवा में नियोजित लड़की-स्त्री से विवाह का विचार रखता है और इस प्रकार दम्पत्ति मिलकर आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होकर सुन्दर और सुसज्जित भवन में सुखमय जीवन व्यतीत करने की सोचते हैं। यदि इस स्थान में स्वराशि या मूलत्रिकोण राशि का शुक्र हो, तो वह इच्छा पूरी होती है।

एकादश स्थान में बलवान् शुक्र होने पर व्यक्ति काले धन्धों से धनार्जन करता है। यदि इस स्थान में कन्या राशि में शुक्र हो, तो वह वेश्यालय या अन्य योनि-व्यापार करता है। मिथुन और वृश्चिक राशि का शुक्र होने पर वह तस्करी या अन्य अवैध और अनैतिक कार्य करता है। इस कार्य में महिलाओं का साथ और सहयोग मिलता है। जलचर राशि में शुक्र होने पर शराब या अन्य मादक पदार्थों का व्यापार करने का विचार होता है।

यदि शुक्र १२वें स्थान में हो, तो वह राजदण्ड या पुलिस की कार्यवाही से चिन्तित होता है। शुक्र और मंगल के योग में वह निर्दोष होते हुए भी किसी अभियोग में फँसा दिया जाता है। चर राशि में शुक्र होने पर दस्यु (डाकू) या पेशेवर बदमाशों से पीड़ित होता है। इस योग में अधिकांशतया डकैती या अपहरण की घटनाएँ घटती हैं।

शनि और प्रश्न

प्रश्न कुण्डली में बलवान् शनि लग्न में स्थित हो, तो व्यक्ति चालाक, धूर्त, संयमी (रिजर्व) व्यावहारिक (प्रैक्टीकल), नीतिज्ञ (डिप्लोमेट) एवं गम्भीर स्वभाव का होता है। वह अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से न बताकर छल या प्रकारान्तर से अपना मन्तव्य प्रकट करता है। इस योग में व्यक्ति मुख्यतः व्यावसायिक

प्रश्न करता है। कारोबार में आई अड़चनों के बावजूद भी वह धैर्य एवं संशय नहीं छोड़ता।

प्रश्न काल में यदि द्वितीय स्थान में शनि हो, तो व्यक्ति मुख्यतया पैसा कमाने के लिए चिन्तित होता है। आय का निश्चित स्रोत होने के बावजूद भी व्यय-भार अधिक होने के कारण बचत कम होती है। परिणामतः उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत न होने के कारण वह चिन्तित होता है। इस योग में पृच्छक महत्त्वाकांक्षी और अहंमानी होता है। उसके आर्थिक मूल्य एवं व्यावहारिक बुद्धि के कारण उसे सन्तोष नहीं मिलता।

यदि तृतीय स्थान में शनि बैठा हो, तो मनुष्य घरेलू विवाद, बच्चों की बीमारी या प्रतिष्ठा को आघात लगने से चिन्तित होता है। इस योग में प्रश्नकर्त्ता का मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं होता। वह घबराहट और मजबूरी से स्वयं को लाचार समझता है। कभी-कभी रोजमर्रा की इन परेशानियों से तंग आकर वह आत्महत्या का भी विचार करता है, अतः ज्योतिषी को चाहिए कि वह उसके साथ सहानुभूति एवं सांत्वनापूर्ण व्यवहार करे।

चतुर्थ स्थान में शनि होने पर मनुष्य मुकद्दमा या किसी अन्य विवाद के बारे में प्रश्न करता है। वह काफी दिन चिन्तित और मिलने की इच्छा करता हुआ भी विवशता और तंगी के कारण ज्योतिषी से नहीं मिल पाता। इसमें प्रश्नकर्त्ता प्रायः बगैर कुछ खाये-पिये आता है। केवल मकर राशि में शनि होने पर उसे शीघ्र सफलता मिलती है। अन्य राशियों में शनि होने से विवाद या मुकद्दमे का फैसला शीघ्र नहीं होता।

पंचम स्थान में शनि होने पर मनुष्य प्रायः द्विविधा में होता है। उसके मन में दो समानान्तर प्रश्न होते हैं और कौन-सा प्रश्न पहले किया जाये, इसका वह फैसला नहीं कर पाता। इस योग में परीक्षा में असफलता, सन्तान प्रगति या बीमारी, गर्भपात,

नौकरों का असहयोग एवं व्यापार में हानि जैसे प्रश्न अनुभव किये गये हैं। हमारा अनुभव है कि इस योग में पृच्छक एक प्रश्न अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में और दूसरा कार्य-क्षेत्र के बारे में करता है। व्यक्तिगत जीवन का प्रश्न भय या शंकामूलक और कार्य-क्षेत्र का प्रश्न हानि या विवादमूलक होता है।

प्रश्न लग्न से छठे स्थान में शनि बैठा हो तो व्यक्ति शत्रु, दुर्घटना, षड्यन्त्र, राज भय या रोग जैसे भयंकर प्रश्नों से चिन्तित होता है। इस प्रकार की परेशानियाँ आकस्मिक रूप से उत्पन्न होने के कारण वह इसे बर्दाश्त नहीं कर पाता और मन में काफी भयभीत होता है। इस स्थान में स्वराशि, उच्च राशि और शुभ ग्रहों के साथ शनि होने पर नुकसान होता है तथा शत्रु या नीच राशि में पाप ग्रहों से साथ होने पर परिणाम अनुकूल रहता है।

यदि सप्तम स्थान में शनि हो, तो यात्रा में विफलता, धन का अपहरण, पत्नी से मतभेद और विदेश व्यापार में घाटा होता है। इस स्थान में शनि बने कार्यों में बाधा डालता है। अचानक उत्पात और विघ्न पैदा करता है। व्यक्ति प्रमाद या आलस्यवश समस्याओं का समय पर समाधान न करने के कारण चारों ओर से विपत्ति में फँस जाता है।

प्रश्न काल में ८वें स्थान में शनि हो, तो सामान्यतया चोरी, अपहरण या घर से भागे हुये व्यक्ति का प्रश्न होता है। इस प्रश्न का विचार सावाधानी और गम्भीरतापूर्वक करना चाहिए। आगे के अध्याय में इस प्रश्न का सर्वाङ्गीण विचार किया जायेगा, अतः पाठक बन्धु कृपया इसका विस्तृत मनन कर निष्कर्ष रूप में फल का निश्चय करें।

नवम स्थान में बैठा हुआ शनि उन्नति एवं परिवार के मंगल कार्यों में विघ्न डालता है, अतः इस योग में मनुष्य

भाग्योदय, प्रगति, पदोन्नति या परिवार के किसी सदस्य की शादी आदि के बारे में चिन्तित रहता है। इन सब परेशानियों का व्यवहारिक कारण मिथ्यापवाद और व्यक्ति की स्वयं की उपेक्षा बुद्धि होती है। मिथुन और मकर इन राशियों में शनि होने पर पृच्छक का मनोरथ पूर्णरूपेण सफल होता है, अन्यथा नहीं।

दशम स्थान का शनि बेरोजगारी के कारण व्यक्ति को चिन्तित करता है। पूरी कोशिश करने के बावजूद भी उसे उचित रोजगार नहीं मिलता और कदाचित् उसे कार्य मिल जाता है तो उसमें स्थिरता नहीं रहती। इस योग में कर्मचारी व्यापारी एवं उद्योगपति सभी को हानि उठानी पड़ती है। तात्पर्य यह कि श्रमिक को बेरोजगारी, व्यापारी को मन्दी और उद्योगपति को हड़ताल या तालाबन्दी से परेशानी प्रायः इस योग में अनुभव की गई है। इस स्थान में केवल कुम्भ राशि का शनि शुभ होता है।

यदि शनि ११वें स्थान में बैठा हो, तो लोकापवाद राजनैतिक असफलता, चुनाव में हार, भ्रष्टाचार का अभियोग या किसी कमजोरी का पर्दाफाश हो जाने से व्यक्ति चिन्तित होता है। इस भाव में केवल सिंह राशि में बुध या शुक्र के साथ बैठा शनि इन परिस्थितियों से व्यक्ति को निकालकर प्रगति कराता है।

प्रश्न लग्न से १२वें स्थान में शनि होने पर दीर्घकालीन रोग या रोजगार में मन्दी की चिन्ता होती है। इस स्थान में मिथुन एवं कर्क राशि का शनि अनिष्टकारक होता है। इस स्थिति में व्यक्ति की परेशानियों का कोई समाधान नहीं निकल पाता। इस योग में, लकवा, अधरंग, पोलियो एवं दिमागी नस फटने से रक्त-स्राव या रक्त कैंसर जैसी भयंकर असाध्य बीमारियाँ होती हैं। केवल नीच राशि में शनि होने पर पृच्छक इन व्याधियों से सुरक्षित बनता देखा गया है।

राहु और प्रश्न

प्रश्न कुण्डली में प्रश्न लग्न में बलवान् राहु स्थित हो, तो व्यक्ति बीमारी और कारोबार में रुकावट से परेशान होता है। इस योग में प्रश्नकर्त्ता प्रायः उद्विग्न एवं अन्यमनस्क रहता है। पेट में दर्द, अपचन, अरुचि, सिर-दर्द या एलर्जी की शिकायत रहती है। इस भाव में मिथुन और कन्या राशि का राहु परिणाम में शुभ फलदायक होता है। अन्य राशियों में राहु होने पर पृच्छक अचानक और अप्रत्याशित रूप से परेशानियाँ उत्पन्न होने के कारण अधिक चिन्तित होता है।

यदि दूसरे स्थान में राहु बैठा हो, तो मनुष्य पारिवारिक मतभेद, संयुक्त परिवार में विघटन, पैतृक सम्पत्ति का विभाजन या अपनी जाति के किसी विवाद से पीड़ित होता है। ये सब परेशानियाँ काफी दिन तक रुक-रुककर चलती रहती है। यदि इस स्थान में धनु राशि में गुरु के साथ राहु हो, तो पृच्छक को अपनी परेशानी एवं समस्या का समाधान मिलता है और उसे लाभ भी होता है, अन्यथा इन विवादों में उसका समय-परिश्रम और शक्ति व्यर्थ में नष्ट होती है।

तृतीय स्थान में चर राशि में राहु हो, तो व्यक्ति यात्रा के बारे में प्रश्न करता है। यह यात्रा व्यवसायिक होती है। यदि स्थिर या द्विस्वभाव राशि में राहु हो तब भी यात्रा का ही प्रश्न होता है, किन्तु इस योग यात्रा में अचानक रुकावटें आने के कारण पृच्छक यात्रा की तिथि निश्चित कर देने के बाद भी नहीं जा पाता।

प्रश्न काल में चतुर्थ स्थान में राहु बैठा हो, तो व्यक्ति बेरोजगारी के कारण रोजी और रोटी को चिन्तित होता है। शिक्षा-दीक्षा एवं कार्य-कुशलता होने पर भी उसे काफी दिन से उचित काम नहीं मिलता। यदि तुला या मकर राशि में राहु

क्रमशः गुरु और बुध के साथ स्थित हो तो पृच्छक को ३६ दिन के भीतर उचित कार्य मिल जाता है, अन्यथा उसे कुछ दिन और प्रतिक्षा करनी पड़ती है।

पंचम स्थान में राहु हो, तो मनुष्य अध्ययन, लेखन, सम्पादन, प्रकाशन या अनुसन्धान में आने वाली रुकावटों से परेशान होता है। अपनी भावुकता, उपेक्षापूर्ण स्वभाव, दूसरों पर आवश्यकता से अधिक विश्वास या निर्भरता तथा कुछ लोगों का अज्ञात कारणों से विरोध होने के कारण वह प्रगति नहीं कर पाता। कभी-कभी वह इन कार्यों से हाथ खींच लेने का विचार करता है। इस स्थान में मिथुन और कन्या राशि में बुध से दृष्ट राहु होने पर ही उक्त कार्यों में सफलता मिलती है, अन्यथा नहीं।

प्रश्न लग्न से छठे स्थान में राहु होने पर प्रश्नकर्त्ता को प्रचलित विवाद या मुकद्दमे में सफलता मिलती है, किन्तु उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता या रोजगार में मन्दी रहती है। इस योग में अधिकांशतः तीव्र दर्द, एलर्जी, पथरी या दौरा पड़ने का रोग होता है। पाप ग्रहों के साथ राहु होने पर कुछ समय में रोग ठीक हो जाता है, किन्तु आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार नहीं होता।

सप्तम स्थान में राहु होने पर प्रश्नकर्त्ता प्रत्येक कार्य में विरोध और विलम्ब होने से परेशान होता है। पारिवारिक सदस्यों का असहयोगी या उपेक्षापूर्ण व्यवहार उसे विशेष रूप से खलता है। इस योग में व्यक्ति परिवार या परिचितों से अधिकांशतः अलग-थलग देखा जाता है। इस स्थान में द्विस्वभाव राशि में बुध या गुरु की दृष्टि होने पर व्यक्ति अपने कार्य में अवश्य सफल हो जाता है, अन्यथा नहीं।

अष्टम स्थान में राहु बैठा हो, तो मनुष्य चेचक, मलेरिया और हैजा जैसे संक्रामक रोग या किसी आकस्मिक दुर्घटना का

शिकार हो जाता है। इस प्रश्न में राहु और मंगल का योग हो जाने पर जल जाने या दुर्घटना में चोट लग जाने की अधिक सम्भावना रहती है। ऐसी स्थिति में अष्टमेश एवं व्ययेश के द्वारा जीवन-मरण का निश्चय कर षष्ठेश के द्वारा रोग की कालावधि का निर्णय कर लेना चाहिए। हमारा अनुभव है, लग्नेश एवं अष्टमेश में परिवर्तन (एक दूसरे के स्थान) योग तथा व्ययेश शुभ ग्रह के त्रिक् स्थान में बैठने पर रोगी की मृत्यु हो जाती है, अन्यथा लग्नेश और चन्द्रमा के बलवान् या शुभ ग्रहों से दृष्टयुत होने पर रोगी ठीक हो जाता है। इस प्रश्न में चर राशि अशुभ और स्थिर एवं द्विस्वभाव राशि शुभ होती है।

प्रश्न के समय नवम स्थान में बैठा हुआ राहु प्रगति की चिन्ता करता है। पृच्छक कुछ लोगों के व्यक्तिगत्त विरोध, स्वार्थ या षड्यंत्र का शिकार होता है। इस प्रश्न में प्रगति का एकमात्र उपाय तांत्रिक विधि से उपासना है, अतः पृच्छक को अपने इष्टदेव में पूर्ण श्रद्धा रखकर समक्ष एवं मनोयोग के साथ तांत्रिक प्रयोग करना चाहिए।

दशम स्थान का राहु कार्य क्षेत्र में विवाद एवं अभियोग आदि से व्यक्ति को परेशान करता है। नौकरी करने वाले कर्मचारी और अधिकारी इस योग में जाँच कमेटी/कमीशन के सामने आते हैं। अधिकांश लोग मुअत्तिल हो जाते हैं। अधिकारी वर्ग से तनाव एवं असहयोग रहता है। यदि इस योग में दशमेश और नवमेश बलवान् न हों, तो व्यक्ति को नौकरी छोड़नी पड़ती है। व्यापार या उद्योग में लगे व्यक्ति, आय-कर, सम्पत्ति-कर, कोटा-परमिट या अन्य किसी अनियम्त्ति गतिविधि में पकड़े जाते हैं तथा उनके विरुद्ध प्रमाण होने के कारण उनके प्रति सरकारी रुख कड़ा रहता है।

यदि लाभ स्थान में राहु बैठा हो, तो मनुष्य व्यापारिक या

आर्थिक लेन-देन के विवाद में फँसा होता है। साहूकारों का कर्जा, बैंकों का अग्रिम भुगतान (एडवांस), फाइनेंस कम्पनियों के विवाद और सरकारी ऋण से सम्बन्धी विभिन्न मुकद्दमे इसी योग में अनुभव किए गए हैं। इस योग में यदि लाभेश और लग्नेश में सम्बन्ध या मित्रता हो, तो ऐसे विवादों में समझौता हो जाता है और व्ययेश या अष्टमेश के साथ राहु होने पर आर्थिक हानि होती है।

व्यय स्थान में बैठा हुआ राहु चोरी, गबन, धोखा या राहजनी से हानि पहुँचाता है। इस प्रकार से गए हुए द्रव्य की पुनः प्राप्ति के योगों का विस्तारपूर्वक विवेचन आगे किया जाएगा। पाठक बन्धुओं को चाहिए कि वे चोर, चोरी गया पदार्थ, चोरी का स्थान और पुनः प्राप्ति का योग इन चारों पक्षों का अच्छी तरह विचार कर इस प्रश्न का फलादेश कहें।

केतु और प्रश्न

यदि प्रश्न लग्न में बलवान् केतु बैठा हो, तो पृच्छक उद्विग्न मन से आता है तथा कोई काम करना भूल जाता है, अतः काम का स्मरण आने पर वह तुरन्त जाने का विचार करता है। उस समय वह अस्थिर चित्त और व्यग्र-सा होने के कारण क्या प्रश्न किया जाए, इसका निर्णय नहीं कर पाता, अतः ज्योतिषी को चाहिए कि इस योग में पृच्छक का फल बगैर विचारे उससे पुनः आने को कहे।

द्वितीय स्थान में केतु स्थित हो, तो व्यक्ति किसी स्त्री से लड़ाई-झगड़ा या गाली-गलौज करके आता है। उसे किसी व्यक्ति के चरित्र, आचरण, व्यवहार या विश्वसनीयता पर सन्देह होता है, जो अधिकांशतया अतिरंजित होता है। वस्तुतः इस योग में पृच्छक पूर्वाग्रही या पक्षधर होने के कारण विवेक, बुद्धि एवं संयम से काम नहीं लेता, अतः इस प्रश्न में पृच्छक को

उसका बहम तथा उसकी मनःस्थिति समझा देनी चाहिए।

तृतीय स्थान में केतु होने पर मनुष्य किसी नए कार्य का प्रारम्भ करना चाहता है और इसकी शुरूआत करने की पूरी तैयारी करने के बाद केवल मूहूर्त पूछने या ज्योतिषी की राय लेने आता है, अतः इस योग में कार्य-सिद्धि के योग का विचार कर कार्य को प्रकृति के अनुसार शुभ मुहूर्त बतला देना चाहिए।

चतुर्थ स्थान में केतु हो, तो व्यक्ति किसी प्रतियोगिता, टूर्नामेंट या चयन में सफलता का प्रश्न पूछता है। इस योग में चतुर्थेश एवं भाग्येश, लग्नेश की केतु पर दृष्टि होने पर उसे सफलता मिलती है।

यदि पंचम स्थान में केतु बैठा हो, तो मनुष्य काफी समय से प्रचलित मुकद्दमा या कानूनी दाँव-पेच से परेशान होता है। उसे अपने भविष्य पर सन्देह होता है तथा वह इस प्रपञ्च से मुक्त होकर अपना समय किसी अन्य कार्य में लगाना चाहता है। बुद्धि कुण्ठित होने के कारण भविष्य में इस विवाद का सामना करने या न करने का निर्णय नहीं कर पाता। इस योग में जय-पराजय का विचार कर फलादेश कहना चाहिए।

यदि षष्ठ स्थान में केतु हो, तो प्रश्नकर्त्ता मामा, मौसी आदि के विवाद या बीमारी से परेशान होता है। ननसाल की सम्पत्ति को लेकर व्यर्थ का विवाद खड़ा होता है। शुभ ग्रहों के साथ केतु होने पर चर्म रोग, एलर्जी, अपचन या वीर्य विकार जैसे रोग होते हैं। इस स्थान में पाप ग्रहों की स्थिति शुभ फलदायक और शुभ ग्रहों की स्थिति कष्टप्रद होती है।

सप्तम स्थान में केतु होने पर पत्नी से सम्बन्धित प्रश्न होता है। इस स्थान में बैठे केतु पर गुरु की दृष्टि हो, तो पत्नी गर्भवती होती है। मंगल की दृष्टि होने पर गर्भपात या माहवारी में शिकायत रहती है। यदि शुक्र के साथ केतु हो, तो विवाह या

प्रेम-विषयक प्रश्न होता है।

अष्टम स्थान का केतु रोग एवं कष्ट की चिन्ता से पीड़ित करता है। इस योग में अण्डकोष में वृद्धि, मूत्राशय में विकार, पथरी एवं अन्य गुप्त रोग होते हैं। मंगल के साथ होने पर ऑपरेशन होता है।

प्रश्न लग्न से नवम स्थान में केतु होने पर यात्रा में दुर्घटना, अपहरण या चोरी होती है। इस स्थान में यदि केतु शुभ ग्रहों के साथ हो, तो देवदोष और पाप ग्रहों के साथ हो, तो भूत-प्रेत आदि की बाधा होती है।

दशम स्थान का केतु व्यक्ति चरित्र पर आक्षेप, कलंक या मिथ्यापवाद से चिन्तित करता है। इस योग में व्यक्ति अपनी साधारण-सी गलती के कारण बदनाम हो जाता है। सामाजिक और व्यावसायिक क्षेत्र में फैले इस लोकापवाद से उसे काफी हानि होती है। इस योग का फलादेश करने से पूर्व प्रश्नकर्त्ता की जन्म कुण्डली और वर्षफल के अनुसार वर्तमान ग्रह दशा का आवश्यक रूप से विचार कर लेना चाहिए।

यदि एकादश स्थान में केतु हो, तो मुख्य रूप से आर्थिक प्रश्न होता है। इसका फलादेश लाभालाभ के योगों को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

व्यय स्थान में बैठा हुआ केतु नई संस्था का गठन करता है। यदि यह कन्या राशि में बुध के साथ हो, तो संस्था अच्छा कार्य करती है और काफी दिन चलती है। वृश्चिक और सिंह राशि में केतु के होने पर इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं से टकराव या संघर्ष होता है। लग्नेश और चन्द्रमा बलवान् होने पर उद्देश्य में सफलता मिलती है।

अध्याय ६

२. भाव सिद्धान्त

प्रश्न के प्रतिनिधि भाव का निर्णय इस प्रकार से करना चाहिए--

(१) बलवान् लग्नेश या लाभेश से चन्द्रमा जिस स्थान में बैठा हो, उस भाव से सम्बन्धित प्रश्न पृच्छक के मन में होता है।

(२) लग्नेश और लाभेश इन दोनों की अपेक्षा चन्द्रमा बलवान् हो, तो चन्द्रमा से लग्नेश जिस स्थान में बैठा हो, उस भाव से सम्बन्धी चिन्ता पृच्छक के मन में होती है।

(३) चतुर्थेश, लाभेश और चन्द्रमा तीनों निर्बल हों, तो प्रश्न कुण्डली में उच्च राशिगत ग्रह या सबसे अधिक बलवान् ग्रह लग्न से जिस भाव में बैठा हो, उस भाव-सम्बन्धी प्रश्न प्रश्नकर्त्ता के मन में होता है।

(४) यदि चन्द्रमा ही लग्नेश या लाभेश हो, तो वह लग्न से जिस भाव में बैठा हो, उस भाव की चिन्ता कहनी चाहिए। यह अपवाद योग है, अतः प्रश्न कुण्डली में इस योग के होने पर पूर्वोक्त तीनों प्रकारों से विचार न कर मात्र चन्द्रमा की स्थिति से भाव का निश्चय कर लेना चाहिए।

इस सिद्धान्त के अनुरूप व्यक्ति के प्रश्न का निश्चय लग्न आदि १२ भावों के आधार पर किया जाता है। यहाँ भाव की गणना कभी लग्न और कभी किसी ग्रह से की जाती है।

उदाहरण १—दि० १५ जुलाई, १९७५ मंगलवार को

प्रात काल मिथुन लग्न में किसी ने प्रश्न किया। उस समय की प्रश्न कुण्डली इस प्रकार है—

इस कुण्डली में लग्नेश बुध एवं चन्द्रमा दोनों निर्बल हैं तथा चतुर्थेश बुध अस्तंगत है, अतः यहाँ ग्रह सिद्धान्त के द्वारा मूक प्रश्न का विचार नहीं किया जा सकता। परिणामतः भाव सिद्धान्त के अनुसार प्रश्न के प्रतिनिधि भाव का निश्चय करना आवश्यक है। उक्त कुण्डली में लग्नेश बुध की अपेक्षा लाभेश मंगल बलवान् है तथा मंगल से चन्द्रमा ६ठे स्थान में है, इसलिए षष्ठ भाव प्रश्न का प्रतिनिधि भाव सिद्ध हुआ। प्रश्न कुण्डली में ६ठे भाव में राहु बैठा है, अतः इस उदाहरण में प्रश्नकर्त्ता लम्बी बीमारी से चिन्तित है।
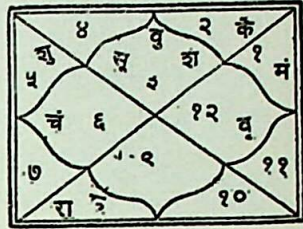
उदाहरण २—७ अगस्त, १९७५ गुरुवार को मीन लग्न की प्रश्न कुण्डली इस प्रकार है—

इस कुण्डली में लग्नेश गुरु और लाभेश शनि में तुलानात्मक दृष्टि से गुरु बलवान् हैं। उससे चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में स्थित हैं, अतः यहाँ चतुर्थ भाव प्रश्न का प्रतिनिधि भाव हुआ। लग्न से चतुर्थ स्थान में कोई ग्रह नहीं है, इसलिए प्रश्नकर्त्ता किसी के छल-कपट या षड्यन्त्र का शिकार है तथा इस प्रपञ्च से वचना चाहता है।
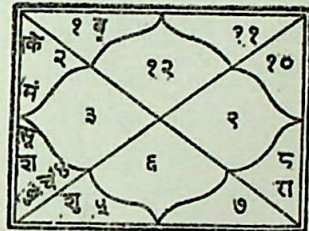
उदाहरण ३—दि० ८ अगस्त, १९७५ शुक्रवार को अपराह्न वृश्चिक लग्न की प्रश्न कुण्डली इस प्रकार है—

इस कुण्डली में लग्नेश मंगल और लाभेश बुध की अपेक्षा
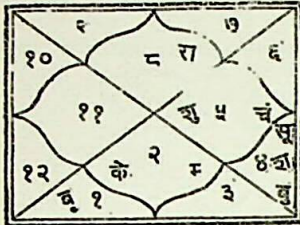
चन्द्रमा बलवान् है तथा चन्द्रमा से लग्नेश मंगल १०वें स्थान में है, इसलिए इस प्रश्न का प्रतिनिधि दशम भाव हुआ। इस भाव में चन्द्रमा और शुक्र स्थित हैं, अतः विदेश व्यापार या विदेशी मुद्रा अर्जन का प्रश्न कहना चाहिए।

प्रथम भाव के प्रश्न—प्रश्न कुण्डली में लग्न या प्रथम भाव सबसे महत्त्वपूर्ण भाव है। उपर्युक्त रीति से जब यह मूक प्रश्न का प्रतिनिधि भाव हो, तो पृच्छक के मन में शरीर, आयु, जाति, सुख-दुःख, यश, क्लेश, साहस, स्वास्थ्य, उत्थान-पतन आदि की चिन्ता होती है, तात्पर्य यह है कि प्रथम भाव के प्रतिनिधि भाव होने पर व्यक्ति उपर्युक्त प्रश्नों में से कोई भी प्रश्न पूछता है। उक्त प्रश्नों में से पृच्छक के मन में कौन-सा प्रश्न है, यह निश्चय करने के लिए इस भाव में विभिन्न ग्रहों की स्थिति पर ध्यान देना चाहिए तथा सूर्य आदि ग्रहों के इस स्थान में बैठने पर मनुष्य के मनोगत प्रश्न/भाव का इस प्रकार निश्चय करना चाहिए।

यदि इस भाव में सूर्य बैठा हो, व्यक्ति उन्नति-अवनति, चन्द्र हो, तो स्वास्थ्य, मंगल हो तो शारीरिक या व्यावसायिक क्लेश, बुध हो तो जातीय समस्या, गुरु हो, तो आयु या यश, शुक्र हो तो स्त्री से विवाद और शनि हो तो साहसिक कार्य या दुःख और प्रपंचों के बारे में व्यक्ति पूछना चाहता है। यहाँ जिन ग्रहों की स्थिति के अनुसार वैकल्पिक प्रश्न बतलाये गए हैं उन ग्रहों के बलाबल के आधार पर प्रश्न का निर्णय करना चाहिये। उदाहरणार्थ, लग्न में सूर्य होने पर उन्नति या अवनति का प्रश्न होता

है। इस प्रश्न में उन्नति अवनति दो विकल्प दिये गये हैं। इन दोनों में से प्रश्नकर्त्ता को किसकी चिन्ता है? यह निर्णय करने के लिए सूर्य के बल का विचार कर लेना चाहिए। यदि सूर्य बलवान् हो, तो उन्नति और निर्बल हो, तो अवनति की चिन्ता कहनी चाहिए। इसी रीति के द्वारा अन्य वैकल्पिक प्रश्नों में से एक का निश्चय किया जा सकता है। इस भाव में यदि कोई ग्रह न हो, तो स्वास्थ्य या व्यापार की चिन्ता होती है।

द्वितीय भाव के प्रश्न—यह भाव मुख्यतः चल सम्पत्ति, कुटुम्ब एवं क्रय-विक्रय का द्योतक है। जब यह भाव मूक प्रश्न का प्रतिनिधित्व करता है, तब व्यक्ति के मन में सोना-चाँदी, रत्न आदि, चल सम्पत्ति, कुटुम्ब, स्त्री, सौन्दर्य, सुख भोग, आँख, कान एवं नाक के रोग एवं क्रय-विक्रय जैसे प्रश्न होते हैं।

यदि इस भाव में रवि बैठा हो, तो ऐश्वर्य, चन्द्रमा हो तो कुटुम्ब, मंगल हो तो आँख, कान या नाक के रोग, बुध हो तो क्रय-विक्रय, गुरु हो तो पारिवारिक प्रगति, शुक्र हो तो स्त्री या सुख भोग और शनि हो तो व्यक्ति बचत की चिन्ता करता है। इस भाव में स्वराशिगत ग्रह होने पर प्रधानतया आर्थिक प्रश्न होता है। मित्र राशि या शुभ ग्रह की राशि में कोई ग्रह बैठा हो तो पारिवारिक और नीच या शत्रु राशि में ग्रह हो तो व्यापारिक प्रश्न कहना चाहिए।

तृतीय भाव के प्रश्न—उद्योग, पराक्रम, यात्रा, जय-पराजय एवं भाई का प्रतिनिधि यह मूक प्रश्न का प्रतिनिधि होने तथा विभिन्न विलक्षण प्रश्नों की ओर एक-साथ संकेत देता है। उस समय मनुष्य के मन में नौकर-चाकर, दास कर्म, उद्योग, पराक्रम एवं साहसपूर्ण कार्य, नया व्यापार, यात्रा, जीत-हार, भाई-बहिन, भोजन, दमा, खाँसी, श्वास एवं क्षय रोग और योगाभ्यास जैसा प्रश्न होता है।

इस भाग में यदि रवि बैठा हो तो यात्रा, चन्द्रमा हो तो साहसिक कार्य, मंगल हो तो उद्योग एवं पराक्रम से सुलझने वाली समस्याएं या भाई, बुध हो तो नया व्यापार, गुरु हो तो धार्मिक यात्रा या योगाभ्यास, शुक्र हो तो रोग और शनि हो, तो सेवक या दास कर्म सम्बन्धी चिन्ता व्यक्ति के मन में होती है। इस भाव में स्वराशि, उच्च राशि या मूल त्रिकोण राशिगत मंगल शुभ फलदायक होता है। इस प्रकार का मंगल होने पर प्रश्नकर्त्ता को अपने विचारणीय कार्य में निश्चित रूप से सफलता मिलती है।

चतुर्थ भाव के प्रश्न—यदि यह भाव मूक प्रश्न का प्रतिनिधि हो, तो मित्र एवं सम्बन्धियों से सुख, भोगाभोग, मकान, जायदाद एवं खेती, पेट के रोग, धरोहर प्रगति, वाहन, माता, पालतू पशु एवं निधि की चिन्ता होती है।

इस स्थान में सूर्य स्थित हो, तो रिश्तेदारों का सुख, चन्द्रमा हो, तो मकान या भोगोपभोग, मंगल हो तो उदर विकार, बुध हो तो खेती, बगीचा या जायदाद, गुरु हो तो धरोहर या निधि, शुक्र हो तो वाहन एवं मित्र और शनि हो, तो पालतू एवं दुधारु पशुओं की चिन्ता होती है। इस भाव में कर्क, मीन एवं मकर राशि का उत्तरार्द्ध बलवान् होता है तथा चन्द्रमा और बुध इस भाव के कारक ग्रह है। यदि इन दोनों में से कोई एक ग्रह स्वराशि या उच्च राशि में हो तो व्यक्ति को प्रगति या वृद्धि की चिन्ता होती है। इस स्थान में कोई ग्रह न होने पर छल-कपट या षड्यंत्र का शिकार होता है।

पंचम भाव के प्रश्न—शिक्षा एवं सन्तति का कारक यह भाव जब मूक प्रश्न का प्रतिनिधित्व करता है तो पृच्छक के मन में गर्भ, सन्तान, विद्या, शिक्षा, लेखन, प्रकाशन, मन्त्र, यन्त्र एवं तंत्र की सिद्धि, देवभक्ति, नौकरी का छूटना, अचानक धन प्राप्ति,

गर्भाशय, गुर्दा एवं वस्ति के रोग तथा शिक्षा संस्थाओं की गतिविधि जैसा कोई प्रश्न होता है।

इस भाव में सूर्य स्थित हो तो शिक्षा संस्था, चन्द्रमा स्थित हो तो गर्भ, मंगल स्थित तो गर्भाशय, गुर्दा या वस्ति के रोग, बुध स्थित हो तो लेखन एवं प्रकाशन, गुरु स्थित हो तो सन्तान या शिक्षा, शुक्र स्थित हो तो अचानक धन प्राप्ति या तन्त्र की सिद्धि और शनि हो तो अचानक नौकरी छूटना या कारोबार में बाधा सम्बन्धी प्रश्न व्यक्ति पूछना चाहता है। इस भाव का कारक गुरु है, अतः इस भाव में गुरु का सम्बन्ध होने पर या गुरु बलवान् होने पर प्रश्नकर्त्ता को विचारणीय कार्य में सफलता मिलती है।

षष्ठ भाव के प्रश्न—यह भाव मूक प्रश्न का प्रतिनिधि हो तो मनुष्य ननसाल, शत्रु, रोग, चोर, विवाद, लड़ाई, दुर्घटना, क्रूर कर्म, षड्यंत्र एवं लोकापवाद से चिन्तित होता है। यह भाव विरोध, विलम्ब, विवाद, बाधा एवं क्लेश आदि का द्योतक है, अतः इस स्थिति में प्रश्नकर्त्ता परेशान, चिन्तित, किंकर्त्तव्य-विमूढ़ या रोगी होता है।

यदि इस स्थान में सूर्य बैठा हो तो सरकारी मुकद्दमा, पुलिस केस या राज्य से मतभेद, चन्द्रमा हो तो रोग या षड्यन्त्र, मंगल हो तो लड़ाई, चोट या दुर्घटना, बुध हो तो ननसाल या व्यापार में विरोधी गतिविधियाँ, गुरु हो तो लोकापवाद या कलंक, शुक्र हो तो वीर्य विकार या स्त्री के कारण प्रपंच, शनि हो तो चोरी या हानि, राहु हो तो दीर्घकालीन रोग और केतु हो तो शत्रु की बाधा से व्यक्ति परेशान होता है। इस स्थान में मंगल और शनि होने पर व्यक्ति को प्रारम्भ में कष्ट अवश्य मिलता है, किन्तु अधिकांशतया कार्य का परिणाम उसके पक्ष में रहता है। यदि कोई शुभ ग्रह इस स्थान को देखता हो तो व्यक्ति अधिक

समय तक परेशान रहता है।

सप्तम भाव के प्रश्न—यह स्थान मानसिक प्रश्न का प्रतिनिधित्व करता हो, तो विवाह, दम्पत्ति, मदन पीड़ा, काम चिन्ता, प्रेम सम्बन्ध, यात्रा, रोमांटिक प्रवृत्ति, गुप्त रोग, क्रय-विक्रय, व्यापार, उद्योग, वाद-विवाद एवं चोरी के माल से सम्बन्धित प्रश्न होता है।

इस भाव में सूर्य होने पर दाम्पत्य कलह, चन्द्रमा हो तो प्रेम या कामुकता, मंगल हो तो गुप्त रोग या वाद-विवाद; बुध हो तो क्रय-विक्रय, व्यापार या लघु उद्योग, गुरु हो तो विवाह, शुक्र हो तो प्रणय सम्बन्ध या रोमांटिक प्रवृत्ति एवं शनि हो तो यात्रा या नष्ट पदार्थ की चिन्ता होती है। इस स्थान में वृश्चिक राशि बलवान् होती है तथा गुरु एवं शुक्र की दृष्टि से विचारणीय कार्य में सफलता मिलती है।

अष्टम भाव के प्रश्न—यदि मानसिक प्रश्न का प्रतिनिधि अष्टम भाव हो तो पृच्छक रोग, आयु, व्याधि, मृत्यु, मानसिक क्लेश, अन्तर्द्वन्द्व, युद्ध, ऋण, पारिवारिक कमजोरी, हीनता की भावना, कुश्ती या अन्य प्रतियोगिता, भूत-प्रेत, पिशाच आदि की बाधा, चुराई गई या बलात् अपहृत वस्तु एवं आकस्मिक रोग के बारे में चिन्तित होता है।

इस स्थान में सूर्य हो तो हृदय रोग या मुकद्दमा, चन्द्रमा हो हो तो समुद्री-यात्रा, मंगल हो तो मानसिक क्लेश, अन्तर्द्वन्द्व, द्वन्द्व-युद्ध या प्रतियोगिता, बुध हो तो ऋण या नष्ट पदार्थ, गुरु हो तो आयु या मृत्यु, शुक्र हो तो पारिवारिक कलह या गुप्त रोग और शनि हो तो भूत-प्रेत आदि की बाधा, राहु हो तो आकस्मिक रोग और केतु हो तो किसी व्याधि से सम्बन्धित प्रश्न होता है। इस स्थान में शनि होने से मृत्यु या भयंकर अनिष्ट नहीं होता, किन्तु मंगल होने पर विशेष कष्ट मिलता है।

नवम भाव के प्रश्न—यदि यह भाव मूक प्रश्न का प्रतिनिधि हो तो भाग्योदय, प्रगति, मानसिक स्थिति, प्रवास (यात्रा), धार्मिक एवं दार्शनिक वृत्ति, यश, दीक्षा, सौन्दर्य, गुरुजन, देवर, साला, साली, सामाजिक और धार्मिक कार्य, मन्दिर, मठ, राज्याभिषेक, मन्त्री पद की शपथ एवं उच्च पद के कार्यभार ग्रहण का विचार पृच्छक के मन में होता है।

नवम स्थान में रवि बैठा हो तो सरकारी या राजनैतिक पद की प्राप्ति, चन्द्र हो तो भाग्योदय या प्रगति, मंगल हो तो यात्रा या सामाजिक कार्य, बुध हो तो व्यापार या दीक्षा, गुरु हो तो धार्मिक, दार्शनिक प्रवृत्ति या गुरु कृपा, शुक्र हो तो सौन्दर्य या विदेश यात्रा, शनि हो तो प्रगति एवं अभ्युदय में बाधा, राहु हो तो घुटनों में दर्द या चोट और केतु हो तो तांत्रिक सिद्धि जैसा प्रश्न कहना चाहिए। इस स्थान में रवि एवं गुरु विशेष फलदायक होते हैं।

दशम भाव के प्रश्न—यह भाव प्रश्न का प्रतिनिधि हो तो व्यापार, लघु एवं भारी उद्योग, शासन, विदेश-व्यापार, शासन में उच्च पद, लोकसभा एवं विधानसभा जैसी संस्थाएँ प्रतिष्ठा एवं अभिनन्दन, पिता, प्रभुता, नेतृत्व हवाई-यात्रा, मुद्रा एवं आर्थिक नीति, सरकारी अनुबन्ध एवं विदेश नीति जैसे महत्त्व-पूर्ण प्रश्नों की चिन्ता होती है।

दशम स्थान में रवि हो तो शासन में उच्च पद या नेतृत्व, चन्द्रमा हो तो व्यापार या रोजगार, मंगल हो तो राजनैतिक या आर्थिक समस्या, बुध हो तो लघु या भारी उद्योग, गुरु हो तो प्रतिष्ठा, अभिनन्दन, प्रभुता, नेतृत्व या पिता, विदेश यात्रा, विदेशी व्यापार या सरकारी अनुबन्ध, शुक्र हो तो विदेश नीति, मुद्रा या आर्थिक नीति, शनि हो तो नौकरी या लघु उद्योग, राहु हो तो लोकापवाद, कलंक या अभियोग एवं केतु हो तो

शासन या समाज से हानि जैसे प्रश्न व्यक्ति के मस्तिष्क में होते हैं।

एकादश भाव के प्रश्न—प्रश्न का प्रतिनिधि एकादश भाव हो तो आर्थिक लाभ, उच्च शिक्षा, व्यवसायिक प्रशिक्षण, वाद-विवाद, व्यापार, छोटा भाई, आर्थिक अनुबन्ध, विदेशी मुद्रा, पुत्री या पुत्रवधू, नई उपलब्धि, खोज या आविष्कार, वाहन, लकवा एवं पोलियो जैसे रोग एवं धन-धान्य की चिन्ता होती है।

लाभ स्थान में रवि हो तो आर्थिक समस्या, चन्द्र हो तो व्यापार एवं व्यापार में लगी पूंजी, मंगल हो तो वाद-विवाद एवं छोटा भाई, बुध हो तो नई उपलब्धि, खोज या आविष्कार, गुरु हो तो उच्च शिक्षा या व्यवसायिक प्रशिक्षण, शुक्र हो तो वाहन, पुत्री या पुत्रवधू, शनि हो तो लकवा एवं पोलियो जैसे रोग, राहु हो तो इलेक्ट्रोनिक उद्योग एवं केतु हो तो धन-धान्य या विदेशी मुद्रा की चिन्ता होती है।

द्वादश भाव के प्रश्न—यह भाव प्रश्न का प्रतिनिधि हो, तो व्यय, दान, कर, दण्ड, व्यसन, रोग, चोरी, अपहरण, खेती, रहन-सहन का स्तर, समुद्री-यात्रा एवं रोग-विषयक प्रश्न होता है।

व्यय भाव में रवि हो तो आय-कर, बिक्री-कर, सम्पत्ति-कर या दण्ड, चन्द्रमा हो तो व्यापार में हानि, मंगल हो तो अपहरण या चोरी, बुध हो, तो आकस्मिक व्यय भार या ऋण, गुरु हो तो दान या मांगलिक कार्यों के लिए व्यय, शुक्र हो तो व्यसन, शनि हो तो रोग, राहु हो तो समुद्री-यात्रा और केतु हो तो खेती या खनिज से सम्बन्धी प्रश्न होता है।

प्रश्न फल-विचार

मूक प्रश्न के प्रकरण में हमारे प्राचीन आचार्यों ने मानसिक प्रश्न का निश्चय करना ही अपना अन्तिम उद्देश्य या एकमात्र लक्ष्य माना था, किन्तु प्रश्नकर्त्ता की जिज्ञासा की पूर्ति केवल

अपना प्रश्न जान लेने से ही नहीं हो जाती है। प्राय: देखा गया है कि पृच्छक अपना मानसिक प्रश्न जान लेने के बाद उसका शुभ या अशुभ फल जानने के लिए अधिक आतुर या उत्कण्ठित हो जाता है, अत: मानसिक प्रश्न का निश्चय करने के बाद उसके फल का निर्णय करना ज्योतिषी के लिए अत्यन्त आवश्यक है। प्रश्न-शास्त्र का एकमात्र प्रयोजन भी पूछे गये प्रश्न के शुभ या अशुभ परिणाम की जानकारी करना है, इसलिए प्रश्न-शास्त्र के सभी ग्रन्थों में विविध प्रश्नों के फल की जानकारी के लिए अनेक नियमों का जिन्हें ज्योतिष की भाषा में योग कहते हैं—विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। यहाँ हम पाठकों के लाभार्थ कतिपय महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का फलादेश करने के लिए अनुभव सिद्ध रीति प्रस्तुत कर रहे हैं। अन्य प्रश्नों के फलादेश की रीति जानने के जिज्ञासु पाठक प्रश्न-शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थों का अवलोकन करें।

विचारणीय कार्य में सफलता मिलेगी या असफलता

व्यक्ति के मानसिक प्रश्न का निश्चय कर लेने के बाद विचारणीय कार्य में सफलता या असफलता का निश्चय करना चाहिए। यदि प्रश्न कुण्डली में निम्नलिखित योगों में से कोई एक योग हो, तो पृच्छक को अपने पूछे गये कार्य में सफलता मिलती है—

(१) लग्न में शुभ ग्रह अपनी राशि में बैठा हो।

(२) लग्न में शीर्षोदय राशि हो तथा बलवान् लग्नेश को चन्द्रमा देखता हो।

(३) लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य-भाव को देखता हो।

(४) कार्येश लग्न को और लग्नेश कार्य-भाव को देखता हो और इनमें से किसी एक पर चन्द्रमा की दृष्टि हो।

(५) लग्नेश एवं कार्येश परस्पर एक दूसरे को देखते हों।

(६) लग्नेश एवं कार्येश लग्न या कार्य-भाव में एक-साथ बैठे हो।

(७) लग्नेश एवं कार्येश का बलवान् चन्द्रमा के साथ कम्बूल योग हो।

(८) प्रश्न लग्न को उसका स्वामी तथा २ या २ शुभ ग्रह देखते हों।

(९) क्रूर ग्रहों की दृष्टि से रहित चन्द्रमा एवं लग्नेश प्रश्न लग्न को देखते हों।

(१०) लग्न या कार्य-भाव में स्थित कार्येश पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तथा चन्द्रमा और लग्नेश में इत्थशाल योग हो।

उपर्युक्त १० योग कार्य में निश्चित रूप से सफलता देने वाले होते हैं। यदि इन योगकारक ग्रहों के साथ चन्द्रमा का सम्बन्ध हो, तो सफलता शीघ्र मिलती है। अन्यथा जब चन्द्रमा योग-कारक ग्रहों के साथ दृष्टि या युति सम्बन्ध बनाता है, तब पूछे गये कार्य की सिद्धि होती है।

विचारणीय कार्य कब तक होगा ?

विचारणीय कार्य में सफलता कब तक मिलेगी ? यह समय-अवधि निकालने से पहले कार्य साध्य है या असाध्य—यह जान लेना चाहिए। साध्य या असाध्य का निश्चय इस प्रकार किया जाता है—प्रश्नकालीन स्पष्ट लग्न के राशि अंश एवं फल को कलात्मक बनाकर तत्कालीन शंकु की छाया के अंगुल से गुणा कर १४ का भाग देना चाहिए। इस प्रकार जो शेष बचे, उसे मेष आदि गणना से राशि मानना चाहिए। यह राशि शुभ ग्रह की हो, तो कार्य साध्य होता है और निश्चित समयावधि में सफलता मिलती है। यदि यह राशि पाप ग्रह की हो, तो कार्य असाध्य होता है।

इस प्रकार साध्य असाध्य का निश्चय कर समयावधि जानने के लिए पूर्वोक्त स्पष्ट लग्न की कला संख्या में ७१ का भाग देना चाहिए। इस रीति से जो लब्धि मिले, उसमें से सूर्य आदि ग्रहों का ध्रुवांक क्रमशः घटाना चाहिए। जहाँ तक ग्रहों के ध्रुवांक घट जायें, वहाँ तक घटाते रहना चाहिए। जिस ग्रह का ध्रुवांक न घटे, उससे समयावधि का निश्चय किया जाता है।

यदि सूर्य और मंगल का ध्रुवांक न घटे, तो शेष तुल्य दिन में, शुक्र और चन्द्रमा का ध्रुवांक न घटे तो शेष तुल्य पक्षों में, गुरु का ध्रुवांक न घटे तो शेष तुल्य मास में, बुध का ध्रुवांक न घटे, तो शेष तुल्य ऋतु (२ मास) में और शनि का ध्रुवांक न घटे, तो शेष तुल्य वर्ष में कार्य होता है।

कार्य में असफलता के योग

प्रश्न कुण्डली में यदि निम्नलिखित योगों में से कोई एक योग हो, प्रश्नकर्त्ता को विचारणीय कार्य में असफलता मिलती है—

(१) लग्नेश या कार्येश क्रूर ग्रहों से आक्रांत हों।

(२) लग्न या कार्य भाव में बलवान् पाप ग्रह बैठे हों।

(३) लग्नेश या कार्येश निर्बल हों और इनपर पाप क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो।

(४) लग्नेश या कार्येश सूर्य के साथ अस्त हों।

(५) लग्नेश की कार्येश या कार्य भाव पर दृष्टि न हो तथा वह पाप ग्रहों से दृष्ट हों।

(६) प्रश्न लग्न में स्थित राहु को सूर्य, मंगल और चन्द्रमा देखते हों।

(७) लग्नेश ६ठे, ८वें एवं १२वें स्थान में चन्द्रमा के साथ हों।

(८) लग्न में निर्बल बुध हो तथा क्षीण चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हों।

(८) लग्न में क्षीण चन्द्रमा, सप्तम में नीच राशिगत शनि और दशम में नीच राशिगत मंगल हो।

(१०) लग्नेश एवं चन्द्रमा नीच राशि या शत्रु राशि में पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों।

दीप्तादि अवस्था के अनुसार सफलता एवं असफलता का विचार

प्रश्न शास्त्र में ग्रहों की दीप्तादि १० अवस्थाओं का बड़ा महत्त्व है। इन अवस्थाओं के आधार पर किया गया फलादेश यथार्थ रूप में घटता है, अतः प्रश्न कुण्डली में कार्येश ग्रह की अवस्था के अनुसार विचारणीय प्रश्न-कार्य की सिद्धि या असिद्धि का निर्णय करना चाहिए।

यदि कार्येश उच्च राशि में हो, तो वह दीप्त कहलाता है। इस स्थिति में वह शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो कार्य में निश्चित रूप से सफलता मिलती है।

कार्येश अपनी नीच राशि में हो, तो हीन कहा जाता है। वह शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर भी कार्य में असफलता एवं हानि करवाता है।

कार्येश मित्र राशि होने से मुदित कहलाता है। यदि वह शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो कार्य में सफलता मिलती है।

कार्येश अपनी राशि में हो, तो स्वस्थ कहा जाता है। यदि वह शुभ ग्रह या चन्द्रमा से दृष्ट अथवा युक्त हो, तो कार्य में सिद्धि होती है।

कार्येश शत्रु राशि में हो, तो सुप्त कहलाता है। वह शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर भी कार्य का नाश करता है।

कार्येश पापाक्रान्त होने पर पीड़ित कहा जाता है। वह शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो भी कार्य में परेशानी और हानि का सूचक माना गया है।

कार्येश सूर्य के समीप होने के कारण अस्त हो, तो मुषित कहलाता है। वह कार्य में कदम-क़दम पर रुकावटें उत्पन्न करता है।

कार्येश नीचोन्मुख हो, तो हीन कहलाता है। वह शुक्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर भी हानिदायक होता है।

कार्येश उच्चाभिलाषी हो, तो सुवीर्य कहा जाता है। वह लग्नेश या शुभ ग्रहों से युक्त होने पर अल्पप्रयास से कार्य में सफलता देता है।

सफलता एवं असफलता में तारतम्य

लग्न एवं लग्नेश पर शुभ या पाप ग्रहों की दृष्टि होने पर सफलता एवं असफलता की मात्रा का निश्चय इस प्रकार करना चाहिए—

(१) लग्न या लग्नेश पर एक शुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो कार्य में २५ प्रतिशत सफलता मिलती है।

(२) लग्नेश लग्न को तथा शुभ ग्रह लग्नेश को देखता हो, तो ५० प्रतिशत सफलता मिलती है।

(३) लग्नेश लग्न को तथा शुभ ग्रह लग्न एवं लग्नेश दोनों को देखता हो, तो कार्य में ७५ प्रतिशत सफलता मिलती है।

(४) प्रश्न लग्न को लग्नेश, शुभ ग्रह एवं चन्द्रमा देखते हों तथा ये स्वयं पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त न हों, तो कार्य में पूरी-पूरी सफलता मिलती है।

(५) लग्न या लग्नेश किसी एक पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तब कार्य सिद्धि का योग होने पर कार्य में ७५ प्रतिशत सफलता मिलती है।

(६) कार्य सिद्धि का योग हो तथा लग्न या लग्नेश २ पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो ५० प्रतिशत सफलता मिलती है।

(७) कार्य सिद्धि का योग होने पर यदि लग्न और लग्नेश दोनों पाप ग्रहों के दृष्ट हों, तो २५ प्रतिशत सफलता मिलती है।

(८) लग्न, लग्नेश एवं चन्द्रमा तीनों पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो कार्य नाश होता है।

शिक्षा एवं परीक्षा विचार

शिक्षा के प्रश्न में विभिन्न स्तरों की शिक्षा में सफलता का विचार इस प्रकार करना चाहिए। चतुर्थेश एवं लग्नेश के द्वारा प्राथमिक शिक्षा का, पंचमेश और लग्नेश के द्वारा माध्यमिक शिक्षा का, दशमेश एवं लग्नेश के द्वारा विश्वविद्यालयीय शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा या प्रशिक्षण का विचार करना चाहिए। इन ग्रहों में दृष्टि या युति सम्बन्ध तथा इनपर चन्द्रमा या शुभ ग्रहों की दृष्टि होने पर शिक्षा में अच्छी प्रगति और सफलता मिलती है। शिक्षा का प्रतिनिधि ग्रह (चतुर्थेश, पंचमेश या दशमेश) निर्बल, नीच राशिगत, शत्रु राशिगत, अस्तंगत या पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो शिक्षा में अनेक बाधायें आती हैं।

परीक्षा में सफलता या असफलता का विचार मुख्यतः पंचमेश से करना चाहिए। प्रश्न कुण्डली में पंचमेश पंचम स्थान में और लग्नेश लग्न में; लग्नेश और पंचमेश दोनों लग्न या पंचम स्थान में अथवा लग्नेश लग्न को और पंचमेश पंचम स्थान को देखते हों, तो परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त होती है। उक्त योग होने पर योग कारक ग्रहों पर चन्द्रमा की दृष्टि या चन्द्रमा से इत्थशाल हो, तो व्यक्ति विशेष योग्यता के साथ परीक्षा उत्तीर्ण करता है।

प्रश्न कुण्डली में यदि लग्नेश पंचम स्थान को और पंचमेश लग्न को देखता हो अथवा ये दोनों तीसरे या ग्यारहवें स्थान में हों, तो व्यक्ति द्वितीय श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण करता है।

यदि लग्नेश या पंचमेश में से कोई एक बलवान् होकर नवम या दशम स्थान में बैठा हो, तो व्यक्ति तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण होता है।

पंचमेश त्रिक् स्थान में हो या पंचम स्थान में पाप ग्रह हों अथवा पंचमेश दो पाप ग्रहों के बीच, नीच राशि, शत्रु राशि या सूर्य के साथ अस्त हो, तो व्यक्ति परीक्षा में असफल रहता है।

प्रतियोगिता परीक्षायें

प्रतियोगिता परीक्षा से तात्पर्य नौकरी के लिए ली जाने वाली लिखित परीक्षा से है। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई० ए० एस०) भारतीय विदेश सेवा (आ० एफ़० एस०), भारतीय पुलिस सेवा (आई० पी० एस०), लोकसेवा आयोग (पब्लिक सर्विस कमीशन) की अन्य परीक्षाएँ एवं विभिन्न विभागीय परीक्षाएँ इसी श्रेणी में आती हैं। आजकल प्राय: बगैर प्रतियोगिता परीक्षा में सफल हुए बिना नौकरी नहीं मिलती, अत: इस प्रकार की परीक्षाओं के परिणाम का विचार सावधानी के साथ करना चाहिए।

इन परीक्षाओं का सम्बन्ध प्रधानतया नौकरी से होता है, अतः इनका विचार करते समय दशम स्थान और दशमेश पर विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। प्रश्न कुण्डली में अधोलिखित योगों में से कोई एक योग हो, तो व्यक्ति को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलती है—

(१) प्रश्न कुण्डली में लग्नेश दशम में और दशमेश लग्न में हो।

(२) दशमेश लग्न को और लग्नेश दशम को देखता हो।

(३) दशमेश लग्न या दशम में हो और लग्नेश उसे देखता हो।

(४) लग्नेश लग्न या दशम में हो और बलवान् दशमेश उसे देखता हो।

(५) लग्नेश और दशमेश दोनों एक-साथ लग्न या दशम स्थान में हों।

(६) दशमेश और नवमेश एक-साथ लग्न, पंचम, नवम या दशम स्थान में हों, किन्तु नवमेश त्रिक् स्थान का स्वामी न हो।

(७) लग्नेश और दशमेश एक दूसरे से युक्त या दृष्ट होकर पंचम या नवम स्थान में हों।

असफलता के योग

प्रश्न कुण्डली में यदि दशमेश निर्बल हो, नीच राशि, शत्रु राशि या त्रिक् स्थान में हो, लग्नेश से सम्बन्ध न रखता हो, पाप ग्रहों के साथ या सूर्य के साथ अस्त हो, लग्नेश और दशमेश में षडाष्टक हो, नवम और दशम स्थान में पाप ग्रह हों या लग्नेश अथवा दशमेश क्रूर ग्रह से विद्ध हो, तो व्यक्ति को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता नहीं मिलती।

इण्टरव्यू में सफलता मिलेगी या नहीं ?

प्रतियोगिता परीक्षा में सफल हो जाने के बाद भी अधिकांश लोग इण्टरव्यू में सफल नहीं हो पाते, अतः इस प्रश्न का अलग से गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। इण्टरव्यू एक मौखिक परीक्षा है जिसमें व्यक्ति अपनी प्रतिपादन शक्ति और शैली से दूसरों को प्रभावित करता है, अतः इस प्रश्न का विचार मुख्यतः द्वितीय भाव और उसके स्वामी ग्रह से होता है। यदि प्रश्न कुण्डली में निम्नखिलित कोई योग हो, तो व्यक्ति इण्टरव्यू में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करता है—

(१) प्रश्न कुण्डली में लग्नेश लग्न या द्वितीय स्थान में हो और द्वितीयेश उसे देखता हो।

(२) द्वितीयेश लग्न या द्वितीय स्थान में हो और लग्नेश या चन्द्रमा के साथ इत्थशाल करता हो।

(३) लग्नेश और द्वितीयेश लग्न, द्वितीय, पंचम या नवम स्थान में हों और चन्द्रमा के साथ कम्बूल योग हो।

(४) द्वितीयेश और पंचमेश त्रिकोण में हों और लग्नेश

लाभ स्थान में हो।

(५) द्वितीयेश बुध उच्च राशि में हो और चन्द्रमा या लग्नेश की दृष्टि हो।

नौकरी मिलेगी या नहीं ?

आज के इस बेरोजगारी के युग में अनेक शिक्षित नवयुवक एवं युवतियाँ नौकरी का प्रश्न लेकर ज्योतिषी के पास आते हैं। उनके मन में उचित नौकरी न मिलने की चिन्ता रहती है। नौकरी का सम्बन्ध मुख्यत: दशम स्थान और उसके स्वामी ग्रह से होता है, अत: इस प्रश्न का फल विचार करने से पूर्व दशमस्था और दशमेश का अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए।

उच्च पद प्राप्ति के योग

प्रश्न कुण्डली में निम्नलिखित कोई योग हो, तो प्रश्नकर्त्ता को प्रभाव एवं प्रतिष्ठापूर्ण उच्च पद मिलता है, जहाँ काम करने से उसे सन्तोष और गौरव का अनुभव होता है—

(१) दशमेश स्वराशि, मित्र राशि या उच्च राशि में तृतीय, पंचम या नवम स्थान में बैठा हो और शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो।

(२) दशमेश त्रिकोण स्थान में तृतीयेश और पंचमेश से दृष्ट या युक्त हो।

(३) पंचमेश और दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखते हों और लग्नेश इनमें से किसी एक के साथ इत्थशाल करता हो।

(४) नवमेश और दशमेश एक दूसरे के स्थान में हों या दोनों के साथ नवम अथवा दशम स्थान में हों और इनपर लग्नेश या चन्द्रमा की मित्र दृष्टि हो।

(५) नवमेश नवम में और दशमेश दशम में शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों अथवा पंचमेश, लग्नेश या लाभेश के साथ

कम्बूल योग करते हों।

(६) लग्नेश और चन्द्रमा बलवान् होकर दशम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों और दशमेश त्रिक् स्थान में न हो।

(७) दशमेश चन्द्रमा लग्न में हो या लग्नेश के साथ इत्थशाल करता हो, किन्तु वह क्षीण न हो।

(८) चतुर्थ स्थान में लग्नेश एवं दशमेश हों तथा दशम स्थान में शुभ ग्रह हों।'

अच्छी नौकरी मिलने के योग

प्रश्न कुण्डली में निम्नलिखित कोई योग हो, तो व्यक्ति को उसके योग्य अच्छी नौकरी मिल जाती है, जिससे उसका जीवन-यापन सुगमतापूर्वक सफल हो जाता है—

(१) यदि मीन राशि का गुरु लग्न में शुक्र के साथ हो अथवा इसपर सप्तम स्थान में स्थित बुध की दृष्टि हो।

(२) शीर्षोदय लग्न में बलवान् चन्द्रमा हो और दशमेश उसे देखता हो।

(३) लग्न में उच्च राशि में मंगल शनि के साथ तथा चन्द्रमा उपचय स्थान में हो।

(४) लग्नेश और चन्द्रमा लग्न में हों तथा दशमेश से मित्र दृष्टि से इत्थशाल करते हों।

(५) लग्नेश दशम स्थान में बली हो और चन्द्रमा शुभ ग्रहों के साथ केन्द्र या त्रिकोण में हो।

(६) वृष लग्न में चन्द्रमा, शुक्र एवं बुध बैठे हों तथा दशमेश त्रिक् स्थान में न हो।

(७) शुभ ग्रह अपने हर्ष स्थान में हों और दशमेश बलवान् हो।

नौकरी मिलने के अन्य योग

प्रश्न कुण्डली में यदि अधोलिखित योग में से कोई एक योग

हो, तो उसे किसी न किसी तरह् की नौकरी अवश्य मिल जाती है—

(१) गुरु उच्च राशि या स्वराशि में दशम या द्वितीय स्थान में हो।

(२) चन्द्रमा बलवान् और दशमेश निर्बल हो, किन्तु इन दोनों में इत्थशाल हो।

(३) लग्नेश लग्न में और शुभ ग्रह २, ५, ६ एवं ११वें स्थान में हों।

(४) लग्नेश लग्न में अपने उच्चेश से दृष्ट हो।

(५) उच्च राशि में मंगल सप्तम में तथा गुरु नवम में हो।

(६) वृष राशि में शुक्र पंचम और शनि दशम में हो।

(७) मिथुन राशि में बुध सप्तम में और गुरु लग्न में हो तथा इनपर पाप ग्रह की दृष्टि हो।

(८) निर्बल दशमेश और लग्नेश में सम्बन्ध हो।

(९) स्थिर राशि लग्न में हो और दशमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो।

(१०) चन्द्रमा और दशम स्थान पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो।

पदोन्नति के योग

प्रश्न कुण्डली में निम्नलिखित कोई योग होने पर व्यक्ति की पदोन्नति या वेतन वृद्धि होती है—

(१) दशमेश लग्न में और लग्नेश दशम में हो तथा इनमें से किसी एक के साथ लाभेश का इत्थशाल हो।

(२) दशमेश लाभ स्थान में और लाभेश दशम स्थान में हो तथा इनपर लग्नेश या चन्द्रमा की दृष्टि हो।

(३) दशमेश लाभ स्थान में, लाभेश लग्न में और लग्नेश धन स्थान में हो तथा बलवान् चन्द्रमा लाभ स्थान को देखता हो।

(४) दशमेश नवम में और नवमेश दशम में हो अथवा ये दोनों एक-साथ नवम या दशम स्थान में बैठे हों तथा इनपर लग्नेश चन्द्रमा या किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो।

(५) दशमेश पंचम में और लग्नेश तथा लाभेश लाभ स्थान में हों।

(६) लग्नेश एवं नवमेश दोनों एक-साथ केन्द्र या त्रिकोण स्थान में हों, और दशमेश निर्बल न हो।

(७) नवम, दशम एवं एकादश स्थानों पर शुभ ग्रह का प्रभाव हो और लाभेश बलवान् हो।

(८) नवमेश और दशमेश का लग्नेश के साथ कम्बूल योग हो।

पदावनति, मुअत्तली एवं नौकरी छूटने के योग

पदावनति, मुअत्तली एवं नौकरी छूटना जैसी घटनाएँ प्रश्न कुण्डली में निम्नलिखित योग होने पर होती हैं—

(१) लग्नेश नीच राशि में या अस्त हो और दशमेश के साथ इत्थशाल करता हो अथवा केन्द्र त्रिकोण स्थान में पाप ग्रह हों और व्ययेश दशमेश को देखता हो, तो भ्रष्टाचार के आरोप में मुअत्तली या नौकरी छूटती है।

(२) लग्नेश की नीच राशि के स्वामी का चन्द्रमा से इत्थशाल हो या दशमेश का अपनी नीच राशि के स्वामी से इत्थशाल हो, तो दुर्व्यवहार या भ्रष्टाचार के आरोप में व्यक्ति नौकरी से निकाल दिया जाता है।

(३) लग्नेश और राज्येश नीच राशि, अस्तंगत या पापाक्रांत हों, तो मतभेद या राजनैतिक कारणों से नौकरी छूटती है। इनमें से कोई एक नीच, अस्त या पापाक्रांत हो, तो मुअत्तली होती है।

(४) लग्नेश और चन्द्रमा नीच या अस्त हों और शुभ ग्रह

से इत्थशाल करते हों, तो पदावनति होती है।

(५) व्ययेश दशम स्थान में पाप ग्रहों से इत्थशाल करे तो नौकरी छोड़ने के साथ-साथ राजदण्ड भी भोगना पड़ता है।

(६) लग्नेश एवं दशमेश त्रिक् स्थान में हों, तो मुअत्तली या नौकरी छोड़नी पड़ती है।

(७) २, ७ एवं ८वें स्थान में शुभ ग्रह तथा ९, १० एवं ११वें स्थान में पाप ग्रह हों, तो कर्तव्य की उपेक्षा या भ्रष्टाचार के आरोप में नौकरी से पृथक् होना पड़ता है।

(८) दशमेश नीच, अस्त, शत्रु राशि में या दुर्बल हो और एक भी पाप ग्रह की दशम स्थान पर दृष्टि हो, तो निश्चित रूप से पदावनति या अधिकार की हानि होती है।

(९) अष्टमेश और दशमेश एक-दूसरे के साथ में हों, तो आकस्मिक रूप से नौकरी छूटती है।

(१०) षष्ठेश और दशमेश एक-दूसरे के स्थान में हों, तो षड्यन्त्र या विरोधियों के प्रभाव से नौकरी छूटती है।

(११) सप्तम स्थान में शुभ ग्रह और दशम में पाप ग्रह हों तथा नवमेश बलवान् हो, तो व्यक्ति स्वयं नौकरी से इस्तीफा दे देता है।

(१२) सप्तमेश एवं नवमेश बलवान् हों और दशमेश त्रिक् स्थान में पाप ग्रहों के साथ हों, तो व्यक्ति नौकरी छोड़कर अपना निजी व्यवसाय करता है।

व्यापार विचार

व्यापार का विचार करते समय लग्न, सप्तम, दशम एवं एकादश भाव और इनके स्वामी ग्रहों का अच्छी तरह विचार करना चाहिए। साथ ही अर्घकांड के सिद्धान्तानुसार समर्घ-महर्घ (तेजी-मन्दी) का निश्चय करना चाहिए। प्रश्न कुण्डली में लग्नेश खरीदने वाला और एकादशेश बेचने वाला माना जाता

है, अतः जव लग्न या लग्नेश बलवान् हो तब वस्तु के समर्घानुसार उसे खरीदना चाहिए और जव लाभ स्थान या लाभेश बलवान् हो, तो वस्तु के महर्घानुसार उसे बेचना चाहिए।

व्यापार अकेले करें या साझेदारी में ?

प्रश्न कुण्डली में यदि लग्नेश और सप्तमेश या इत्थशाल हो, तो अकेले या स्वयं ही व्यापार करना लाभदायक होता है।

यदि लग्नेश और सप्तमेश का मित्र ग्रह के साथ कम्बूल योग हो या ये दोनों मकर राशि में हों, तो दलाल, एजेण्ट या अन्य प्रतिनिधियों के माध्यम से व्यापार करना चाहिए।

यदि लग्नेश और सप्तमेश आपस में मित्र हों या मित्र दृष्टि से देखते हों; लग्नेश और चतुर्थेश ग्रह एक-दूसरे के मित्र हों या मित्र दृष्टि से देखते हों अथवा चतुर्थेश और सप्तमेश परस्पर मित्र हों या मित्र दृष्टि से देखते हों तो इन तीनों योगों में किसी मित्र, सम्बन्धी या अन्य मिलने वाले के साथ साझेदारी में व्यापार करना लाभप्रद होता है; किन्तु यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि उक्त योगकारक ग्रह षष्ठेश न हो तथा वह छठे स्थान में न हो, अन्यथा साझेदारी ज्यादा दिन नहीं चलती।

खरीदने और बेचने के अनुकूल योग

प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और सप्तमेश का इत्थशाल हो या चन्द्रमा के सहयोग से कम्बूल योग हो, तो खरीदी गई वस्तु से निश्चित रूप से लाभ होता है। यदि कुण्डली में उक्त योग न हो, तो अर्घकांड के अनुसार वस्तु के समर्घ का विचार कर जब लग्नेश बलवान् हो तब खरीददारी करनी चाहिए, अन्यथा खरीदी गई वस्तु से हानि हो सकती है।

लग्नेश और चन्द्रमा में ईशराफ योग हो या जिस ग्रह का चन्द्रमा के साथ ईशराफ योग हो, वह सूर्य के साथ अस्त हो गया हो, तो उस ग्रह की वस्तु को यथाशीघ्र बेच देना लाभप्रद

होता है। इसके अलावा वस्तु के महर्घ का विचार कर लाभेश ग्रह के बलवान् होने पर बेचना भी निश्चित रूप से अधिकाधिक लाभप्रद होता है।

व्यापार में लाभ और हानि

प्रश्न कुण्डली में लग्नेश और सप्तमेश एक-दूसरे के स्थान में, लग्न या सप्तम में हों और लाभेश बलवान् हो, तो व्यापार से निश्चित लाभ होता है। दशमेश और लाभेश बलवान् होकर लग्नेश, पंचमेश या नवमेश से युक्त अथवा दृष्ट हों, तो भी व्यापार में अच्छा लाभ होता है। व्यापार में लाभ का निश्चय करने से पूर्व धन, लाभ और हानि के योगों का मनन करना आवश्यक है। धन, लाभ और हानि के योगों का विस्तृत विवेचन आगे किया जायेगा। धन हानि के योगों में व्यापार में नुकसान होता है।

निजी और सार्वजनिक उद्योग

प्रश्न कुण्डली में मंगल और शनि ३, ६ एवं १२वें स्थान में बलवान् होकर बैठे हों तथा सप्तमेश और दशमेश केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रहों से दृष्ट हों, तो निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के कारखाने, फैक्टरी या लघु उद्योग अच्छी तरह चलते हैं तथा इनमें उत्पादन और लाभ अच्छा होता है।

यदि शनि और मंगल केन्द्र त्रिकोण स्थान में पाप प्रभाव ग्रस्त हों तथा दशमेश या लग्नेश निर्बल हों, तो कारखाने या फैक्टरी में नियमित रूप से कुछ न कुछ समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं और उत्पादन कम होता है।

यदि मंगल और शनि २, ५ या ११वें स्थान में बलवान् और दशमेश निर्बल हो, तो हड़ताल, तालाबन्दी, दुर्घटना या अन्य समस्याएँ कुछ समय तक कारखाने/फैक्टरी को बन्द करवा देती हैं।

प्रश्न के समय नवमेश और दशमेश बलवान् होकर केन्द्र त्रिकोण में और पाप ग्रह त्रिषड्आय में हों, तो नया कारखाना/फैक्टरी लगाना लाभप्रद होता है।

खेती एवं कृषि फार्म से लाभ विचार

प्रश्न कुण्डली में शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण स्थानों में मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर बैठे हों और पाप ग्रह ३, ६ एवं १२वें स्थान में हों, तो खेती और कृषि फार्म के कार्य से प्रचुर लाभ होता है। इसके विपरीत पाप ग्रह केन्द्र में हों, शुभ ग्रह पाप-क्रान्त या त्रिक् स्थान में हों, तो कृषि कार्य में पूरा परिश्रम करने पर भी लाभ नहीं होता।

चतुर्थ स्थान में क्रूर ग्रह पाप प्रभाव में हो, तो व्यक्ति चोरी, पशु हानि, कृषि यन्त्रों की खराबी और भूमि सम्बन्धी विवादों से हानि प्राप्त करता है। सप्तम स्थान में पाप ग्रह हों, तो अति-वृष्टि, असामयिक वृष्टि या ओलावृष्टि से फसल को नुकसान पहुँचता है। दशम स्थान में पाप प्रभाव अधिक होने पर फसल में कीड़े या बीमारी लग जाने से नुकसान होता है और लग्न में पाप ग्रह होने पर आँधी, तूफान और काम करने वाले लोगों के असहयोग/धोखेबाजी से नुकसान होता है।

धन लाभ-विचार

धन लाभ के प्रश्न में लग्न, द्वितीय, पंचम, दशम एवं एकादश भाव; इसके स्वामी ग्रह और चन्द्रमा का बारीकी से अध्ययन करना चाहिए। लग्न व्यक्ति का, द्वितीय भाव सम्पत्ति का, एकादश भाव प्राप्ति का तथा पंचम, नवम एवं दशम भाव माध्यम या रोजगार के प्रतिनिधि भाव माने गये हैं, अतः इन भावों तथा इनके स्वामियों पर पाप प्रभाव होने पर लाभ से सम्बन्धित कार्यों में स्वाभाविक रूप से रुकावट, देरी एवं परेशानी उत्पन्न होती है। यदि उक्त भाव तथा इनके स्वामी

ग्रह पाप प्रभाव से मुक्त तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों, तो प्रचुर मात्रा में लाभ होता है। इसके अलावा प्रश्न कुण्डली में निम्नलिखित योगों में से कोई एक योग हो, तो प्रश्नकर्त्ता को धन लाभ होता है—

धन लाभ के योग

(१) द्वितीयेश अपनी उच्च राशि में चन्द्रमा या लग्नेश के साथ हो और और उनपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो।

(२) द्वितीयेश, लग्नेश और चन्द्रमा ये तीनों लग्न, द्वितीय, पंचम या नवम स्थान में हों।

(३) लग्न में शुभ ग्रह, पंचम में उच्च राशिगत बुध और लाभ स्थान में उच्च राशिगत शुक्र हो।

(४) लग्नेश लग्न को और लाभेश लाभ स्थान को देखता हो।

(५) लग्नेश, लाभेश और चन्द्रमा एक-दूसरे को देखते हों।

(६) लग्नेश लग्न में और चन्द्रमा एवं लाभेश लाभ स्थान में हों।

(७) लग्नेश एवं धनेश में नक्त योग हो।

(८) बुध, गुरु एवं शुक्र की द्वितीय और एकादश स्थान पर दृष्टि हो तथा लाभेश एवं भाग्येश दोनों नवम स्थान में हों।

(९) नवम भाव में शुभ ग्रह बैठे हों या देखते हों और नवमेश तथा लाभेश इत्थशाल योग हो।

(१०) लग्नेश एवं अष्टमेश दोनों अष्टम स्थान में एक ही द्रेष्काण में हों, तो निश्चित रूप से लाभ होता है।

धन लाभ के बाधक योग

(१) लग्नेश स्वयं पाप ग्रह हो तथा द्वितीय एवं एकादश स्थान पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो, तो लाभ नहीं होता।

(२) बलवान् पाप ग्रह द्वितीय और एकादश स्थान में बैठे

हों, तो लाभ नहीं होता। यदि बहुत दिनों के बाद कदाचित्, लाभ हो, तो अशुभ घटना घटती है।

(३) धनेश एवं लग्नेश पाप ग्रहों के साथ इत्थशाल करते हों, तो लाभ के चक्कर में व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

(४) यदि बुध लग्न में स्थित हो और उसे चन्द्रमा तथा क्रूर ग्रह देखते हों, तो लाभ के साथ-साथ दुर्घटना घटती है।

(५) धनेश एवं लाभेश पाप वर्ग में हों, लग्न और चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि हों, तो पूरा प्रयत्न करने पर भी लाभ नहीं होता।

लाटरी एवं सट्टे आदि से लाभ योग

प्रश्न कुण्डली में यदि निम्नलिखित कोई योग हो तो लाटरी, सट्टा जुआ या वायदे के व्यापार से धन लाभ होता है।

(१) प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, लाभेश एवं राशीश (प्रश्न-कर्त्ता की राशि का स्वामी) ये तीनों लाभ या धन स्थान में हों तथा इनको पूर्ण चन्द्रमा और पंचमेश मित्र दृष्टि से देखता हो तो व्यक्ति को लाटरी, घुड़दौड़ या द्यूत आदि से लाभ होता है।

(२) लग्नेश, लाभेश एवं पंचमेश ये तीनों लग्न में हों और चंद्रमा की इनपर दृष्टि हो तथा राशीश एवं चन्द्रमा में इत्थशाल योग हो तो सट्टे या वायदे के व्यापार से निश्चित लाभ होता है।

(३) प्रश्न कुण्डली में उच्च राशिगत गुरु द्वितीय भाव में बैठा हो, उसपर शुभ और मित्र ग्रहों की दृष्टि हों तथा लग्नेश का भाग्येश या पंचमेश के साथ इत्थशाल योग हो तो लाटरी या आकस्मिक रूप से प्रचुर धन लाभ होता है।

(४) बुध लाभेश होकर परमोच्चांश पर द्वितीय भाव में बैठा हो, उच्चाभिलाषी चन्द्रमा को गुरु एवं लग्नेश देखते हों, तो व्यक्ति को लाटरी, घुड़दौड़ आदि से अच्छा लाभ होता है।

(५) प्रश्न के समय यदि ३, ५, ७ एवं ११वें स्थान में

शुभ ग्रह स्थित हों, इनपर शुभ ग्रह या मित्र ग्रहों की दृष्टि हों तो उस दिन जुआ खेलने से लाभ होता है। उक्त स्थानों में पाप ग्रह बैठे हों या उनकी दृष्टि हो तो हानि होती है।

चोरी गई वस्तु का लाभ

प्रश्न कुण्डली में लग्नेश से उस व्यक्ति का विचार करते हैं, जिसका सामान चोरी हुआ है तथा सप्तम से चोर और चन्द्रमा, सूर्य तथा वस्तु के भावेश से चोरी गई वस्तु का विचार करते हैं। चोरी गया या अपहृत सामान तब मिलता है जब प्रश्न कुण्डली में अधोलिखित कोई योग हो—

(१) यदि लग्नेश और दशमेश में या तृतीयेश नवमेश एवं सप्तमेश में इत्थशाल हों तो किसी की सहायता से चुराया गया सामान मिलता है।

(२) लग्नेश और सप्तमेश पाप ग्रहों से दृष्ट हों अथवा धनेश और अष्टमेश दोनों लग्नेश एवं दशमेश से दृष्ट हों तो पुलिस की सहायता से चोर तथा चुराया सामान मिल जाता है।

(३) धनेश एवं अष्टमेश पर चतुर्थेश की दृष्टि हो या लग्न एवं नवम स्थान में शुभ ग्रह तथा सप्तम में पाप ग्रह हो तो चुराये गये धन का अधिकांश भाग मिल जाता है।

(४) लग्नेश एवं चन्द्रमा सप्तम स्थान में पाप ग्रहों से दृष्ट हों अथवा लग्नेश एवं दशमेश का मुथशिल योग हो तो चोरी गया धन आधा मिलता है।

(५) बलवान् चन्द्रमा लग्न में तथा बलवान् शुभ ग्रह लाभ स्थान में हो, सप्तम भाव या सप्तमेश पर पाप ग्रहों की दृष्टि हों तो चुराया सामान और चोर दोनों पकड़े जाते हैं।

नष्ट या खो गए धन का लाभ

धन, सम्पत्ति या अन्य मूल्यवान् वस्तु खो गई हो या नष्ट हो गई हो तो उसकी प्राप्ति निम्नलिखित योगों में होती है।

यहाँ ध्यान रखना चाहिये कि जो कोई भी वस्तु अपने पास से चली जाती है, उसे नष्ट कहते हैं। प्रश्न कुण्डली में निम्नलिखित योगों में से कोई एक हो तो नष्ट वस्तु पुनः मिल जाती है—

(१) यदि लग्न, तृतीय, पंचम, नवम, दशम एवं एकादश स्थान में बलवान् शुभ ग्रह हो तथा पाप ग्रह केन्द्र, त्रिकोण एवं अष्टम स्थान में न हों तो नष्ट पदार्थ शीघ्र मिल जाता है।

(२) प्रश्न कुण्डली में चन्द्रमा जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी ग्रह चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो नष्ट वस्तु अवश्य मिलती है।

(३) प्रश्न लग्न में शीर्षोदय राशि और शुभ ग्रह हों तथा एकादश भाव में बलवान् चन्द्रमा या शुभ ग्रह हो तो नष्ट पदार्थ शीघ्र मिल जा:ा है।

(४) धनेश एवं चन्द्रमा में इत्थशाल योग हो या धनेश, चन्द्रमा एवं लग्नेश तीनों ७वें स्थान में हों तो नष्ट वस्तु पुनः प्राप्त होती है।

(५) धनेश लग्न में और लग्नेश धन में हो तथा इनमें इत्थशाल योग हो अथवा लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो, तो भी खोई वस्तु निश्चितत: मिल जाती है।

विवाह विचार

प्रश्न कुण्डली में लग्नेश, सप्तमेश एवं शुक्र के परस्पर सम्वन्ध के आधार पर विवाह का विचार करना चाहिए। उक्त ग्रह तथा लग्न और सप्तम भाव पर शुभ ग्रह और विशेषकर गुरु की दृष्टि अपना विशेष प्रभाव डालती है। प्रश्न शास्त्र में विवाह से तात्पर्य यौनि-सम्वन्ध या यौनि सन्तुष्टि से है, अतः सुरति, सम्भोग, शारीरिक और यौनि-सम्वन्धों के स्थायित्व का विचार विवाह के योगों के अनुसार करना चाहिए।

प्रश्न कुण्डली में अधोलिखित योग में से कोई एक योग होने

पर विवाह होता है—

(१) लग्न से सम स्थान में शनिश्चर हो, तो वर को वध और विषम स्थान में शनिश्चर हो, तो कन्या को वर अवश्य मिलता है।

(२) केन्द्र और त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह हों तथा लग्न से ३, ६ एवं ७वें स्थान में सूर्य, बुध और गुरु से दृष्ट चन्द्रमा हो, तो विवाह शीघ्र होता है।

(३) प्रश्न कुण्डली में १, ७, १० एवं ११वें स्थान में बलवान् शुक्र हो तथा इसे शुभ ग्रह देखते हों, तो सुन्दर स्त्री के साथ तथा लग्न या सप्तम में स्थित शुक्र का चन्द्रमा के साथ इत्थशाल हो, तो अच्छे कुल की कन्या के साथ विवाह होता है।

(४) यदि बलवान् शुक्र केन्द्र या त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और इसका बुध के साथ इत्थशाल हो, तो बुद्धिमान् एवं विदुषी स्त्री के साथ विवाह होता है।

(५) गुरु लग्न या सप्तम स्थान में चर राशि में हो, सप्तमेश बलवान् हो और पाप ग्रह केन्द्र तथा अष्टम स्थान में न हों, तो सुन्दर, सम्पन्न एवं सुशील कन्या के साथ विवाह होता है।

(६) दशम या सप्तम स्थान में उच्च राशिगत चन्द्रमा को गुरु और शुक्र देखते हों, तो धनवान्, प्रतिष्ठित एवं सुसंस्कृत परिवार में विवाह होता है।

(७) विषम राशि लग्न में हो, तथा गुरु और शुक्र क्रमशः ११वें तथा ७वें स्थान में हों, तो कन्या का शीघ्र विवाह होता है।

(८) चतुर्थ स्थान में शुक्र एवं सप्तमेश हों, विधवा/विधुर के साथ विवाह होता है। इन ग्रहों पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हों, तो औपचारिक रूप से विवाह नहीं होता, किन्तु व्यक्ति

किसी के साथ स्थायी रूप से यौनि-सम्बन्ध रखता है।

(९) सप्तम स्थान में पाप ग्रह और ६ठे स्थान में शुभ ग्रह हों, तो विवाह के बाद पति-पत्नी की मृत्यु हो जाती है। किसी शुभ ग्रह की सप्तम स्थान पर दृष्टि हो, तो विवाह के बाद तलाक हो जाता है।

(१०) सप्तम स्थान में चर राशि में चन्द्रमा शुक्र से दृष्ट हो तथा केन्द्र स्थान में पाप ग्रह हों, तो व्यक्ति के कई विवाह होते हैं। लग्न में चन्द्रमा और शुक्र पर सप्तमेश की दृष्टि हो, तो भी एकाधिक विवाह होते हैं।

दाम्पत्य सुख

दाम्पत्य सम्बन्ध एवं सुख का विचार लग्नेश और सप्तमेश की दृष्टि एवं युति आदि से करना चाहिए। प्रश्न कुण्डली में यदि अधोलिखित योग हों, तो पति-पत्नी में अटूट प्रेम होता है—

(१) लग्नेश और सप्तमेश परस्पर एक-दूसरे के स्थान में बैठे हों या देखते हों, तो दाम्पत्य-जीवन सुखमय होता है।

(२) लग्नेश एवं सप्तमेश एक-साथ लग्न या सप्तम में बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट हों, तो पति-पत्नी में अनन्य प्रेम होता है।

(३) लग्नेश एवं सप्तमेश में इत्थशाल योग हो, तो दम्पत्ति समान विचारधारा वाले तथा एक-दूसरे के सहयोगी होते हैं।

(४) यदि लग्नेश एवं सप्तमेश परस्पर मित्र हों या एक-दूसरे को मित्र दृष्टि से देखते हों, तो दाम्पत्य-सम्बन्ध मधुर रहते हैं।

(५) यदि बलवान् लग्नेश लग्न में हो, तो पत्नी पति की आज्ञाकारिणी और वह सप्तम में हो, तो पति पत्नी की हर बात को मानने वाला होता है।

(६) लग्नेश एवं सप्तमेश का यदि चन्द्रमा के साथ कम्बूल

योग हो, तो पति-पत्नी सरल, भावुक एवं एक-दूसरे पर जी-जान देने वाले होते हैं।

दाम्पत्य कलह एवं तलाक योग

प्रश्न कुण्डली में लग्नेश एवं सप्तमेश परस्पर शत्रु हों या एक-दूसरे को शत्रु दृष्टि से देखते हों, तो पति-पत्नी में मतभेद एवं कलह के कारण दाम्पत्य-जीवन दुःखमय रहता है।

यदि सप्तमेश त्रिक् स्थान में निर्बल या पाप ग्रहों से युक्त हों, तो प्रश्नकर्त्ता अपने पति-पत्नी के स्वभाव या स्वास्थ्य से परेशान रहता है।

यदि निर्बल सूर्य सप्तमेश के साथ हो, पुरुष नीच स्वभाव या बदचलन होता है और निर्बल शुक्र सप्तमेश के साथ हो, तो स्त्री दुष्टा या चरित्रहीन होती है।

लग्नेश एवं सप्तमेश नीच, शत्रु राशिगत या अस्तंगत हो, तो दाम्पत्य-जीवन कलह, मतभेद एवं असहयोग के कारण कष्टमय रहता है।

यदि सूर्य या चन्द्रमा सप्तमेश हों अथवा बुध या शनि सप्तमेश हों और इनमें से कोई एक त्रिक् स्थान में हो तथा ये एक-दूसरे को देखते हों, तो नपुंसकता, बन्ध्यायन अथवा यौनि संतुष्टि न होने के कारण दाम्पत्य-जीवन क्लेशमय हो जाता है।

सप्तमेश त्रिक् स्थान में हो तथा पाप ग्रह सप्तम स्थान में हों, तो विवाह के बाद पति-पत्नी में तलाक हो जाता है।

यदि सप्तमेश व्यय स्थान में और व्ययेश सप्तम स्थान में हो तथा सप्तम स्थान पर पाप ग्रह की दृष्टि हो, तो दाम्पत्य-जीवन में विघटन या तलाक हो जाता है।

लग्नेश चन्द्रमा का मंगल के साथ ईसराफ योग हो, तो स्त्री अपने पति को छोड़कर किसी अन्य पुरुष के साथ भाग जाती है।

प्रेम एवं यौनि-सम्बन्ध

प्रश्नकर्त्ता का किससे प्रेम है या वह किसके साथ यौनि-सम्बन्ध रखता है ? इस मार्मिक प्रश्न का निश्चय इस प्रकार करना चाहिए—

यदि प्रश्न लग्न में बाल्यावस्था का चन्द्रमा या बुध बैठा हो अथवा इनमें से किसी एक की लग्न पर दृष्टि हो, तो पृच्छक किसी कुमारी या अविवाहिता स्त्री से प्रेम या अवैध सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार यदि लग्न में शुक्र हो या उसकी दृष्टि हो तो वह किसी तेज-तर्रार सुन्दर युवती के प्रेमपाश में बँधा होता है। यदि लग्न में सूर्य या गुरु हों अथवा इनकी दृष्टि हो, तो पृच्छक किसी प्रौढ़ा के साथ प्रेम करता है। लग्न में मंगल हो, तो व्यभिचारिणी के साथ और शनि हो, तो धनवती वृद्धा या विधवा के साथ उसका अवैध सम्बन्ध होता है। प्रश्न करने वाली महिला हो, तो इन योगों में उक्त प्रकार के पुरुष के साथ सम्बन्ध होता है।

प्रश्न लग्न से सप्तम स्थान में सूर्य, मंगल या शुक्र हो, तो परकीया (दूसरे की स्त्री) के साथ, गुरु हो, तो अपनी परिणीता स्त्री के साथ, चन्द्रमा या बुध हो, तो वैश्या या व्यभिचारिणी के साथ और शनि हो, तो नीच जाति की स्त्री के साथ संभोग होता है। इस योग में स्त्री की अवस्था का निश्चय चन्द्रमा की अवस्था के आधार पर करना चाहिये। यदि सप्तम स्थान में एक से ज्यादा पाप ग्रह हो, तो व्यक्ति को प्रयास करने पर भी संभोग-सुख नहीं मिल पाता।

गर्भ प्रश्न विचार

कोई स्त्री गर्भवती है या नहीं ? यह निश्चय करने के लिए प्रश्न कुण्डली में लग्न, पंचम एवं नवम भाव और इसके स्वामी ग्रह तथा चन्द्रमा का सूक्ष्म दृष्टि से विचार करना चाहिये। हमारे अनुभव में आया है कि यदि प्रश्न कुण्डली में निम्नलिखित

कोई योग हो, तो स्त्री गर्भवती होती है, अन्यथा नहीं ।

गर्भिणी योग

(१) यदि लग्न एवं पंचम भाव में शुभ ग्रह हों या लग्नेश एवं सप्तमेश दोनों एक-साथ लग्न या सप्तम स्थान में हों, तो स्त्री गर्भवती होती है।

(२) यदि लग्न, एकादश एवं पंचम स्थान में बलवान् शुभ ग्रह हों तथा ये वक्री या अस्त न हों, तो स्त्री गर्भवती होती है।

(३) यदि लग्नेश और चन्द्रमा लग्न या पंचम भाव में बैठे हों और पंचम भाव पर पंचमेश की दृष्टि हो, तो स्त्री गर्भवती होती है।

(४) लग्नेश और चन्द्रमा केन्द्र स्थान में स्थित होकर पंचमेश से इत्थशाल करते हों, तो स्त्री गर्भवती होती है।

गर्भ भ्रांति योग

यदि चन्द्र और पंचमेश साथ हों और इनमें से कोई एक पाप ग्रह के साथ ईशराफ योग करता हो अथवा पंचमेश आपोक्लिम स्थान में चन्द्रमा या लग्नेश के साथ बैठकर पाप ग्रह से इत्थशाल करता हो, तो स्त्री गर्भिणी नहीं होती, किन्तु प्रश्नकर्त्ता को गर्भ की भ्रान्ति होती है।

गर्भपात होगा या नहीं ?

यदि व्ययेश शुभ ग्रहों के साथ केन्द्र में स्थित हों अथवा पंचम भाव में पाप ग्रह हों तथा लग्नेश भी पाप ग्रह के साथ इत्थशाल करता हो, तो गर्भपात होता है ।।

यदि लग्नेश, चन्द्रमा या पंचमेश किसी वक्री या पाप ग्रह से दृष्ट या युक्त हों अथवा पंचमेश त्रिक् (६, ८, १२) स्थान में हों और पंचम भाव पर पाप ग्रहों की दृष्टि हों, तो गर्भपात हो जाता है।

किन्तु यदि पंचमेश शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो और पंचम

स्थान पर शुभ ग्रहों का प्रभाव हो, तो गर्भ सुखपूर्वक स्थिर रहता है। गर्भिणी का स्वास्थ्य ठीक और मन प्रसन्न रहता है।

गर्भ किसका है ?

प्रश्न कुण्डलो में यदि लग्नेश और पंचमेश शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त या पाप ग्रह स्थित राशि में हों अथवा लग्न में द्विस्वभाव राशि प्रथम होरा में हो, तो अपने पति से गर्भ होता है। लग्न, चन्द्रमा या पंचम भाव पर गुरु का प्रभाव हो, तो निश्चित रूप से गर्भ पति का होता है, किन्तु इस योग में गर्भ-विषयक भ्रान्ति या चरित्र पर संदेह अवश्य होता है।

किन्तु यदि लग्नेश एवं पंचमेश पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों या पाप ग्रह चर राशि में हों अथवा लग्न में द्विस्वभाव राशि की दूसरी या तीसरी होता हो, तो परपुरुष से गर्भ होता है। पंचम भाव पंचमेश एवं चन्द्रमा में से किसी एक को सूर्य और शनिश्चर देखते हों, तो गर्भ निश्चित रूप से परपुरुष का होता है। यदि पंचमेश या पंचम भाव लग्नेश अथवा गुरु से दृष्ट युक्त हों, तो गर्भ अपने पति का होता है।

गर्भ में पुत्र है या कन्या

यदि लग्न और लग्नेश विषम राशि या उसके नवांश में हों, शनैश्चर लग्न के अलावा किसी भी स्थान में विषम राशि में स्थित हो, या लग्न पंचम एवं नवम स्थान में पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल एवं गुरु) बैठे हों, तो गर्भ में पुत्र कहना चाहिए। प्रश्न कुण्डली में पंचम स्थान के नवांश का स्वामी ग्रह बलवान् होकर पुरुष राशियों में स्थित हो और शुभ ग्रह देखते हों तो पुत्र का जन्म होता है। पुरुष राशि में स्थित पंचमेश का पुरुष ग्रह के साथ इत्थशाल हो अथवा लग्न, पंचम एवं चन्द्रमा को पुरुष ग्रह देखते हों, तो पुत्र का जन्म होता है।

यदि लग्न और लग्नेश सम राशि में हों, लग्नेश और पंचमेश

को शनि एवं शुक्र देखते हों अथवा पंचम भाव एवं पंचमेश सम राशि में हों, तो कन्या का जन्म कहना चाहिए। यदि पंचम स्थान में सम राशि हो तथा पंचम स्थान और पंचमेश पर बुध, शुक्र या चन्द्रमा की दृष्टि हो, तो गर्भ में कन्या कहनी चाहिए। अपराह्न के समय प्रश्न किया जाए तथा कुण्डली में चन्द्रमा सूर्य से पीछे हो, तो भी गर्भ में कन्या होती है।

सरल उपाय

प्रश्नकालीन तिथि, वार, नक्षत्र एवं प्रहर की संख्या जोड़कर एक घटायें और फिर उसमें ७ से भाग दें। यदि विषम संख्या शेष बचे, तो पुत्र और सम संख्या शेष बचे, तो कन्या का जन्म होता है।

दो बच्चों के जन्म का योग

यदि पंचम स्थान में शुभ ग्रह और लग्न में द्विस्वभाव राशि हो या चन्द्रमा और शुक्र सम राशि में तथा सूर्य, मंगल, गुरु और शनि विषम राशि में हों, तो २ पुत्रों का जन्म होता है। सम राशि के चन्द्रमा और पंचम स्थान को सम राशिगत बुध, गुरु एवं शनि देखते हों, तो २ कन्याओं का जन्म होता है।

लग्न एवं चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि में हों और २-२ ग्रह प्रश्न कुण्डली में ४ स्थानों में हों, तो २ बच्चों का जन्म होता है, किन्तु यहाँ ध्यान रखना चाहिए कि ये ग्रह यदि विषम राशि में हों, तो २ पुत्र, सम राशि में हों तो २ कन्या और सम तथा विषम दोनों राशियों में हों, तो १ पुत्र एवं १ कन्या का जन्म होता है।

प्रसव काल विचार

प्रश्न लग्न में जितने नवांश बीत गए हों, उतने मास का गर्भ होता है तथा जितने नवांश शेष हों, उतने मास बाद प्रसव होता है। लग्न में पुरुष ग्रह हो, तो शुक्ल पक्ष में और स्त्री ग्रह हो, तो कृष्ण पक्ष में जन्म होता है। लग्न के द्रेष्काण एवं नवांश के

स्वामियों में जो ग्रह बलवान् हो उस वार को जन्म होता है। लग्न में दिवाबली राशि और दिवाबली ग्रह हो, तो दिन में; रात्रिबली राशि तथा रात्रिबली ग्रह हों, तो रात्रि में तथा दिवाबली ग्रह और रात्रिबली राशि या रात्रिबली ग्रह और दिवाबली राशि हो, तो संध्याकाल में जन्म होता है। प्रसव काल का ज्ञान करने के लिये गर्भिणी की राशि से घातक चन्द्रमा का विचार भी कर लेना चाहिए।

शिशु जीवित रहेगा या नहीं

शिशु के जीवन या मरण के बारे में प्रश्न हो, तो उसकी जन्म-पत्रिका बनाकर बालारिष्ट एवं अरिष्ट भंग योगों का अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए। फिर प्रश्न कुण्डली के योगों के आधार पर जीवन-मृत्यु का निर्णय करना चाहिये। यदि व्ययेश पंचम या केन्द्र स्थान में स्थित हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तथा बलवान् चन्द्रमा केन्द्र में हो, तो शिशु दीर्घजीवी होता है।

प्रश्न कुण्डली में गुरु पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो और व्यय स्थान भी पाप ग्रहों से प्रभावित हो, तो शिशु मर जाता है। इसी प्रकार यदि व्ययेश पाप ग्रहों के साथ आपोक्लिम स्थानों में हो, तो भी शिशु मर जाता है।

विवाद मुकद्दमा एवं युद्ध

हमारे प्राचीन आचार्यों ने पाँच प्रकार के युद्ध बतलाये हैं— १. वाक् युद्ध, २. द्यूत युद्ध, ३. मदन युद्ध, ४. मल्ल युद्ध या द्वन्द्व युद्ध एवं ५. सैन्य युद्ध। वाक् युद्ध से तात्पर्य वाद-विवाद, शास्त्रार्थ, खण्डन-मण्डन या किसी विषय के पक्ष एवं विपक्ष में मौखिक तर्क और युक्ति प्रस्तुत करने से है। जुआ एवं अन्य खेलों में दो पक्षों (टीम) के जीतने के प्रयास एवं संघर्ष को द्यूत युद्ध कहते हैं। संभोग एवं रति भी एक प्रकार का युद्ध माना गया है। इसमें जिसका शीघ्र पतन होता है वह पराजित माना जाता है। दो

पहलवान या योद्धाओं की भिड़न्त को द्वन्द्व युद्ध और दो देशों की सेनाओं की लड़ाई को सैन्य युद्ध कहते हैं। वस्तुत: दैनिक जीवन में आने वाले समस्त हार-जीत के प्रश्नों को हम इन ५ प्रकार के युद्धों के वर्ग में रख सकते हैं। मुकद्दमाबाजी, फौजदारी, विवाद, चुनाव एवं अन्य झगड़े-झंझट सबका समावेश इन्हीं युद्धों में किया जा सकता है। यहाँ हम केवल मुकद्दमे के प्रश्न का विस्तार से विचार कर रहे हैं। अन्य विवाद, लड़ाई-झगड़े, चुनाव एवं सैनिक युद्धों में जीत-हार की जानकारी के लिए जिज्ञासु पाठक ज्योतिष शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थों का अवलोकन करें।

मुकद्दमा-विचार

जो व्यक्ति मुकद्दमा दायर करता है, उसे वादी तथा जिस पर मुकद्दमा/अभियोग चलाया जाता है वह प्रतिवादी कहलाता है। प्रश्न कुण्डली में नवम स्थान से द्वितीय स्थान तक ६ भाववादी का और तृतीय स्थान से अष्टम स्थान पर्यन्त ६ भाव प्रतिवादी का प्रतिनिधित्व करते हैं, अत: प्रश्न कुण्डली में ९वें स्थान से दूसरे स्थान तक समस्त शुभ ग्रह बलवान् होकर बैठे हों, तो मुकद्दमे में वादी की और यदि तीसरे स्थान से ८वें स्थान तक समस्त शुभ ग्रह बलवान् होकर बैठे हों, तो प्रतिवादी की जीत होती है। मिश्रित ग्रहों के बैठने पर आपस में फैसला हो जाता है।

प्रश्न लग्नवादी का और लग्न से सप्तम स्थान प्रतिवादी का प्रतिनिधित्व करते हैं, अत: लग्न में शुभ ग्रह या लग्नेश हों अथवा लग्न पर शुभ ग्रह और लग्नेश की दृष्टि हो, तो मुकद्दमे में वादी की जीत होती है। इसी प्रकार यदि सप्तम स्थान में शुभ ग्रह हों या सप्तमेश हो अथवा शुभ ग्रह और सप्तमेश की दृष्टि हो, तो प्रतिवादी की जीत कहनी चाहिये।

अन्य योग

(१) प्रश्न लग्न में क्रूर ग्रह हों, तो प्रश्नकर्त्ता मुकद्दमे में

जीतता है और यदि सप्तम स्थान में क्रूर ग्रह हों, तो उसका शत्रु जीत जाता है।

(२) लग्नेश और सप्तमेश में ईशराफ योग हो, तो मुकद्दमा अधिक समय तक चलता है।

(३) लग्नेश वक्री हो, तो वादी की और सप्तमेश वक्री हो, तो प्रतिवादी की हार होती है।

(४) लग्नेश और सप्तमेश का यदि चन्द्रमा के साथ इत्थशाल हो या उन दोनों का मित्र दृष्टि से इत्थशाल हो तो अदालत मुकद्दमे का शीघ्र फैसला देती है।

(५) लग्न और सप्तम दोनों स्थान में पाप ग्रह हों, तो जिस स्थान में अधिक बलवान् ग्रह हों उस पक्ष की जीत होती है।

(६) लग्नेश और सप्तमेश द्वितीय भाव में द्विस्त्र भाव राशि में हों, तो अदालत मुकद्दमे को पंचायत के सुपुर्द कर देती है।

(७) प्रश्न कुण्डली में लग्नेश पाप ग्रहों से दृष्ट हों और ५, ७, ८ एवं ९वें स्थान में पाप ग्रह हों, तो प्रतिवादी को दण्ड मिलता है।

(८) भाग्य स्थान में दो पाप ग्रह हों, तो प्रश्नकर्त्ता की हार और दो शुभ ग्रह हों, तो जीत होती है।

(९) यदि लग्न, षष्ठ एवं सप्तम स्थान के स्वामी मित्र हों, या लग्नेश ५वें और शुभ ग्रह केन्द्र में हों, तो दोनों पक्षों में समझौता हो जाता है।

(१०) लग्नेश, षष्ठेश और सप्तमेश प्रश्न कुण्डली में ६ठे स्थान में हों, तो नये मुकद्दमे और शुरू हो जाते हैं।

(११) सप्तमेश या लग्नेश अपनी उच्च राशि में बैठकर दशमेश के साथ इत्थशाल करें तो न्यायाधीश किसी सिफारिश या प्रभाव से उसका पक्षपात करता है।

(१२) केन्द्र में स्थित मंगल दशमेश शनि को देखे तो व्यक्ति

को प्रभाव या दबाव के कारण न्यायाधीश दण्ड देता है।

रोग-विचार

प्रश्न कुण्डली में लग्न चिकित्सक का, चतुर्थ स्थान निदान और औषधि का, षष्ठ और सप्तम भाव रोग का तथा दशम भाव रोगी का प्रतिनिधित्व करता है, अत: यदि प्रश्न लग्न में शुभ ग्रह बैठे हों या देखते हों अथवा लग्नेश शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर केन्द्र/त्रिकोण स्थान में बैठा हो तो चिकित्सा करने वाला डॉक्टर/वैद्य योग्य और अनुभवी होता है। यदि लग्न में पाप ग्रह हों, लग्नेश त्रिक् स्थान में हो, वह पाप ग्रहों से दृष्ट/युक्त हो अथवा नीच राशि, शत्रु राशि या अस्तंगत हो तो रोगी का इलाज करने वाला चिकित्सक अयोग्य या नीम-हकीम होता है।

यदि लग्न से चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह हों या उसपर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, चतुर्थेश शुभ ग्रह या मित्र ग्रहों से दृष्ट/युक्त हो, साधारण उपचार, औषधि या शान्ति से रोग ठीक हो जाता है। चतुर्थ भाव पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो अथवा चतुर्थेश निर्बल होकर पाप ग्रहों के प्रभाव में हो, तो उस समय मिलने वाली दवा से रोगी को लाभ नहीं होता।

प्रश्न के समय षष्ठ एवं सप्तम भाव पर शुभ प्रभाव हो, षष्ठेश और सप्तमेश निर्बल हों या इनको शुभ ग्रह देखते हों तो रोग शनैः-शनैः उचित समय में ठीक हो जाता है। इसके विपरीत, इन भावों पर अशुभ प्रभाव हो या षष्ठेश और सप्तमेश बलवान् हो, तो रोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता चला जाता है।

प्रश्न काल में दशम स्थान शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों और दशमेश बलवान् हो तो रोगी इलाज/उपचार से ठीक/स्वस्थ हो जाता है और यदि इस स्थान में पाप ग्रह हों या दशमेश नीच, शत्रु या त्रिक् स्थान में निर्बल हो, तो रोगी बदपरहेजी या अपनी

भूल से रोग को बढ़ा डालता है।

रोग निदान

प्रश्न कुण्डली में अष्टम स्थान में स्थित ग्रह और षष्ठेश के आधार पर रोग निदान करना चाहिए। सामान्यतया अष्टम स्थान में स्थित ग्रह के अनुसार रोग का निश्चय होता है, किन्तु यदि अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो तो षष्ठ (रोग) स्थान के स्वामी के अनुसार रोग का निर्णय करना चाहिए। तात्पर्य यह है कि प्रश्न कुण्डली के अष्टम भाव में बैठा ग्रह या षष्ठेश रोग का प्रतिनिधि या कारक होता है।

सूर्य आदि ग्रह रोग कारक हों, तो व्यक्ति को निम्नलिखित रोगों में से कोई रोग होता है—

रोगकारक ग्रह	रोग
सूर्य	ज्वर, पित्त विकार, हृदय रोग, नेत्र विकार, सिर दर्द, हड्डी में दर्द, वमन एवं बेचैनी।
चन्द्रमा	नजला-जुकाम, सर्दी, कफ-खाँसी, फेफड़ों की कमजोरी, श्वास, क्षय एवं मानसिक रोग।
मंगल	तीव्र ज्वर, हाथ-पैरों में जलन, चेचक, खसरा, चोट, रक्तचाप, पेचिश एवं कैन्सर।
बुध	बुद्धि भ्रम, त्रिदोष, सन्निपात, चर्म-रोग, एलर्जी, हिस्टीरिया, पागलपन एवं मिर्गी।
गुरु	पीलिया, जिगर, उदर विकार, मेद रोग, गुर्दे में विकार, वायु रोग, गैस एवं फाइलेरिया।
शुक्र	वीर्य विकार, शीघ्र पतन, सुजाक, मधुमेह प्रदर, गुप्त रोग, कमजोरी एवं नेत्र रोग।
शनि	वायु विकार, जोड़ों में दर्द, स्नायविक दुर्बलता, गठिया, सूखा, कमजोरी एवं पेट दर्द।

रोगकारक ग्रह	रोग
सूर्य+मंगल	पित्त विकार, रक्त विकार, ब्लड प्रेशर, बवासीर, पेचिश, सिर दर्द एवं चोट।
सूर्य+बुध	सन्निपात, मियादी बुखार, एलर्जी, पीलिया, जिगर, फ़ेफड़ों की खराबी और क्षय रोग।
सूर्य+शनि	वायु रोग, शस्त्र से चोट, लकवा, दिल का दौरा, हर्निया, पोलियो एवं चोट।
सूर्य+राहु	कुष्ठ, कैन्सर, एनीमिया, कम्बवात, गर्भाशय के रोग, प्रदर एवं यौनि रोग।
सूर्य+शुक्र	वीर्य रोग, गुप्त रोग, काम ज्वर, पागलपन एवं स्त्री रोग।
सूर्य+चन्द्रमा	कफ विकार, दस्त, हैजा, अतिसार प्रमेह एवं धातु क्षय।
सूर्य+गुरु	अपचन, कब्ज, तिल्ली, वमन (उल्टी), चर्म रोग, सूजन और शीत पित्त।
सूर्य+केतु	अण्डकोष में वृद्धि, आपरेशन, गर्भपात, रक्तपात एवं दौरा पड़ने वाले रोग।

अन्य ग्रहों के परस्पर योग के आधार पर विविध रोगों का निश्चय करने के लिए प्रश्न-शास्त्र के अन्य ग्रहों का अवलोकन करें।

साध्य एवं असाध्य रोग

प्रश्न कुण्डली में १,५,७ एवं ८वें स्थान में पाप ग्रह हों और चन्द्रमा क्षीण या बलहीन हो, तो रोग असाध्य होता है तथा यह मृत्युपर्यन्त बढ़ता चला जाता है। यदि प्रश्न काल में उक्त स्थानों में शुभ ग्रह हों तथा बलवान् चन्द्रमा उपचय स्थान में बैठा हो, तो रोग साध्य होता है तथा इलाज करने से रोगी स्वस्थ हो जाता है।

मूक प्रश्न जैसे जटिल और गम्भीर विषय को जन-साधारण के लाभ के लिए अंक-यंत्रों के द्वारा सुगम रीति से प्रस्तुत करने का प्रयास प्राचीन काल से किया जाता रहा है। हमारे पूर्वज महर्षियों एवं मनीषियों ने मूक प्रश्न जैसी गूढ़ पहेली को सुलझाने के लिए सैकड़ों अंक-यन्त्रों का वर्णन किया है। यहाँ हम पाठकों की जानकारी के लिए कतिपय अनुभूत यन्त्रों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

संख्या यन्त्र—१

१	२	३	४	५	६	७	८
१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१
४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६
६४	६३	६२	६१	६०	५९	५८	५७

उपरिलिखित यन्त्र में ६४ कोष्ठक हैं। उक्त आकृति का यन्त्र अष्ट-धातु, ताम्र-पत्र या आम की तख्ती पर बनाकर रख लेना चाहिए। जब कोई व्यक्ति प्रश्न पूछने आवे, तो ज्योतिषी को चाहिए कि वह प्रश्नकर्त्ता से अपने इष्ट का स्मरण कराकर, प्रश्न को मन में दोहराते हुए यन्त्र के किसी कोष्ठक पर उंगली रखने को कहें। प्रश्नकर्त्ता जिस कोष्ठक पर उंगली रखे, उसकी संख्या के अनुसार इस प्रकार उत्तर कहना चाहिए।

पिछले यन्त्र में १ से ६४ तक संख्यायें लिखी हैं। इनका क्रमानुसार फल इस प्रकार है—

१. आपने जिस कार्य के विषय में प्रश्न किया है, यह कार्य अभी कुछ विलम्ब से होगा। आप चिन्ता न करें। जल्दबाजी या घबराहट से कार्य नहीं बन पायेगा। मन में सन्तोष रखें और धीरे-धीरे बुद्धिपूर्वक प्रयत्न करें, क्योंकि कार्य का परिणाम सफल और आपके पक्ष में होगा। इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए।

२. आपका चिन्तित कार्य पूर्णरूपेण नहीं बन पायेगा, अतः आप व्यर्थ चिन्ता न करें। इस कार्य में लगे रहने से आपके श्रम, शक्ति और द्रव्य का अपव्यय होगा। अच्छा है कि आप अपना समय अन्य कार्य में लगावें, क्योंकि सतत और सक्रिय प्रयास से भी इस कार्य में आंशिक सफलता मिलेगी।

३. आप जिस कार्य के लिए विचार कर रहे हैं वह इस समय होने वाला नहीं है। यदि आपने दुराग्रहवश यह कार्य किया, तो आपको कष्ट अधिक और सफलता अति न्यून मिलेगी। १ सप्ताह प्रतीक्षा कीजिए। आपको वैकल्पिक कार्य मिल जावेगा तथा उस कार्य में आपको सुगमतापूर्वक सफलता मिलेगी।

४. आपका प्रश्न धन-लाभ से सम्बन्धित है, किन्तु अभी धन प्राप्ति में विलम्ब है। इस कार्य में कुछ रुकावटें भी आयेंगी। यदि आप अपने इष्ट की उपासना करें, तो अवश्य शीघ्र लाभ हो सकता है।

५. आपका प्रश्न और उसका परिणाम दोनों ही उत्तम हैं। प्रभु का विश्वास रखो और उनके ध्यान में मन लगाओ। आपको निकट भविष्य में लाभ एवं नया सहयोग मिलेगा। विरोधी निर्बल और पराजित होंगे। यदि कोई विवाद या मुकद्दमा चल रहा है, तो उसमें आप विजयी होंगे।

६. आपका कार्य होना तब तक कठिन है, जब तक आप गम्भीरता एवं सतर्कता नहीं बरतते, क्योंकि जिन्हें आप अपना मित्र समझकर अपने समस्त भेद बतला देते हैं, वे वस्तुतः आपके शत्रु हैं। वे आपकी इस कमजोरी का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। यदि आप श्री हनुमानजी की आराधना करें, तो कुछ महीनों में आपको लाभ होगा।

७. आपके कार्य का भार अकेले आपपर होने के बावजूद भी आपको घबराना नहीं चाहिए। आप अपने मित्रों से परामर्श कर विचारपूर्वक कार्य करें। आपको सफलता मिलेगी, अतः आलस्य एवं चिन्ता को छोड़कर साहस और धैर्य से काम लें।

८. आपका प्रश्न लक्ष्मी की कृपा का है। यद्यपि कार्य कठिन है, किन्तु फिर भी श्रद्धा एवं समझ के साथ लक्ष्मी की उपासना करो। महालक्ष्मी स्तोत्र का पाठ, बीजमंत्र का जप या श्रीसूक्त से हवन करो। इस वर्ष आंशिक सफलता मिलेगी। दीपावली पर माँ की उपासना का ध्यान रखना।

९. आपके विरोधी एवं शत्रु अत्यधिक हैं जो आपके कार्यों में विघ्न-बाधाएँ उपस्थित करते रहते हैं। आप इनकी मीठी बात, झूठे प्रलोभन और माया जाल से सावधान रहें। यदि बुद्धिमत्ता-पूर्वक कार्य करोगे, अवश्य सफलता पाओगे।

१०. आजकल आपकी मानसिक स्थिति विशेष अच्छी नहीं है। मानसिक आन्दोलनों एवं अन्तर्द्वन्द्वों से मन डाँवाडोल रहता है। आप भावुकता, जल्दबाजी एवं अविवेक से अपने कार्य बिगाड़ सकते हो। यदि स्वयं को संयत कर प्रभु का ध्यान करें, तो आपमें आत्मविश्वास उत्पन्न होगा और आत्मविश्वास के बाद अधिकाधिक कार्यों में सफलता मिल पावेगी।

११. आप जिस कार्य को करना चाहते हो वह कठिन अवश्य है, परन्तु साहस, धैर्य एवं आत्मविश्वास के साथ प्रयत्नशील

रहो। यदि आप भगवान् शंकरजी के स्तोत्र, मंत्र या स्तवन को नियमित रूप से करें, तो यह कार्य कुछ ही दिनों में बन जावेगा।

१२. आपका समय काफी दिन से प्रतिकूल चल रहा है, किन्तु कुछ ही दिनों के बाद आपका अच्छा समय आने वाला है। आप चिन्ता न करें। आप अपने इष्ट का ध्यान करें। आलस्य को त्यागकर अपने कार्य में जुट जाइये। लग्न एवं निष्ठा से काम करने पर शुभ परिणाम सामने आवेंगे तथा सोचे हुए समस्त कार्य बन जावेंगे। श्री दुर्गा माँ की उपासना से आप चमत्कारिक परिवर्तन अनुभव करेंगे।

१३. आपके विरोधियों की संख्या काफी है, वे आपका अहित करने पर तुले हुए हैं, अतः आप उनसे सावधान रहिए, किन्तु आप भी किसी का अहित करने की चेष्टा न करना अन्यथा आपको नुकसान उठाना होगा। आप ईश्वर पर भरोसा रखें और उनकी उपासना में ध्यान दें। ईश्वर की कृपा से आपको कार्य में सफलता मिलेगी।

१४. आपने जिस कार्य के सम्बन्ध में प्रश्न किया है उस कार्य का सकुशल होना अब सम्भव नहीं है, क्योंकि जब अवसर था, तब आपने प्रमादवश कार्य किया नहीं। अब यदि आप बुद्धिपूर्वक पूरा प्रयत्न करें और प्रमाद को छोड़े तो कार्य में आंशिक रूप से सफलता मिल सकती है।

१५. आप इस समय अत्यधिक चिन्तित हैं। संशय और सन्देह से ग्रस्त हैं, अतः बुद्धि कुण्ठित होने के कारण आप अपने साधनों का उपयोग नहीं कर पा रहे। यदि आप धैर्य धारण कर चिन्ता एवं सन्देह को दूर कर कार्य करें, तो आपको सफलता मिलेगी। दैवी-शक्ति पर भरोसा रखने से काफी शान्ति मिलेगी।

१६. आपके मन में व्यर्थ का भ्रम घर कर गया है, इसलिए आप अपने पराये का कुछ विचार न कर वहम (भ्रम) के भूत

से परेशान हैं। यदि आप अपने इष्ट की उपासना करें और उन पर पूरा भरोसा कर कार्य करें, तो आपको अवश्य लाभ होगा।

१७. आपका कार्य जगदम्बा की कृपा के बगैर पूर्ण नहीं हो पावेगा। यद्यपि आपके पास सब साधन मौजूद हैं, किन्तु माँ की कृपा के बगैर इनका सदुपयोग नहीं हो पायेगा, अतः आप सम्पुट सहित दुर्गा सप्तशती का पाठ करें या करायें। इसके करने से आपको पर्याप्त लाभ होगा।

१८. आप व्यर्थ की चिन्ता और भावुकता छोड़कर दूर-दृष्टि से कार्य लें। मित्र और शत्रु की पहचान का प्रयास करें। आपके सामने मधुर भाषण करने वाले लोग ही वास्तविकता में आपके कार्य में बाधक हैं, अतः विवेकपूर्वक कार्य करो। समझ एवं सूझ-बूझ से अवश्य सफलता मिलेगी।

१९. आपने बाहर जाकर धन अर्जन करने का विचार किया है। यह अच्छी बात है। किसी शुभ मुहूर्त में यात्रा करिये। इष्ट का स्मरण रखिये। आपको विदेश में अच्छा लाभ होगा, इसलिए कार्य चिन्ता न करें। अपितु निर्दिष्ट स्थान पर जाकर कार्य प्रारम्भ करें।

२०. आपने चिन्तित होकर अपनी शक्ति और सक्रियता कम कर दी है, अतः मनोयोगपूर्वक उद्योग करो। यदि आप छात्र हैं तो अध्ययन में लग जाओ और यदि व्यवसायी हो, तो व्यवसाय में ध्यान दो। श्रम, शक्ति और सूझ-बूझ ही आपकी सफलता की कुञ्जी है।

२१. मन में अस्थिरता के कारण आपके कार्य से लाभ नहीं हो रहा है। कार्य में उत्पन्न विघ्न और बाधाएँ आपकी उपेक्षा और प्रमाद से उत्पन्न होती हैं, अतः मन को स्थिर रखकर कार्य करो। कुछ ही समय में अच्छा परिणाम मिलेगा। यदि आप दैवी-कृपा सम्पादन के लिए देवार्चन, हवन एवं पाठ आदि करें, तो मन में

शान्ति और स्थिरता उत्पन्न होगी।

२२. आपकी चिन्ता अब निरर्थक है, क्योंकि निकट भविष्य में सम्वन्धियों एवं मित्रों से आपको सहायता और सहयोग मिलेगा। परिणामतः आपका कार्य बन जावेगा, इसलिए मन में धैर्य रखकर उत्साहपूर्वक कार्य करो।

२३. आप जिस कार्य के लिए चिन्तित हैं, उसका होना पूर्णरूपेण ईश्वर के ही हाथ में है। आपके मित्र एवं सम्बन्धी सब विरोधी बने हुए हैं। आप भगवान् का ही स्मरण करो। शायद उनकी कृपा से कार्य हो जाये। वैसे यह कार्य होना काफी कठिन है।

२४. आपका प्रश्न धन से सम्बन्धी है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने का कारण व्यर्थ का दिखावा एवं शान-शौकत है। स्वयं अपव्यय करने से आर्थिक स्थिति कैसे मजबूत हो सकती है। यदि आप व्यवहारिक रीति से आय एवं व्यय के सन्तुलन पर निगाह रखें तो लाभ होगा।

२५. आपका समय काफी विपरीत है, अतः आपको पूरा परिश्रम करने पर भी सफलता नहीं मिल सकेगी। कुछ समय धैर्य रखिये। धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में ध्यान दीजिए। अगले वर्ष से समय अनुकूल होने पर लाभ होगा।

२६. यदि आप विद्यार्थी हैं तो विज्ञान एवं गणित जैसे विषयों को न लेकर कला एवं व्यवसायिक विषयों में शिक्षण और प्रशिक्षण का प्रयास करें और यदि व्यापारी हैं तो आप कल-कारखाना लगाने का विचार छोड़कर किसी चीज का व्यापार करें। आपको लाभ होगा।

२७. आपका कोई विवाद या मुकद्दमा चल रहा है। प्रतिपक्षी आपका सम्बन्धी या पूर्व परिचित है, जो आपका नुकसान करने पर तुला हुआ है, किन्तु आप चिन्ता न करें, क्योंकि इसका फैसला

पंचों के द्वारा होगा और वह अधिकांशतया आपके पक्ष में होगा। विरोधी स्वयं अपमानित होंगे, इसलिए आप धैर्य और बुद्धि से कार्य करें।

२८. आप अपने कार्य को हठपूर्वक करने का प्रयास कर रहे हैं, किन्तु हठ या दुराग्रह से आपको कदापि सफलता नहीं मिलेगी। आपके विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी काफी प्रबल एवं बुद्धिमान् हैं, अतः आप बुद्धिमत्ता से युक्तिपूर्वक कार्य करें। किसी समझदार व्यक्ति से परामर्श लेकर कार्य करने का प्रयास करें। अन्यथा सफलता नहीं मिलेगी।

२९. आप जिस कार्य का प्रलोभनवश विचार कर रहे हो, उसे छोड़ देना ही श्रेयकर है, क्योंकि इसमें परिश्रम अधिक और लाभ कम है। आगे चलकर इसमें अनेक परेशानियाँ उत्पन्न होंगी। यदि प्रलोभनवश आपने यह कार्य किया, तो आपको हानि उठानी पड़ेगी, अतः उचित है कि आप इस कार्य का विचार छोड़कर इसका कोई अन्य विकल्प खोजें। वैकल्पिक कार्य आपको लाभप्रद होगा।

३०. आपने लोभ के वशीभूत होकर एक कठिन कार्य शुरू कर दिया है। कुछ लोगों के वायदों पर व्यर्थ ही विश्वास कर रखा है। यह कार्य वस्तुतः आप अकेले नहीं चला सकते तथा सच्चे सहयोगी का इस समय अभाव है, इसलिए इस कार्य से शनैः-शनैः हाथ निकालना हितकर होगा।

३१. आपका प्रश्न परीक्षा से सम्बन्धित है तथा इसमें कठिनाई, स्वेच्छाचार, प्रमाद एवं उपेक्षा है, अतः आप स्वेच्छाचार एवं प्रमाद को त्यागकर पूर्ण मनोयोग से अभ्यास करें। अन्यथा आपको सफलता नहीं मिलेगी। सफलता की कुञ्जी मनोयोगपूर्वक परिश्रम है।

३२. आपने जिस कार्य के विषय में प्रश्न किया है, उसे

सम्पन्न करने का समय आ गया है, अतः आप उसके लिए तत्पर हो जायें। प्रतीक्षा, देरी या आलस्य करना हानिकारक रहेगा। प्रकृति एवं परिस्थितियाँ काफी अनुकूल हैं, अतः प्रयास करने पर सफलता मिलेगी।

३३. आपका प्रष्टव्य कार्य श्रम साध्य होने के साथ-साथ पराधीन भी हैं, अतः अकेले प्रयास करने से सफलता मिलना कठिन है। यदि आप इस कार्य के लिए अपने इष्ट मित्र, भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त कर लें, तो आपका कार्य सिद्ध हो सकता है, इसलिए आप सर्वप्रथम कुछ सहयोगियों को तैयार कीजिये।

३४. आपके कार्य में सफलता के लिए अनुकूल अवसर आने ही वाला है, अतः आप व्यर्थ चिन्ता न करें। अपितु शीघ्र तैयार होकर कार्य करने का प्रयास करें। जितना शीघ्र प्रयास करेंगे, उतनी अधिक सफलता मिलेगी। आर्थिक लाभ का भी उचित अवसर है इसलिए कार्य करने को कटिबद्ध हो जाइये।

३५. आपने जिस कार्य को करने की मन में ठान रखी है वह कार्य वस्तुतः आपकी शक्ति के बाहर है, अतः इस कार्य को करने में आपकी शक्ति, परिश्रम एवं समय का दुरुपयोग होगा। अच्छा हो, आप कोई दूसरा कार्य करने का प्रयास करें।

३६. आपको जो कार्य करना है, उसमें सहयोग करने वाले अभी आपसे दूर हैं, इसलिए आप धैर्यपूर्वक कुछ समय प्रतीक्षा कीजिए। यदि प्रयास करना चाहते हैं, तो सहयोगियों के निकट पहुँचने का प्रयास कीजिए। अभी आपका कार्य कुछ समय अवश्य लेगा।

३७. आपने जिस कार्य का विचार किया है, वह अत्यन्त शुभ है। इससे आपका और आपके सम्बन्धियों का हित सिद्ध होगा, किन्तु इस कार्य में आपके शत्रु और विरोधी निरन्तर अड़चनें पैदा कर रहे हैं। वे सब मिलकर इसे नष्ट करने को प्रयत्नशील हैं

इसलिए उनकी ओर से सावधान रहकर प्रयास कीजिए। साहस एवं धैर्यपूर्वक कार्य करने से परिणाम आपके अनुकूल रहेगा।

३८. आज आपने वस्तुतः काफी कष्ट उठाये हैं, किन्तु अब चिन्ता न करें। शीघ्र ही कष्ट का समय समाप्त होने वाला है। आनेवाले समय में आपका भाग्योदय होगा। सुख और शान्ति का वातावरण बनेगा। आपको सन्तान, लक्ष्मी या यश जिसके भी लाभ की इच्छा है, वह अवश्य पूरी होगी। यदि हो सके तो भगवान् हनुमानजी की उपासना कीजिए। मंगल या शनिवार का व्रत कीजिए और निर्धनों को भोजनादि कराइये।

३९. आपका प्रश्न प्रतिक्रिया मूलक है जो वस्तुतः द्वेष एवं बुरी भावना का द्योतक है। इस प्रकार के कार्य से व्यावहारिक और वास्तविक अर्थों में आपको कोई लाभ नहीं होगा। अच्छा है कि आप अपने इष्ट मित्र एवं सम्बन्धियों के प्रतिकूल न चलें। इससे विरोध और कलह के अलावा कुछ भी लाभ नहीं होगा।

४०. आपके कार्य में अनेकों रुकावटें आ रही हैं। इसका कारण आपका स्वाभाविक स्वेच्छाचार और मनमानी करना है। यदि आप अपना स्वभाव बदलें और लोगों के साथ शान्तिपूर्वक सहयोग द्वारा कार्य करें, तो आपको सफलता मिलेगी। विचार, विवेक और सहन-शक्ति से आपके समस्त कार्य बन सकते हैं।

४१. आप जिस कार्य के लिए चिन्तित हैं वह कार्य इसलिए नहीं हो पाता कि आप उसके बारे में कार्यारम्भ से पूर्व ही काफी चर्चा कर देते हैं। इस प्रकार कार्य की गोपनीयता भंग हो जाती है और आपके प्रतिद्वन्द्वी इससे लाभ उठाते हैं। यदि आप विचारपूर्वक शान्ति के साथ अपना कार्य करें, तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

४२. आपका प्रश्न व्यापार सें सम्बन्धी है तथा व्यापार में प्रायः रुकावट और हानि हो रही है। कारण यह है कि आप

जिस वस्तु का व्यापार कर रहे हैं, वह आपको लाभदायक न होने का योग है, अतः आप किसी अन्य वस्तु का व्यापार कीजिए, आपको सफलता मिलेगी। साथ ही, यदि आप भगवान् गणपति की उपासना करें, तो आपके व्यापारिक एवं सामाजिक क्षेत्र में आने वाली रुकावटें दूर हो जावेंगी।

४३ आप काफी चिन्तित प्रतीत होते हैं। आपका पिछला समय अवश्य प्रतिकूल गया है, किन्तु अब अनुकूल समय आ गया है, अतः निराशा छोड़कर पुनः कार्यरत हो जाओ। आपको सफलता मिलेगी। श्रम, शक्ति और बुद्धि के उपयोग से आपके समस्त कार्य बन जावेंगे। आपको लाभ होगा तथा पारिवारिक सुख भी मिलेगा।

४४. आप कुछ नवीन कार्य करना चाहते हैं आपके सहयोगी या भागीदार आपसे द्वेष रखते हैं। यद्यपि ऊपरी दिखावे के लिए वे सहयोग का स्वांग करते हैं, किन्तु परोक्ष में वे आपको हर प्रकार से हानि पहुंचा सकते हैं, अतः इनका भरोसा न करके केवल अपने साधनों से कार्य करने का प्रयास करना। यदि अभी साधन न जुटे हों, तो पहले साधन जुटाने की कोशिश करना। अकेले धैर्यपूर्वक कार्य करने से सफलता मिलेगी।

४५. आप कुछ अनुचित व्यक्तियों के साथ फँस गये हैं जिनके साथ रहने से आपको सभी प्रकार का नुकसान हो रहा है। वे इतने शक्तिशाली भी हैं कि आप तुरन्त उनका साथ छोड़ भी नहीं सकते। वस्तुतः यही आपकी मजबूरी है। आप शनैः-शनैः स्वयं को इन लोगों से मुक्त करने का प्रयास करो और फिर अकेले कार्य करो। आपको धीरे-धीरे सफलता मिलेगी।

४६. काफी समय से आपके कार्यों में रुकावटें आने का कारण आपकी उपेक्षा या प्रमाद करना है। इस प्रकार की भूल आप स्वाभाविक रूप से कर देते हो। इसका वास्तविक

कारण प्रतिकूल ग्रहों का प्रभाव है, अतः आप शान्तिपूर्वक अपने इष्ट की उपासना करें। इससे आपको आश्चर्यजनक लाभ होगा।

४७. आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। इसके लिए आप काफी इलाज करा चुके हैं, किन्तु यह ठीक नहीं हुआ है। इसका वास्तविक कारण यह है कि आपकी किसी भूल/गलती से आपके कुल देवता रुष्ट हो गये हैं। यदि आप उनकी पूजा, सेवा एवं उपासना करें, तो आपको लाभ होगा।

४८. आपका प्रश्न विवाद से सम्बन्धित है। शत्रु और विरोधी आपको काफी समय से परेशान कर रहे हैं। यद्यपि आप अपनी ओर से विवाद समाप्त करने को तैयार हैं, किन्तु वे आपकी कमजोरी का नाजायज फायदा उठाना चाहते हैं, अतः घबराहट छोड़कर धैर्यपूर्वक उनका ध्यान रखिये। आपको भगवान् हनुमान जी की उपासना से विशेष लाभ होगा।

४९. आप पारिवारिक समस्या से चिन्तित हैं। परिवार के सदस्यों का सहयोगी रुख न होने के कारण छोटी-छोटी बातें व्यर्थ का विवाद बन जाती हैं। इस प्रकार के मतभेदों ने आपके घरेलू जीवन को दुःखमय बना रखा है। इस स्थिति में आप शान्तिपूर्वक रह नहीं सकते। अभी यह स्थिति कुछ समय और चलेगी। माँ दुर्गा की उपासना से आपको लाभ मिलेगा।

५०. परिवार के किसी सदस्य की उन्नति में रुकावट से आप चिन्तित हैं। पूरी कोशिश से सफलता न मिलने के कारण आप परेशान हैं। यह सब प्रतिकूल ग्रहों का प्रभाव है। ग्रह शान्ति और सूर्य उपासना से यह कार्य हो सकता है।

५१. दाम्पत्य-जीवन में रोजमर्रा के मतभेदों से आप चिन्तित हैं। अब आपका सुखी जीवन इन छोटी-छोटी बातों से कष्टमय बन गया है। अब आपकी सहन-शक्ति भी जवाब दे

चुकी है, किन्तु आप ध्यान रखें कि यदि आपने अभी कोई जल्दबाजी की या कोई कठोर कदम उठाया, तो आपको इसका प्रतिकूल परिणाम मिलेगा। कारण यह कि अभी कुछ दिन तक आपका समय इस दृष्टि से अच्छा नहीं है। यदि आप माँ भगवती की उपासना करें, तो आपका कष्ट दूर हो सकता है।

५२. भाग्य एवं प्रगति से सम्बन्धी कार्यों में विरोध और विलम्ब होने के कारण आप चिन्तित हैं। काफी दिनों से इस प्रकार का वातावरण बना हुआ है, किन्तु अब आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि निकट भविष्य में ही आपका भाग्योदय होने वाला है। यदि हो सके, भगवान् विष्णु की उपासना करो। क्योंकि इसके करने से आपको प्रचुर लाभ होगा।

५३. आपका प्रश्न साहसिक कार्य से सम्बन्धित है। यद्यपि आपमें साहस, धैर्य एवं बुद्धि का अच्छा सामंजस्य है। कई बार जोखिम उठाकर कार्य कर चुके हो, किन्तु इस बार समय प्रतिकूल होने के कारण काम बनते-बनते बिगड़ रहा है। अच्छा हो, यदि आप इस समय अपनी शक्ति किसी दूसरे कार्य में लगायें; क्योंकि समय के प्रभाव को देखते हुए अभी इस प्रकार के साहसिक कार्यों में पूर्ण सफलता का योग नहीं है।

५४. काफी समय से प्रतिकूल वातावरण होने के कारण आप जीवन के मार्ग में कुछ शान्त हैं तथा प्रगति की दिशा का बोध करना चाहते हैं। अकारण उत्पन्न होने वाली रुकावटों ने आपको परेशान कर रखा है, किन्तु आपका भाग्योदय हो सकता है, यदि भगवान् शंकरजी का रुद्राभिषेक करें और सोमवार का व्रत कम-से-कम १६ सोमवार तक करें।

५५. आप रोजगार के लिए चिन्तित हैं। अभी तक आपको अनुकूल रोजगार नहीं मिल पाया। कुछ समय के लिए एक कार्य

किया भी था, किन्तु वह भी अब छूट चुका है। इस सबका कारण प्रतिकूल ग्रह स्थिति है। यदि शुक्रवार का व्रत और माँ भगवती की उपासना करें, तो आपको अच्छा रोजगार मिलेगा और आपकी स्थिति काफी सुदृढ़ हो जावेगी।

५६. आप अपने पारिवारिक सदस्य के बारे में चिन्तित हैं। उसके क्रियाकलाप तथा उसकी स्थिति ठीक न होने से कष्ट है। समय की प्रतिकूलता के कारण उसका मन और बुद्धि दोनों ठीक कार्य नहीं करते। परिणामतः आर्थिक तंगी के साथ-साथ पारिवारिक जीवन भी विषम-सा बना हुआ है। इस कठिनाई का समाधान चण्डी-पाठ है, अतः आप दुर्गासप्तशती के पाठ कीजिए। आपको कुछ समय में लाभ होगा।

५७. मन की चंचलता के कारण आप अनेक बातें सोचते रहते हैं। यही कारण है कि आप इस समय भी अनेक बातों के बारे में जानना चाहते हैं, किन्तु ध्यान रखें कि आपको सफलता क्रमशः मिलेगी, अतः चंचलता और व्यग्रता त्यागकर एक-एक कार्य करने का प्रयास करें, तो आपको अपेक्षाकृत ज्यादा सफलता मिलेगी।

५८. यात्रा से सम्बन्धित आपके इस प्रश्न के बारे में आपको इतना ध्यान रखना चाहिए कि अभी आपका परदेश में स्थायी रूप से निवास का समय नहीं आया है, इसलिए यह यात्रा अल्पकालीन होगी। आप कुछ समय में अपने व्यवसायिक कार्य करके लौट आवेंगे। समय प्रायः ठीक है। आप शुभ मुहूर्त में यात्रा करें।

५९. आपका प्रश्न मुख्यतः आर्थिक होते हुए भी व्यवसाय से सम्बन्धित है। अभी आपको व्यवसाय से पूरा लाभ नहीं होता। जिन लोगों के पास पैसा फँस गया है, वे देते नहीं हैं तथा व्यवसाय को चलाने के लिए अन्य आर्थिक साधन जुटते नहीं

हैं। इन सबका समाधान कुछ समय बाद होगा। यदि आप श्रीसूक्त का पाठ और लक्ष्मीजी की उपासना करें, तो शीघ्र अनुकूल परिणाम निकल सकता है।

६०. आपका प्रश्न काफी विलक्षण है। आप जिस किसी भी प्रकार से केवल धन संग्रह करना चाहते हैं। अच्छा है, आप नकारात्मक या गलत मार्ग छोड़कर अच्छे तरीके अपनाएँ, क्योंकि गलत रीति से कमाया हुआ धन आगे चलकर आपको कष्ट देगा। आप उसके संरक्षण में अपनी समस्त शक्ति लगाकर भी निश्चिन्त नहीं हो पायेंगे।

६१. आप आजकल जो कार्य कर रहे हैं उसमें कुछ समय के बाद हानि होने की सम्भावना है, इसलिए सावधान होकर परिस्थिति और सहयोगियों का ध्यान रखें। हो सके, तो जोखिम का कार्य न करें और अकेले ही कार्य करने की कोशिश करें। ईश्वर की उपासना करें। आपको संरक्षण मिलेगा।

६२. आपका कार्य काफी कठिन है, क्योंकि आपके प्रत्यक्ष और प्रच्छन्न शत्रु भी अधिक हैं, जो आपके कार्य में अड़चनें पैदा करते हैं, इसलिए अपने आस-पास के वातावरण में सावधानीपूर्वक मित्र और शत्रु की पहचान करो और फिर बुद्धिपूर्वक प्रयास करो। घबराने से कोई लाभ नहीं होगा। सूझ-बूझ और दूरदर्शिता ही सफलता के पास ले जावेगी।

६३. काफी समय से कोई अच्छा रोजगार न होने के कारण आजकल आप बेकार जैसे हैं। कार्य बनते-बनते बिगड़ जाते हैं। अब आप सर्वप्रथम भगवान् शंकर की उपासना करो। सम्भव हो, तो रुद्राभिषेक या रुद्रयोग करो। इसके प्रभाव से प्रतिकूल परिस्थितियाँ समाप्त होंगी और आपको अच्छा कार्य मिलेगा।

६४. आपने हठपूर्वक एक असम्भव कार्य की पूर्ति का निश्चय कर रखा है। आपकी शक्ति कार्य की तुलना में कम है,

इसलिए या तो पहले शक्ति का संचय करो और फिर कार्य करो अथवा यह कार्य छोड़कर अपने अनुकूल कोई अन्य कार्य तलाश करो, क्योंकि केवल हठ से कार्य नहीं बनेगा।

केरली पञ्च यन्त्र—२

१०	२०	३०	४०	५०
१	२	३	४	५

जिस समय कोई व्यक्ति प्रश्न पूछने आवे, उस व्यक्ति को १ सुपारी देकर इष्ट का स्मरण कराकर उक्त यन्त्र के ऊपर वाले ५ कोष्ठकों में से किसी एक में सुपाड़ी रखने को कहे। पृच्छक जिस कोष्ठक में सुपाड़ी रखे, उस कोष्ठक का अंक पृथक् लिख लेना चाहिए। पुनः पृच्छक से यंत्र के नीचे वाले कोष्ठक में सुपाड़ी रखवाकर उस कोष्ठक का अंक भी लिख लेना चाहिए। इन दोनों अंकों का योग करने से जो संख्या आवे, उसके अनुसार फल कहना चाहिए। अंकों का योग ११ से लेकर ५५ तक होता है तथा इनका फल इस प्रकार है—

यदि अंकों का योग ११ हो, तो कहना चाहिए कि आप जिस कार्य का विचार कर रहे हैं उस कार्य में आपको अवश्य सफलता मिलेगी। यद्यपि इस कार्य में कुछ समय अवश्य लगेगा, किन्तु कोई बड़ी रुकावट नहीं आयेगी। यदि आप यात्रा करना चाहते हैं, तो निश्चिन्तपूर्वक जाइए। आपको लाभ होगा।

१२. आपके चिन्तित कार्य में अनेक विघ्न एवं बाधाएँ प्रतीत होती हैं। सहयोगी-जन भी विरोध करने पर तुले हुए हैं। यह सब प्रतिकूल समय का प्रभाव है, अतः ग्रह शान्ति एवं अपने इष्ट की उपासना कीजिए। आपको शनैः-शनैः लाभ होगा। वैचारिक मतभेद, विरोध या संघर्ष से घबराइयेगा नहीं।

१३. आपने जिस कार्य का निश्चय किया है वह आपको उपयुक्त नहीं है, इसलिए भावुकता एवं आग्रह छोड़कर अन्य कार्य करने का निश्चय कीजिये। इस कार्य में पूरा समय, शक्ति एवं द्रव्य लगाने पर भी आंशिक सफलता का योग है।

१४. आपके विचारणीय कार्य में आपको सफलता मिलेगी, किन्तु अभी कुछ प्रतिकूल परिस्थितियाँ दिखलाई देती हैं। परिणामतः आप चिन्तित हैं, किन्तु आप चिन्ता छोड़कर साहस, धैर्य एवं आत्म-विश्वासपूर्वक कार्य कीजिए। कार्य का परिणाम आपके पक्ष में होगा। यदि आप हनुमानजी की उपासना करें, तो कार्य अधिक सरलता से होगा।

१५. आपके लाभ-विषयक इस कार्य में आपको सफलता मिल सकती है, यदि आप संशय, सन्देह या द्विविधा को छोड़कर निर्णयात्मक रूप से कार्य करें, क्योंकि केवल विचार मात्र से कार्य नहीं बन पावेगा, अतः उत्साहपूर्वक कार्य कीजिए। माँ भगवती की उपासना से आपका कल्याण होगा।

यदि अंकों का योग २१, २२, २३, २४ एवं २५ हो, तो फल इस प्रकार जानना चाहिए—

२१. आपका किसी से विरोध या मतभेद है, जिसके कारण आप कुछ समय से परेशान हैं। विरोधी योजनाबद्ध रूप से कार्य कर रहा है, अतः आप भावुकता एवं उपेक्षा छोड़कर सावधानी से इसका प्रतिरोध करें, क्योंकि अन्त में आपको सफलता मिलेगी।

२२. परिवार के किसी सदस्य से मतभेद होने के कारण आप चिन्तित हैं। दैनिक जीवन की शान्ति समाप्त हो रही है। यदि आप थोड़ा धैर्य रखकर इष्ट मित्रों का सहयोग लें, तो सफलता मिलेगी। जल्दवाजी में हानि हो सकती है।

२३. आपका प्रश्न कार्य-क्षेत्र में चल रहे विवाद या शासन

से मतभेद का है। कुछ लोग आपको व्यर्थ में परेशान करना चाहते हैं। यद्यपि यह विवाद अभी कुछ समय लेगा, किन्तु इसका हल निकलेगा। आप माँ काली की उपासना कीजिए।

२४. काफी समय से आप झगड़े-झंझटों में फँसे हैं, किन्तु अब शीघ्र ही ये सब समाप्त हो जावेंगे। किसी की मध्यस्थता से समझौता हो सकता है, अतः शान्ति रखें। अधिकांशतया आपको लाभ होगा।

२५. आपके साथ किसी ने विश्वासघात किया है, अतः आप दूसरों के आश्वासन एवं प्रलोभनों को छोड़कर अपनी शक्ति के अनुसार प्रयास करें। अभी कुछ समय उलझनें रहेंगी, किन्तु धैर्यपूर्वक कार्य करने से सफलता मिलेगी।

३१. व्यापार या कार्य-क्षेत्र से सम्बन्धित आपके प्रश्न का फल प्रायः अनुकूल है। आपको सफलता मिलेगी। शीघ्र ही नये सहयोगी सामने आयेंगे। यदि आप माँ दुर्गा की उपासना करें, तो विशेष लाभ होगा।

३२. आपके कार्य-क्षेत्र में अनेकों रुकावटें आने से आप परेशान हैं। काफी दिनों से प्रतिकूल समय चल रहा है। लाभ कम एवं व्यय अधिक होता है। अभी कुछ समय सावधान रहें। अपव्यय या हानि हो सकती है। भगवान् गणपति की उपासना लाभप्रद रहेगी।

३३. आपने दुस्साहसपूर्वक एक कठिन कार्य हाथ में ले रखा है। इससे आपको विशेष लाभ नहीं हो सकता। यदि श्रम, समय एवं पैसे का सही उपयोग करना चाहते हो, तो कार्य में परिवर्तन करो।

३४. आलस्य एवं उपेक्षा के कारण आपने विचित्र वातावरण बना लिया है, यद्यपि यह सब अज्ञात रूप में हुआ है, किन्तु अब आप द्विविधा को छोड़कर एक मार्ग निश्चित कर सक्रिय हो

जाओ। अभी समय है, अन्यथा आपको पछताना होगा।

३५. आर्थिक स्थिति के बारे में आपको चिन्ता है। व्यय भार ने आपको तंग कर रखा है। बचत का पूरा प्रयास करने के बावजूद भी आर्थिक सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। आप लक्ष्मी का पूजन एवं उनके मन्त्र का जप करें। होली, दिवाली एवं नवरात्र में विशेष रूप से उपासना करें। इससे आपको अवश्य लाभ होगा।

४१. आप किसी मांगलिक कार्य के सम्बन्ध में चिन्तित हैं। यह कार्य शीघ्र होने वाला है, अतः आप निराशा छोड़कर प्रयास करें। आपको अवश्य सफलता मिलेगी।

४२. सन्तति-विषयक इस प्रश्न का फल अपेक्षाकृत शुभ है। पुत्र सन्तति में बाधा के योग्य होने के कारण अभी तक आपको पुत्र-सुख नहीं मिला। आप सन्तान-गोपाल मन्त्र का जप करें। हो सके, तो ग्रह शान्ति करावें। आपका मनोरथ पूर्ण होगा।

४३. आपका प्रतिकूल समय अब शीघ्र ही समाप्त होने वाला है, अतः चिन्ता और निराशा छोड़ दीजिए। आपको लाभ होगा तथा आर्थिक स्थिति ठीक होने पर पारिवारिक वातावरण भी अनुकूल हो जावेगा।

४४. व्यवसायिक क्षेत्र में अस्थिरता आपको परेशान कर रही है। इसके लिए आपको कुछ अधिक प्रयत्नशील होना पड़ेगा। पश्चिमोत्तर दिशा से आपको लाभ होगा, अतः इस दिशा में व्यापार का प्रयास करें।

४५. आपके कार्य की पहल किसी दूसरे के हाथ में है। इसलिए आप स्वतन्त्रतापूर्वक स्वयं कार्य नहीं कर सकते। कुछ मतभेद भी चलता रहता है। यह स्थिति कुछ समय में ठीक होगी, अतः धैर्यपूर्वक समय की प्रतीक्षा कीजिए। भावुकता एवं जल्दबाजी से नुकसान हो सकता है। हो सके, तो मंगलवार का

व्रत एवं भगवान् हनुमानजी की उपासना कीजिए। इसके करने से लाभ होगा।

५१. आपका प्रश्न आर्थिक है। कारोबार में अप्रत्याशित रूप से रुकावट आ जाती है, अतः आप भुवनेश्वरी जी की उपासना करें। इससे आपका कारोबार ठीक चलेगा और आपको लाभ होगा।

५२. आपके मन में एक-साथ कई प्रश्न हैं। कार्य, अर्थ एवं किसी व्यक्ति के बारे में आप जानना चाहते हैं। इनमें जो भी प्रश्न आपने पहले स्मरण किया हो, उसमें आपको सफलता मिलेगी। अन्य बातें भी शनैः-शनैः ठीक हो जावेंगी, अतः आप व्यर्थ में चिन्ता न करें।

५३. आपके भाग्योदय में बार-बार रुकावटें आती हैं, अतः आप भाग्येश ग्रह का रत्न धारण करें। यह निर्णय जन्म-कुण्डली दिखाने से होगा। वैसे अब आपका अनुकूल समय आने वाला है। अतः आप निराशा छोड़कर कार्य-क्षेत्र में सक्रिय होने का प्रयास करें।

५४. आपके विरोधी अधिक हैं, इसलिए चारों ओर से चिन्ताओं ने आपको घेर रखा है। यह स्थिति अभी कुछ समय चलेगी, अतः शान्ति एवं बुद्धि से इसे सुलझाने का प्रयास करें। शक्ति लगाने से अभी विशेष लाभ नहीं होगा। भगवान् भैरव की उपासना लाभप्रद रहेगी।

५५. आपकी प्रतिष्ठा को कोई ठेस पहुँचाना चाहता है। प्रच्छन्न रूप से कुछ विरोधी सक्रिय हैं, अतः सावधानीपूर्वक कार्य करें। दूसरों पर आवश्यकता से अधिक विश्वास या उपेक्षा करने से आपको हानि हो सकती है।

पृच्छक के विभिन्न प्रश्नों का उत्तर देने में लिए ज्योतिषी को चाहिए कि वह अग्रलिखित यन्त्र को ताम्र-पत्र या भोज-पत्र पर

गुरु-पुष्य योग में लिखकर अपने पास रखे। जिस समय कोई व्यक्ति प्रश्न पूछने आवे, उस समय उस व्यक्ति से सुपाड़ी या फूल इस यन्त्र के किसी कोष्ठक पर रखने को कहें। प्रश्नकर्त्ता जिस कोष्ठक पर सुपाड़ी या फूल रखें उस कोष्ठक के अक्षर अनुसार शुभाशुभ फल कहना चाहिए। ५० कोष्ठक वाले निम्न यन्त्र में अकारादि अक्षर यथाक्रम से अंकित हैं। इन अक्षरों का फल इस प्रकार है—

बीज प्रश्न यन्त्र—३

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ॠ	लृ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ
अं	अः	क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ
ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
न	प	फ	ब	भ	म	य
र	ल	व	श	स	ह	क्ष
			ष			

प्रश्नकर्त्ता यदि अ अक्षर पर सुपाड़ी या फूल रखे, तो विवाद के प्रश्न में उसकी विजय तथा धन लाभ होता है। अन्य कोई प्रश्न हो, तो कार्य में सफलता और सन्तति-विषयक प्रश्न में पुत्र की प्राप्ति होती है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'आ' हो, तो वह शोक एवं सन्ताप

से पीड़ित होता है। उसका अनेक व्यक्तियों से विरोध, शरीर में रोग तथा मन में क्लेश होता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'इ' हो, तो उसके चिन्तित कार्य में सफलता तथा उसे अत्यन्त सुख मिलता है। उसके समस्त दुःख नष्ट होते हैं और उसे धन-धान्य का लाभ होता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'ई' हो, तो सन्तति-विषयक प्रश्न में पुत्र-प्राप्ति तथा धन लाभ होता है। अन्य प्रश्न होने पर कार्य में सफलता एवं भाग्योदय होता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'उ' हो, तो वह शोक-सन्तप्त होता है। प्रियजनों से वियोग एवं दुःख मिलता है तथा वह अनेक विपत्तियों से ग्रस्त होता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'ऊ' हो, तो उसका कार्य-विषयक (व्यवसायिक) प्रश्न होता है। उसे अच्छे स्थान / पद की प्राप्ति होती है। प्रभाव एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। वह जिस किसी कार्य से चिन्तित हो उसमें उसे सफलता मिलती है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'ऋ' हो, तो पारिवारिक, सामाजिक या व्यवसायिक सम्बन्धी के बारे में प्रश्न होता है। उस सम्बन्धी से पृच्छक का अत्यन्त प्रेम होता है। लाभ-विषयक प्रश्न होने पर उसे नियमित रूप से अच्छा लाभ होता है और उसके सभी कार्य-प्रयास सफल होते हैं।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'ॠ' हो, तो वह दयनीय स्थिति में होता है। अनेक व्याधि, दुःख, संताप एवं इष्ट मित्रजनों से विरोध होने के कारण वह दुःखी होता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'लृ' हो, तो आर्थिक प्रश्न होने पर उसे लाभ होता है। कार्य में सिद्धि, मित्रों का समागम, शरीर में आरोग्य लाभ एवं राज्य से सम्मान मिलता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'लॄ' हो, तो आर्थिक दृष्टि से वह

चिन्तित होता है। कारोवार में हानि, रोग-व्याधि की उत्पत्ति, सम्पत्ति का अपहरण एवं विभिन्न कार्यों में हानि या असफलता मिलती है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'ए' हो, तो चिन्तित कार्य में सफलता मिलती है। मित्रों का समागम, स्थान का लाभ तथा अनेक प्रकार का सुख मिलता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'ऐ' हो, तो उसे बन्धन, मित्रों का विरोध, अन्य लोगों से विग्रह तथा मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट मिलता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'ओ' हो, तो विचारणीय कार्य में सफलता मिलती है। दुःख एवं शोक का विनाश होता है। सभी कार्यों की सिद्धि तथा मन में निर्भीकता उत्पन्न होती है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'औ' हो, तो विचारणीय कार्य में सफलता नहीं मिलती। मित्रों से विरोध या मतभेद तथा शोक-सन्ताप होता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'अं' हो, तो विचारणीय कार्य में अधिक हानि होती है। पृच्छक को बन्धन, अत्यन्त दुःख एवं क्लेश प्राप्त होता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'अः' हो, तो वह जिस कार्य का विचार कर रहा हो, उसमें सफलता मिलती है। प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। सन्तति-विषयक प्रश्न होने पर पुत्र का जन्म और सुख मिलता है।

यदि प्रश्न का अक्षर 'क' हो, तो पृच्छक को राज्य से सम्मान, अर्थ की सिद्धि, प्रियजनों से मिलन एवं कल्याण होता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ख' हो, तो प्रश्नकर्त्ता शोक-संतप्त होता है। पैसे की बर्बादी और शरीर में ज्वर आदि रोग से ग्रस्त होता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ग' हो, तो चिन्तित कार्य में सिद्धि मिलती

है। उसका भाग्योदय तथा मित्रों से समागम सहयोग मिलता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'घ' हो, तो प्रश्नकर्त्ता को विचारणीय कार्य में सफलता मिलती है। प्रियजनों से मुलाकात, भाग्य वृद्धि और कल्याण होता है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'ङ' हो, तो विचारणीय कार्य का नाश और प्रयास निष्फल होता है। धन का विनाश, विपत्ति एवं समस्त क्रियाकलाप निष्फल रहते हैं।

यदि प्रश्नाक्षर 'च' हो, तो विवाद सम्बन्धी प्रश्न में पृच्छक की विजय होती है। उसे राज सम्मान एवं निरन्तर धन लाभ होता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'छ' हो, तो व्यवसायिक कार्यों में सफलता मिलती है। अनेक प्रकार की श्रेष्ठ वस्तुएँ, शरीर में आरोग्य, क्षेम आनन्द एवं सौभाग्य का लाभ होता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ज' हो, तो आर्थिक प्रश्न होने पर धन हानि होती है। विचारणीय कार्य सफल नहीं हो पाता। मित्रों से विरोध एवं कलह होता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'झ' हो, तो आर्थिक एवं व्यवसायिक प्रश्न में धन लाभ होता है। रत्न लाभ, धन लाभ और सौभाग्य की प्राप्ति के साथ विचारणीय कार्य में सफलता मिलती है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ञ' हो, तो पृच्छक अत्यधिक चिन्ताग्रस्त होता है। वह शोक-संतप्त एवं बन्धनग्रस्त होता है। इष्ट/प्रिय-जनों से विरोध और मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट पाता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ट' हो, तो लाभालाभ-विषयक प्रश्न में पृच्छक को लाभ होता है। विवाद-विषयक प्रश्न होने पर उसे विजय मिलती है। कार्य में सफलता एवं सभी अर्थों की सिद्धि होती है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ठ' हो, तो विचारणीय कार्य में पृच्छक को

सफलता मिलती है। धन-धान्य का लाभ, शरीर में आरोग्यता और प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ड' हो, तो विचारणीय कार्य में पृच्छक को प्रगतिपूर्वक सफलता मिलती है। शरीर में आरोग्यता एवं क्षेम (कुशलता) मिलती है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ढ' हो, तो पृच्छक बन्धन, व्याधि एवं शोक से संतप्त होता है। वह जिस किसी बात का विचार करता है, वह सब निष्फल हो जाता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ण' हो, तो अध्ययन या विद्या सम्बन्धी प्रश्न होता है। पृच्छक को विद्या प्राप्ति होती है। परीक्षा में सफलता और कक्षा में प्रगति होती है। उसे आरोग्यता धन एवं धान्य का लाभ होता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'प' हो, तो पृच्छक को आर्थिक और व्यवसायिक कार्यों में हानि होती है। व्याधि. बन्धन उद्वेग एवं कलह से वह त्रस्त रहता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'फ' हो, तो आर्थिक कार्यों में लाभ होता है। पृच्छक को सम्पत्ति मिलती है। उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं और शरीर स्वस्थ रहता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ब' हो, तो पृच्छक किसी बन्धन से ग्रस्त होता है। धन हानि और रोग पीड़ित होकर मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त करता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'भ' हो, तो पृच्छक को प्रारम्भ में धन हानि और वाद में धन लाभ होता है। उसको पुत्र की प्राप्ति होती है और उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

यदि प्रश्नाक्षर 'म' हो, तो अनेक आपत्ति एवं रोग से परेशान होकर पृच्छक की मृत्यु होती है। उसे किसी भोग की प्राप्ति नहीं होती तथा उसके सभी कार्य निष्फल रहते हैं।

यदि प्रश्नाक्षर 'त' हो, तो आर्थिक प्रश्न में धन लाभ और भाग्योदय होता है। दूसरे लोगों के सहयोग से समस्त कार्यों में सफलता मिलती है।

यदि प्रश्नाक्षर 'थ' हो, तो व्यवसायिक एवं आर्थिक प्रश्न में धन हानि होती है। स्थानच्युति या पदावनति के साथ भ्रम के कारण उत्पन्न मानसिक रोगों से कष्ट मिलता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'द' हो, तो पृच्छक को धन लाभ होता है। उसे शरीर सुख एवं अनेक भोगों से निरन्तर सुख मिलता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ध' हो, धन, सुख एवं स्वास्थ्य के लाभ के साथ पृच्छक का भाग्योदय होता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'न' हो तो पृच्छक को अनेक भोगों की प्राप्ति एवं विविध वस्तुओं का लाभ होता है। शरीर स्वस्थ रहता है और प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है।

यदि प्रश्नाक्षर 'य' हो, तो प्रश्नकर्त्ता का आर्थिक प्रश्न होता है। उसको धन-धान्य एवं अर्थ का लाभ होता है। उसकी पारिवारिक और सामाजिक शोभा (प्रतिष्ठा बढ़ती है तथा सभी इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

यदि प्रश्नकर्त्ता का अक्षर 'र' हो, तो पृच्छक लड़ाई-झगड़ा या अन्य किसी विरोधी-विवाद के सम्बन्ध में प्रश्न करता है। उसके मन में भय होता है। अपने निकट सम्बन्धियों से विरोध होता है। प्रायः नियमित रूप से हानि और दुःख मिलता है। किसी प्रियजन की मृत्यु होती है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ल' हो, तो व्यवसायिक या आर्थिक प्रश्न होता है। प्रश्नकर्त्ता को धन एवं अन्य इच्छित पदार्थों का लाभ होता है। उसे भोगोपभोग एवं ऐश्वर्य की वस्तुएँ मिलती हैं।

यदि प्रश्नाक्षर 'व' हो, तो प्रश्नकर्त्ता अत्यन्त चिन्तित होता है। विभिन्न कार्यों में उसे सफलता मिलती है। धन की हानि

होती है। दुःख, शोक, सन्ताप एवं भय से पीड़ित होता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'श' हो, तो व्यापार से सम्बन्धी प्रश्न होता है। प्रश्नकर्त्ता को विभिन्न कार्यों में लगातार सफलता मिलती है। धन का लाभ होता है और उसके सभी कार्य सम्पन्न होते हैं।

यदि प्रश्नाक्षर 'ष' हो, तो प्रश्नकर्त्ता को धन-धान्य की प्राप्ति होती है। उसके सभी कार्य/प्रयास सफल होते हैं। सकुशल रहते हुए उसका कल्याण होता है।

यदि प्रश्नाक्षर 'स' हो, तो प्रश्नकर्त्ता कार्य में असफलता से चिन्तित होता है। वह जिस किसी कार्य का विचार करता है, उसमें हानि या असफलता मिलती है।

यदि प्रश्नाक्षर 'ह' हो, तो प्रश्नकर्त्ता को सभी कार्यों में अच्छी सफलता मिलती है। उसके सभी प्रयास सफल होते हैं।

यदि प्रश्नाक्षर 'क्ष' हो, तो प्रश्नकर्त्ता को राज-सम्मान एवं गुप्त विद्या की प्राप्ति होती है। उसे अच्छा पद मिलता है। इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए।